* ओ३म् *

पशुओं का डॉक्टर

(ग्रामवासियों के लिए अत्युपयोगी)

लेखक —

डा० रामस्वरुप सिंह

जी० पी० वी० सी० व पी० जी० (लाहौर)

नरी इन्स्पेक्टर

० पी०)

य १॥)

साहित्य-समालोचना

साप्ताहिक 'प्रताप', कानपुर
ता० ६—६—३४

पशुओं का डाक्टर—लेखक, डा० रामस्वरूपसिंह वीटीरीनरी इंस्पेक्टर (यू० पी०) इटावा, मूल्य १॥), पृष्ठ-संख्या १८४।

प्रस्तुत पुस्तक में पशुओं के रोगों और उनकी चिकित्सा का वर्णन सरल भाषा में किया गया है। यह पुस्तक ग्रामवासियों के लिये बहुत उपयोगी है इसमें कोई संदेह नहीं, पशुओं की रक्षा का प्रश्न किसानों के लिये बहुत अधिक महत्व-पूर्ण है। हमारे देश में पशुओं की चिकित्सा के लिये न तो इतने साधन ही हैं, और न आजकल के किसानों को इतना ज्ञान ही कि वे अपने मवेशियों की रक्षा बीमारियों से कर सकें। नतीजा यह होता है कि प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में पशु बीमार पड़ते हैं, और मर जाते हैं। इस रूप में कृषक-समुदाय को बड़ी भयंकर हानि प्रतिवर्ष उठानी पड़ती है। हमारे देश में दूध देने वाले पशु बड़ी संख्या में रोग ग्रस्त रहते हैं। खराब दूध के सेवन से मानव-समाज का स्वास्थ्य निरन्तर खराब होता रहता है। इन सब गंभीर बातों को ध्यान में लानेपर प्रस्तुत पुस्तक की उपयोगिता स्पष्ट हो जाती है। लेखक ने पुस्तक इतनी सरल भाषा में लिखी है कि उसे किसान लोग, जिनके लाभ के लिये यह पुस्तक लिखी गई है, भली भांति समझ सकते हैं। इसके लिये लेखक महोदय बधाई के पात्र हैं। भाषा और व्याकरण के लिहाज से पुस्तक में त्रुटियां अवश्य हैं, पर उनसे उनकी उपयोगिता नष्ट नहीं होती। 'कौटिल्य'

(नोट) इस संस्करण में त्रुटियाँ दूर की गई हैं।

राय बाबत किताब 'पशुओं का डाक्टर' जो मु० मुहम्मद ताहर मिरज़ा साहब गुजिश्ता सुपरिन्टेन्डेन्ट महकमा इलाज हैवानात मौजूदा इंस्पेक्टर सर्किल इटावा ने दी—

यह किताब जिसको मिस्टर रामस्वरूपसिंह वीटीरीनरी-इंस्पेक्टर ने बनाया है, ग्रंथ रचयिता ने मुझको जगह-जगह से पढ़कर सुनाया। किताब बहुत विस्तार-पूर्वक सादी जबान में लिखी गई है, जो ग्रामवासियों के लिये बहुत लाभदायक साबित होगी, जो उसे आसानी से पढ़ कर समझकर लाभ उठा सकेंगे। दूसरे हम पेशा साहबान, जो पब्लिक के फायदे की गरज से किताब लिखने का इरादा करें, उनको-चाहिए कि वे इस किताब के रचयिता की मिसाल अपने सामने रक्खें, क्योंकि उन्होंने पशुओं के इलाज से इल्म को जनता में काबिलियत के साथ पहुँचाने में खास अख्तियार किया है, और तमाम देशी दवाइयों से काम लेना बतलाया है, जो ग्रामवसियों को सहूलियत के साथ हर जगह गावों में मिल सकती हैं। हर दवा के गुण बताने के साथ-साथ मुफीद नुस्खे भी लिखे हैं। मुझे यह किताब बहुत पसंद है, और आशा करता हूँ कि तमाम दूसरे हमपेशा भाई, जिन्हें इस किताब के पढ़ने का मौका मिलेगा, मेरी तरह इसे पसंद करेंगे, तथा ग्रंथ रचयिता को हर मुमकिन तरीके से मदद करेंगे।

ह० मुहम्मद ताहर मिरज़ा

वीटीरीनरी-इन्स्पेक्टर

राय बहादुर ठाकुर उमासिंह साहब भदौरिया चेयरमैन डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड, इटावा की राय की नकल अंगरेजी चिट्ठी से—

मुझे आपकी बनाई 'पशुओं का डाक्टर'-नामक किताब मिली जिसका शुक्रिया अदा करता हूँ। किताब बिला शक बहुत अच्छे तरीके से लिखी गई है, और बिला शुबहा मवेशियों की बीमारियों के वक्त उनको रोकने और दूर करने में जनता (पब्लिक) को बड़ी लाभ दायक साबित होगी। जो सज्जन मवेशी पालते हैं, उनको इस किताब की एक जिल्द बतौर सलाहकार के अपने पास अवश्य रखनी चाहिये। मेरी राय है कि डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड को यह किताब खरीदकर गाँव की जनता में मुफ्त बाँटना चाहिये, क्योंकि यह किताब उन लोगों के लिये बेशकीमत होगी।

द० रायबहादुर डॉ० उमासिंह चेयरमैन

डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड, इटावा

राजा सूरजबख्शसिंह साहब ओ० बी० ई० कमलापुर, जिला सीतापुर का राय इस किताब की बाबत जो उनकी अंगरेजी चिट्ठी में १८ एप्रिल सन् १६३४ में दर्ज है—

मेरे प्यारे मिस्टर रामस्वरूप,

बेशक आपकी बनाई किताब 'पशुओं का डाक्टर' बहुत बेशकीमती और कारआमद है। मुझे बहुत पसंद है। मेरे

किलेदार व रानीबाग के पशुओं के प्रबन्ध कर्ता आप की इस किताब की बेहद तारीफ करते हैं। क्या आप कृपा करके इन किताबों की १२ जिल्द मेरे नाम वी० पी० द्वारा भेजने की कृपा करेंगे ?

द० सूरजबख्शसिंह

सुधा, लखनऊ

पशुओं का डाक्टर—लेखक, डा० रामस्वरूपसिंह विटेरीनरी इंस्पेक्टर, इटावा (यू० पी०); मूल्य १॥)

इस छोटी सी पुस्तक में पशुओं के रोग और उनकी परिचर्या का वर्णन बड़ी ही सुन्दरता के साथ सरल भाषा में किया गया है। आजकल किसानों की दशा जो बदतर हो रही है, उसका एक कारण पशुओं का मरना भी है। किसान लोग यह भी नहीं जान सकते कि हमारे यहाँ जो गाय, बैल आदि पले हुए हैं उन्हें क्या रोग हो रहा है, उनकी चिकित्सा किस प्रकार होनी चाहिए ? जो जानवर दूध देनेवाले हैं, उनका दूध यदि रोग-ग्रस्त निकलता है, तो भी उन्हें पता नहीं रहता कि इसमें क्या दोष है। इससे भी किसानों की अधिक हानि होती है।

लेखक ने इन सब बातों को दूर करने के उपाय बहुत ही सरल भाषा में बतलाए हैं। प्रत्येक पशु-पालक के लिये यह पुस्तक उपयोगी है। दवाइयाँ ऐसी हैं जो प्रत्येक स्थान पर मिल सकती हैं प्रस्तुत पुस्तक से किसानों का ही नहीं, अन्य लोगों का भी बहुत उपकार होगा।

चूँकि लेखक वीटीरीनरी-विभाग में काम करते हैं, इसलिए सभी बातें अनुभव-पूर्ण लिखी गई हैं। पुस्तक सम्ग्रहणीय है।

* ओ३म् *

पशुओं का डाक्टर

(ग्रामवासियों के लिए अत्युपयोगी)

लेखक :—

डा० रामस्वरूपसिंह
वेटेरीनरी-इन्स्पेक्टर [यू० पी०]

तृतीयावृत्ति २०००] दिसम्बर १९४९ ई० [मूल्य १।।)

मुद्रक—
लक्ष्मीनारायण-प्रेस,
मुरादाबाद

प्राप्ति स्थान—
डा० रामस्वरूपसिंह, वेटेरीनरी-इन्स्पेक्टर
मकान नं० १०००, आर्य-समाज गली,
बाजार सीताराम,
देहली

प्रकाशक—
डा० रामस्वरूपसिंह
वेटेरीनरी-इन्स्पेक्टर
(यू० पी०)

समर्पण

श्रीयुत टी० जे० ईगन साहब आई० वी० एस०
डाइरेक्टर सिविल वेटीरीनरी विभाग,
यू० पी०
की सेवा में सादर समर्पित

•

प्रस्तुत पुस्तक आप की असीम अनुकम्पा से
अपनी बुद्धि के अनुसार तैयार कर
सर्व-साधारण के लाभार्थ छपवाई
है, ताकि इसे पढ़कर जनता
की रुचि विज्ञान जानने
की ओर झुके

•

डा० रामस्वरूप सिंह
पोस्ट ग्रेजुएट वेटीरीनरी-इन्स्पेक्टर
यू० पी०

तीसरे संस्करण की दो बातें

—*—

परमात्मा का कोटिश धन्यवाद है कि पशुओं के डाक्टर नाम की किताब का यह तीसरा संस्करण निकल रहा है जनता ने मेरी पहली संस्करण की १००० प्रतियाँ बहुत जल्द खरीद ली और उस के बाद दूसरे संस्करण की भी २००० प्रतियाँ खत्म हो गईं और अब बहुत से आर्डरों की मांग होने पर ऐसे महंगाई के जमाने में तीसरा संस्करण निकलवाने पर विवश हुआ हूँ हर चीज की कीमत चौगुनी होने पर भी मैं जनता के लाभार्थ दूगनी कीमत रखने पर विवश हुआ हूँ। इस संस्करण में चन्द सज्जनों के आग्रह पर १ खास जमीमा खुराक के बारे में बढ़ाया गया है ताकि जनता को उस से विशेष लाभ हो और दूसरी नई बाते भी जो तजुर्बे में आई हैं शामिल की गई हैं। आशा करता हूँ कि जिस प्रकार जनता ने इससे पहले मेरा हौसला बढ़ाया है इसी प्रकार सेवक को आगे भी कृतार्थ करेगी।

लेखक

डा० रामस्वरूप सिंह

जी० पी० वी० सी० व

पी० जी० (लाहौर)

वेटेरीनरी इन्सपेक्टर यू० पी०

मुरादाबाद

१, मार्च १६४६

प्रस्तावना

भारतवर्ष कृषि-प्रधान देश है और इस कृषि का कुल दारोमदार गाय, बैल आदि जानवरों पर है। यदि किसानों के ये जानवर बलवान और तन्दुरुस्त हैं, तो वे फल-फूल सकते हैं, नहीं तो सिवा हानि के और कुछ नहीं। यही कारण है कि भारतीय किसानों की दशा दयनीय अवस्था तक पहुँच चुकी है।

इसके अलावा शुद्ध दूध व घी आदि को पाने के लिये घर-घर में पशु रक्खे जाते हैं। परन्तु वे लोग इस बात से सर्वथा अनभिज्ञ होते हैं कि उनकी उत्तम पालना किस तरह की जावे, जिससे दूध अच्छा, ताक़तवर और ज्यादा परिमाण में मिल सके। एवं उनकी नस्ल भी अच्छी बनती जावे।

पशु-पालन की विद्या से अनभिज्ञ रहने के कारण आये दिन पशुओं में बीमारियाँ फैलती रहती हैं। तब ग्रामवासी झाड़ने फूँकनेवालों व अत्ताइयों के पीछे मारे-मारे फिरते हैं। परन्तु बीमारी बढ़ जाती है और उन्हें नाशकारी नुक़सान उठाना पड़ता है, जिसे सालों तो क्या, बल्कि उम्र-भर में भी पूरा नहीं कर पाते यह प्रायः छूत वाली बीमारियों में होता है।

यद्यपि सरकार ने तहसीलों में कई जगह पशु-चिकित्सालय खोले हुए हैं, परन्तु फिर भी ग्रामवासी बहुत दूर रहने के कारण उनसे फ़ायदा नहीं उठा सकते।

सरकारी पशु-चिकित्सालयों में डॉक्टरी का काम करते हुए मुझे लगभग ३० साल हो गए हैं। और अपने दौरों में सदा यह देखता रहा हूँ कि किस प्रकार ग्रामवासियों को अथाह कष्ट होता है और किस प्रकार उन्हें पशुओं के कारण नाशकारी नुकसान उठाना पड़ता है। अतः मैंने यह अपना कर्तव्य समझा कि अपने इस अनुभव का फ़ायदा जनसाधारण तक पहुँचाऊँ इसलिए मैं यह पुस्तक आपकी सेवा में भेंट कर रहा हूँ।

यद्यपि पशु-पालन पर अन्य भी कई एक छोटी-मोटी पुस्तकें हिन्दी-भाषा में प्रकाशित हो चुकी हैं, परन्तु देखने में आया है

कि ये अधिक उपयोगी साबित नहीं हुईं। क्योंकि उनमें रोगों की पहचान व चिकित्सा का ब्यौरेवार ठीक २ वर्णन नहीं किया गया और न दी जानेवाली दवाइयों के क्या गुण है, यही बतलाया गया है। इस कमी को दूर करने के अतिरिक्त हमने इस पुस्तक में उन्हीं दवाइयों के प्रयोग दिए हैं, जो कि देशी हैं और प्रायः करके हर हिन्दोस्तानी घरानों में पहले ही से मौजूद होती हैं।

मुझे विश्वास है कि उपयुक्त कठिन समयों में गाय, बैल आदि पशुओं की रक्षा करने में यह मेरी छोटी सी पुस्तक अत्यधिक लाभकारी सिद्ध होगी। यदि जनता ने लोक-सेवक के इस श्रम को लाभकारी जानकर अपनाया, तो इसी तरह की अन्य पुस्तकें भी हाथी, घोड़ा, कुत्ता आदि जानवरों की रक्षाविषयक समय-समय पर भेट कर सकूँगा।

यदि छूत की बीमारी पशुओं में ज्यादा जोर पकड़ती दिखाई पड़े, तो तुरन्त निकट वाली तहसील से सरकारी पशु चिकित्सक को पता देकर कुल अच्छे जानवरों को टीका लगवा दो। इससे बीमारी फैलने से रुक जावेगी, और वे जानवर बच जावेंगे।

हर बीमारी से बचाने का टीका ईजाद हो चुका है, जो किसी हालतमें सिवा लाभके किसी तरह नुकसान देनेवाला नहीं। ये टीके बिना किसी फीस या क़ीमत के मुफ्त किये जाते हैं। इन टीकों के करने में हर जानवर पर काफी खर्च पड़ता है, परन्तु वह सब सरकार करती है, जिसके लिए हमें सरकार को धन्यवाद देना चाहिए और उससे पूरा-पूरा फ़ायदा उठाना चाहिये। प्रायः इस टीके से अनभिज्ञ ग्रामीण लोग इसका विरोध किया करते हैं परन्तु यह उनकी बड़ी भारी भूल है।

अन्त में मैं पशु-पालक जनता से फिर सानुरोध निवेदन करूँगा कि वह इस पुस्तक के हरएक विषय को पूरे ध्यान से पढ़ें औरलाभ उठावें, ताकि मेरी मेहनत सफल हो।

मुरादाबाद — डाक्टर रामस्वरूप सिंह
१-३-४६ — वेटेनरी इन्स्पेक्टर

विषय-सूची

अध्याय १

पृष्ठ

अध्याय २ (छूतवाली बीमारियाँ)।

अध्याय ३ (बिला छूत की बीमारियाँ)

भाग १ (हाज़मे के आज़ाओं की बीमारियां)

भाग २ (जिगर की बीमारियाँ)

भाग ३ (साँस के आज़ाओं की बीमारियाँ)

भाग ४ (पेशाब के आज़ा गुर्दों की बीमारियाँ)

भाग ५

(नर मादीन के खास आज़ाओं की बीमारियाँ)

भाग ६ (आँखों की बीमारियाँ)

भाग ७ (कानों की बीमारियाँ)

भाग ८ (दिमाग़ी बीमारियाँ)

भाग ९ (दिल व ख़ून की बीमारियाँ)

भाग १० (ख़ून की बीमारियाँ)

भाग ११ (जिल्द-मर्ज)

भाग १२ (ज़हर दिया जाना)

पशुओं का डॉक्टर

अध्याय १

जानवरों के तन्दुरुस्त जिस्म की बनावट और काम

Anatomy & Physiology

जानवरों के जिस्म की बनावट का आधार हड्डियों का ढाँचा है, जिसमें बहुत-सी हड्डियाँ एक दूसरे से बज़रिये नस और पट्ठों के जुड़ी हुई हैं। इनके जोड़ों में कुदरत ने चिकना करने को तेल की क़िस्म का माद्दा भी पैदा किया हुआ है, ताकि उनमें रगड़ से नुक़सान न हो। इन हड्डियों पर माँस सटा होता है, जिसमें हरकत होकर जोड़ मुड़ते हैं और जानवर चलता-फिरता है।

इन हड्डियों और उनके ऊपरवाले माँस की बढ़ावट खून के ज़रिये से होती रहती है, जो बारीक-बारीक नाड़ियों के ज़रिये से हर जगह १ सेकिंड में दौरा करके दिल में वापस चला जाता है। यह दिल जानवर के सीने के बाईं तरफ़ कुहनी के पीछे होता

है, जो खून को धक्के के साथ धकेलता रहता है। यह खून ही जिन्दगी का चश्मा है। अगर जिस्म के किसी हिस्से में इसका जाना रुक जाता है, तो वह हिस्सा मुरदार होजाता है।

गन्दा खून जो जिस्म से वापस होता है, वह फेफड़ों में, जो कि सीने की हड्डियों के खाने में दोनों तरफ़ भरे रहते हैं, साँस की ताजी हवा से साफ़ होता है, और गन्दगी साँस के साथ नथनों से बाहर खारिज होती रहती है। तन्दुरुस्ती की हालत में जानवर १० या १२ दफ़ा फी मिनट साँस लेता है, जो दौड़ने, गर्मी और फेफड़ों में बीमारी से बढ़ जाता है। यह खून गिज़ा से, जो खाई जाती है, बनता है। गिज़ा मुँह में चबाई जाती है, ज़बान के ज़रिये मुँह से हलक़ में धकेली जाकर मेदों में (जुगाली करनेवालों में चार मेदे होते हैं) हज़म होकर आँतों में जाती है। यहाँ गिज़ा का रस आँतों के गद्दों से चूसा जाकर जिगर में होता हुआ खून बनकर दिल में पहुँचता है। जुगाली करने वाले जानवरों में ज़्यादा काम चारों मेदों को ही करना पड़ता है जिसके कारण वही ज्यादा बीमार हुआ करते हैं। आँतें बहुत पतली और ७२ फीट लम्बी होती हैं, जिनमें होकर गिज़ा का नाहज़्म हुआ हिस्सा गोबर की शक्ल में खारिज होता रहता है।

जिस्म की हालत को तर रखने के लिये और खून को पतला, बहनेवाली हालत में रखने के लिये पानी की भी क़ुदरती तरीक़े से जिस्म में पहुँचने की जरूरत होती है, जो मुँह से पिया जाकर खून में जज्ब होता है। नाक़िस जहरी मादों को जिस्म से खारिज करने के लिये दो गुर्दे, जो कमर में रीढ़ के दोनों तरफ ४ से ६ इञ्च लम्बे होते हैं, पेशाब छानने के आले हैं। इनमें यह जहरीला मादा हर वक़्त टपक-

टपक कर दो नलियों से मसाने में भरता रहता है और खूब भर जाने पर पेशाब की हाजत होती है। मसाने का मुँह खुलकर पेशाब की नाली के जरिये वह मादा दिन में पाँच-छः बार खारिज होता रहता है। यही मादा खाल के सूराखों के जरिये पसीने की शक्ल में भी खारिज होता रहता है।

इस सब इन्तजाम को बाकायदा रखने का इन्तज़ाम दिमाग (जो सिर के खाने में माथे के अन्दर सींगों के बीच में होता है) करता है, जहाँ से बहुत बारीक सूत के धागे की तरह के रेशे हर हिस्से, जिस्म और खाल वगैरह में पहुँचते हैं और दिमाग से एक बड़ा हिस्सा पीछे से शुरू होकर रीढ़ में होकर हाथ-पैरों में खत्म होकर उनमें हरकत पैदा करके चलाने-फिराने का हुक्म देता है। जायका, सूँघना, डरना, खुशी, छूना, सुनना, देखना, साँस लेना, पेशाब करना, खाना हज़म करना, सब इसी के हुक्म से होते रहते हैं।

आँखें माथे के जानबैन पर होती हैं, जिनके ज़रिये से बाहर की रोशनी पड़कर नज़र आकर दिमाग को खबर करती है। कानों के ज़रिये, जो सींगों के नीचे सिर के जानबैन पर होते हैं, हवा के धक्के से दिमाग को खबर होती रहती है।

नाक, जो मुँह के ऊपर नथनों में खुलती है, खुशबू, बदबू मालूम करने के गद्दों से भरी है। इससे खाने की खुशबू फ़ौरन मालूम हो जाती है। इसी के ज़रिये सांस की हवा अन्दर और बाहर जाती है।

गर्दन के हिस्से में नाक से पीछे नरखड़ा है, जिसके

ज़रिये से हवा नाक से होकर फेफड़ों में आती-जाती है। बाईं तरफ गिज़ा निगलने की नाली है, जिसमें हलक से निगला हुआ खाना मेदे में जाता है और वहाँ से जुगाली के लिये फिर मुँह में आकर दुबारा दूसरे मेदे में बारीक पिस-कर हज़म होने के लिये चला जाता है।

मुँह में सामने के आठ दाँत, जो नीचे के जबड़े में होते हैं, हिलनेवाले होते हैं, जिनसे चरते वक्त, घास वगैरह काटी जाती है। ऊपर के जबड़े में उनके मुकाबिल सख्त गद्दी होती है। अगर दाँत हिलते हुये न होते, तो वे रगड़कर गद्दी को फाड़ देते। नीचे, ऊपर दोनों तरफ के जबड़ों में २४ दाढ़ें होती हैं।

कुदरत ने हर जानवर की नस्ल कायम रखने के लिये नर और मादा को बनाया है। मादा में पेशाबगाह के अन्दर दुम के नीचे वाले हिस्से में बच्चेदानी क़ायम की है। बैल (साँड) से गाय गर्मी में जुफ्ती खाकर हामला होकर नौ व दस-महीने के दर्मियान बच्चा देती है। उस बच्चे की परवरिश के लिये पिछली दोनों टाँगों के बीच हैवाना या बाँक, जिसमें चार थन होते हैं, दूध पैदा करता है, जिसे अलावा बच्चे के इन्सान भी दुहकर पीने के काम में लाते हैं। इन्सानों के लिये यह सबसे बेहतरीन ग़िज़ा है। बैल साँडों में दोनों पिछली टाँगों के बीच दो फोते लटके रहते हैं, जिनमें मनी पैदा होती है और नस्ल बढ़ाने के काम आती है।

जानवर की पूँछ मक्खियों को उड़ाने और सींग अपनी हिफ़ाज़त के लिये कुदरत ने अता किये हैं। हैवानात की जुम्ला

जिस्मी बनावट और खाने, पीने, सोने, बच्चे पैदा करने की इच्छायें मिस्ल इन्सान के हैं। सिर्फ दिमाग में कम हैं। इसी वजह से ये सब इन्सान के जेर हुकूमत रहते हैं। मगर ज्यादातर इन्हीं की खाने-पिलाने की गलतियों से वे अक्सर बीमार हो जाते हैं।

तन्दुरुस्ती की हालत में जानवर कुदरती तौर पर जिस्म को कायम रखने के लिये खाता रहता है, जिसमें से गिजा का सत खून में शामिल होकर हर हिस्से-जिस्म की परवरिश करता, उसको बढ़ाता और जिस्म में टूट-फूट की मरम्मत करता है। जो चीज हाजमे से बच जाती है, वह आँतों के जरिये से गोबर, गुर्दे और मसाने में पेशाब और भाप की शक्ल में जिल्द और साँस के रास्ते खारिज होती रहती है।

जब तक खाने और खारिज होने का सिलसिला ठीक कायम रहता है, जानवर तन्दुरुस्त रहता है। तब जानवर खुश रहता, खूब खाता, जुगाली करता, गोबर व पेशाब कई बार अच्छी रङ्गत और बनावट का करता, व दूसरे जानवरों को चाटता है। पानी भी काफी मिकदार में पीता है। सांस भी बराबर के पैमाने से दस-बारह बार फी मिनट लेता है। उसकी नब्ज़ भी, जो जबड़े के नीचे या दुम के नीचे देखी जाती है, ३६ से ४० बार फी मिनट एक रफ्तार में मुलायम चलती है। जिल्द की हालत चिकनी, बाल चमकते होते हैं। कान-दुम हिलाता रहता है, नाक तर होती है, ठीक चलता फिरता है। जब इन हालतों में फर्क पड़ता है, तो बीमारी पैदा हो जाती है।

बीमारी की पहचान

Diagnosis

तन्दुरुस्ती के खिलाफ हालत का नाम बीमारी है। जानवर सुस्त होकर खड़ा रहना पसन्द करता है। अगर बुखार है, तो कान कभी गर्म, कभी ठण्डे, सींग गर्म। अगर मुँह में जबान के नीचे उँगली डालें तो गर्म ज्यादा होगा। पानी ज्यादा पीता है। पेशाब गहरे रङ्ग का गाढ़ा, गोबर सख्त, खाना जुगालना बन्द, बाल खड़े हुये होंगे। बुखार बहुत सी बीमारियों में आम अलामत होती है। जब किसी मर्ज खास का हमला होता है, तो दूसरी अलामतों से मर्ज पहचाना जाता है। जब मर्ज मुकामी होता है, तो गर्मी, दर्द और उस हिस्से से काम न कर सकने से पहचाना जाता है।

लिहाजा बीमारी को पहचानने के लिये दो हिस्सों में बाँटा जाता है। एक वे अलामतें, जो सिर्फ बीमार जगह तक ही महदूद होती हैं। दूसरी वे जो तमाम जिस्म में जाहिर होती हैं। जैसे जहाँ सूजन हो तो मुकामी तौर पर वहां सुर्खी, गर्मी, वरम और काम में खलल होगा। मगर साथ ही कुल जिस्म में अलामत बुखार की गर्मी १०२ डिग्री.से ज्यादा, बेचैनी, खाना जुगालना बन्द भी हो सकता है।

नब्ज का तेज चलने लगना, सांस जल्दी-जल्दी चलना, जबान के बीच उँगली डालकर देखा जावे, तो मुँह का ज्यादा गर्म पाया जाना, पेशाब का कम पैदा होना, गोबर का कम खारिज होना या खून मिला हुआ पतला होना, आंख-नाक से रतूबत का बहना, खांसना, ये सब बीमारी की अलामतें

या दो— ज़रूरत के लिहाज से— कंबल ओढाओ। रात को जानवर बारिश में भीगने न पावे, वरना बीमार हो जावेगा।

सबसे ज्यादा यह भी जरूरी है कि जो जानवर बीमार हो, उसको खरहरा-बुरुश करके साफ रक्खा जावे, और उसके नीचे बिछाली जरूर हो, ताकि आराम से लेट सके। अगर स्थान में बदबू हो, तो पानी में फिनायल मिलाकर छिड़को, और जमीन पर से गोबर-पेशाब हटाकर वहां सूखी मिट्टी या राख डाल दो। जब जानवर ज्यादा कमजोर हो जावे और करवट न ले सके, तो उसको दिन में चन्द बार बिछाली अच्छी लगा करवट लौटाओ।

गरज कि तमाम बीमारों को आराम से रक्खा जावे। किसी तरह का भी उनके साथ खराब बर्ताव न होना चाहिये। क्योंकि वह गरीब बेजबान जानवर लाचार होता है और सिर्फ अपने मालिक की दया का हाजतमन्द रहता है। उसे किसी तरह पर भी दिक करना या मारना नहीं चाहिये।

जब जानवर मुंह से कुछ न खावे और निगल न सके, तो एक-दो सेर दूध मय दो-चार अण्डों और थोड़ी बरांडी या देसी शराब के गुदा से पिचकारी करके दो। दुम दबाये रक्खो। मगर गोबर पहले गुदा में हाथ डालकर निकाल दो। चावलों का मांड मय नमक के, या दस्तों में अरारूट को पानी में पकाकर गुदा के रास्ते से पिचकारी कर सकते हैं। पिचकारी २ फुट लम्बे बांस में एक तरफ टीन का फनल लगवाने से बनाई जा सकती है। इसमें तेल लगाकर अन्दर दाखिल करना चाहिए, और जरा उसको ऊपर उठाकर धीरे-धीरे आगे-पीछे करते हुए मांड वगैरह छोड़ो। जब बीमार अच्छा होने लगे, तो धीरे-धीरे उसकी खूराक बढ़ानी चाहिये।

बीमारियों का रोकना

How to Control Diseases.

यह सबसे अच्छी बात है कि जानवरों की बीमारी का इलाज करने के बजाय उनकी तन्दुरुस्ती में ही हिफाजत रख-कर उन्हें बीमार होने से बचाया जावे। यह बात ज्यादातर मालिकान मवेशियों से ताल्लुक रखती है। यानी जिस तरह आदमी को साफ हवा, अच्छे पानी, खाने, कसरत व आराम की जरूरत है, ठीक उसी तरह जानवरों को भी है। इन्हीं सब चीजों से उनकी भी तन्दुरुस्ती कायम रहती है। इनमें गलती करने से मालिकों को नुक़सान उठाना पड़ता है। लिहाजा इन सब बातों पर रोशनी डालना जरूरी है।

१—हवा

Air

हवा के बिना कोई जिन्दा जानवर थोड़ी देर भी जिन्दगी क़ायम नहीं रख सकता। यह सब चीजों की बनिस्बत ज्यादा जरूरी है। इसमें १/५ हिस्से ऑक्सीजन है, जो निहायत लतीफ और खून को साफ करनेवाली है। बाकी ४/५ हिस्से में नाइट्रोजन, अमोनिया, कारबोनिक एसिड गैस और पानी की भाप वगैरह है। कुछ हिस्सा बारीक-बारीक गर्द के जरों का व छोटे-छोटे कीड़े, जो आंख से नहीं देखे जा सकते, मिले रहते हैं।

साफ खुले मैदानों की हवा में आक्सीजन ज्यादा होती है। और मैली, अंधेरी जगहों में अमोनिया व कारबोनिक एसिड

गैसें, जिनमें बदबू आती है, ज्यादा होती है। ये सांस से व गोबर - पेशाब के सड़न से पैदा होती हैं, और गन्दे अस्तबलों व गऊखानों में कदम रखते ही बदबू मालूम होजाती है। ऐसी जगहों में जानवरों को रखने और वहाँ की सफाई का ख्याल न रखने और थोड़ी सी जगह में ज्यादा जानवरों का बन्द कर देने से उनको तरह - तरह की बीमारियाँ हो जाती हैं।

बावजूद ज्यादा खिलाने के भी वे मोटे - ताजे नहीं रहते, क्योंकि उनका खून गन्दा रहकर जिस्म की परवरिश नहीं कर सकता। लिहाज़ा जानवरों के रहने के मकान ऐसे हों, जिनमें नीचे और ऊपर खिड़की और रोशनदान हों, ताकि साफ हवा आवे और गन्दी हवा ऊपर से निकल जावे।

२—पानी

Drinking Water

हवा से दूसरे दर्जे पर पानी जरूरी चीज़ है। इसी से खाना हज़म होता और खून गर्दिश करता है। इसके साफ हालत में पिलाने से तन्दुरुस्ती और मैला व गन्दा पिलाने से तरह-तरह की बीमारियां पैदा होती हैं। पानी हलका और भारी, दो तरह का होता है। हलका पानी— जो बिला जायका, नमक व चूने वगैरह से बरी हो— बारिश या गहरे कुओं से हासिल होता है। लिहाज़ा वही पानी पीने के लिये अच्छा है।

मगर बारिश का वही पानी, जो गन्दगी की जगहों से बहकर नीचे तालाबों में जमा हो जाता है, जिसमें गांव - भर की गन्दगी बहकर जमा होजाती है, जहां लोग खुद नहाते और मरीज़

जानवरों को नहलाते व पानी पिलाते हैं, पिलाने से तरह-तरह की हाजमे की बीमारियाँ, पेट में कीड़े पड़ना व छूतदार बीमारियों का बाइस होता है। इसलिये पानी हमेशा साफ-सुथरा अलहदा बर्तन या बाल्टी से पिलाना चाहिये।

३—खूराक

Diet

हवा और पानी के बाद तीसरी चीज़ जानवर की तन्दुरुस्ती के लिये खाना है, जिसमें दूध से लगाकर हर तरह के दाने और चारे शामिल हैं। इनको अच्छी हालतमें बनाकर जो जल्दी हज़म होजावें, देने चाहिये। मौसमों के लिहाज़ से हरी घास व बोये हुये हरे व खुश्क चारे अच्छी तरह से काटकर व मिट्टी साफ करके देने चाहिये। चूँकि जानवर के जिस्म में हर वक्त हरकत से टूट फूट होती रहती है व छोटे बच्चे बढ़ते रहते हैं, उस कमी व टूट फूट को पूरा करने के लिये लाज़िम है कि उसे कुदरती खूराक से पूरा किया जावे। कुदरत ने इसी वास्ते हर जानवर की मादीन को दूध पैदा करने की मशीन, जिसे बांक कहते हैं, दी है कि बच्चे जब तक बड़े होकर खाना चबाकर हज़म करने के काबिल न हो जावें, दूध से परवरिश पावें।

दूध में तमाम चीजें जिस्म को परवरिश करनेवाली होती हैं। बाद को जानवरों के काम के लिहाज़ से मालिक को खुद खूराक का बन्दोबस्त करना चाहिये। जितना ज्यादा काम जानवर से लेना हो, उतनी ही खूराक की भी ज्यादा उन्हें ज़रूरत होती है, वरना जानवर कमजोर होकर बेकार हो जाता है। हमारे देहाती भाई जो काश्तकारी का काम करते हैं, इस उसूल से बिलकुल

नावाकिफ हैं। और, इसी वजह से उनकी माली हालत खराब रहती है। क्योंकि वह अच्छी कीमत देकर बैल खरीदते हैं, मगर काम ज्यादा लेकर उनको उस मेहनत के लिहाज से दाना वगैरह जिसमें बदन की परवरिश के अजज़ा ज्यादा मिकदार में होते हैं, न देकर सिर्फ भूसे और घास पर ही रखते हैं। नतीजा यह होता है कि जानवर एक-दो साल में ही खत्म हो जाता या कमजोरी की हालत में तरह - तरह की बीमारियों का शिकार होजाता है और मर जाने पर फिर दूसरा जानवर खरीदने को कर्ज लेना पड़ता है, जिसकी अदायगी बाज २ से उमर भर भी नहीं हो पाती।

अगर जानवरों की अच्छी खिलाई की जावे, और हिफाजत हो, तो १० साल तक एक बार का खरीदा हुआ बैल काम दे सकता है। लिहाज़ा जानवरों को उनके काम के लिहाज से खूराक दो। अक्सर गाभिन गायों को, जब दूध नहीं देती हैं, दाना वगैरह देना बन्द कर देते हैं। हालाँकि उस हालत में उसे बच्चे की परवरिश के लिये ज्यादा खून अपने जिस्म से खर्च करना पड़ता है। लिहाज़ा अगर खूराक कम दी जावे, तो बच्चा और मा दोनों कमजोर होजाते हैं, और वह मादीन गाय दूध भी कम देती है। खाली चारों में इतनी गिज़ाइयत नहीं, जो उनकी ज्यादा टूट फूट जिस्म या बढ़ने की हालत को पूरा कर सकें। लिहाजा काम करनेवाले बैलों, गाभिन व दूध देने वाली गायों को चने, जौ, धान, चोकर, जुआर, बाजरा, मौथ, उड़द, कुलथ, बिनौला, खली वगैरह मय नमक के, जिस जिस जगह जो अनाज कसरत से पैदा होता हो, बतौर दाने के दलकर और थोड़ी देर भिगो कर चारे - भूसे में मिलाकर दिये जावें, जो जल्दी हज्म होजावें।

ज्यादा कमज़ोर जानवरों को अलसी व जौ मय गुड़ के पकाकर खिलाया जावे, या दो छटाँक अलसी का तेल चने की

रोटी में मिलाकर खिलाया जावे। गर्मी व सर्दी से जानवर को बचाया जावे। अच्छे, रोशन, हवादार, साफ अस्तबलों में बांधा जावे। सर्दी में झूल ओढ़ाओ।

खूराक का विवरण

पशुओं की खूराक में क्या २ चीजें शामिल हैं और उन के क्या-क्या गुण हैं और उनको किस समय और कितनी मिकदार में उनके काम के लिहाज से देना चाहिए इन सब बातों पर रोशनी डालना बहुत जरूरी है क्योंकि मेरे चन्द मित्रों ने जिन्होंने मवेशियों के डाक्टर की पहली और दूसरी संस्करणों को पढ़ा तो उन्होंने यह इच्छा प्रगट की थी तीसरे संस्करण में खूराक के बारे में कुछ और ज्यादा बातें लिखी जावें ताकि जनता उनसे लाभ उठावे इसी कारण नीचे लिखा मजमून बढ़ाया गया है।

पशुओं की खूराक में आमतौर से पांच चीजें शामिल होती हैं (१) नाईट्रोजिन्स चीजें यानी ऐलब्यूमिनाइटस जैसे गोश्त मलाई अंडे की सफेदी व गेहूँ का लेस वगैरह है जिसका फायदा जिस्म की टूट फूट की मरम्मत करने और नये गोश्त व पट्ठों का बनाना है।

(२) कारबोहाइडेट्स, यानी निशापूता या शक्कर वाली चीजें जैसे चीनी, गुड, निशापूता, मांड वगैरह जिनसे जिस्म में गर्मी पैदा होती है।

(३) हाइड्रोकारबन यानी चिकनी चीजें जैसे घी, तेल, चर्बी व खल इत्यादि इन से भी जिस्म में गर्मी पैदा होती है।

(४) नमक जिससे हड्डी का बढ़ना और खूराक हजम होती है सैंधा व सांभर या खड़िया मिट्टी व काला नमक वगैरह है

सैंधा नमक रोजाना आधी छटांक दाने में डाल कर खिलाना चाहिए और चाटने के लिए १ डला उसके सामने रखना चाहिए। यह ख्याल गलत है कि ग्याभन जानवर को नमक नहीं देना चाहिए बल्कि उसके बच्चे की हड्डी बनने के लिये नमक देना बहुत जरूरी है इसके देने से भूख और प्यास लगती है पेट में कीड़े नहीं बनने पाते हैं और हाजमे को बढ़ाता है।

(५) विटामिन्स जो हरे चारों और फलों में पाया जाता है जो खानों के हजम होने में मदद करता है। खून को साफ करता और उसे बीमारियों के मुकाबला करने की ताकत देता और तन्दुरुस्ती बढ़ाता है इससे दूध देनेवाले जानवरों का दूध ज्यादा होता और स्वादिष्ट होकर मनुष्यों के शरीर का बल बढ़ाता है। यह बात पशु पालने वालों को समझ लेनी चाहिए कि जैसा ताकतवर खाना वह अपने दूध वाले और काम करने वाले जानवरों को खिलावेंगे अलावा दूध के गोबर और उनके पेशाब जो खाद के काम में खेती में आते हैं उस खाद से फसलें भी ज्यादा होंगी और किसान को लाभ पहुँचेगा। जानवरों से खूब काम लेकर उनको अच्छी खूराक न खिलाने से जानवर कमजोर होकर काम भी पूरा नहीं कर सकते। न दूध देने वाली गाय, भैंस काफी दूध देंगी और जल्द मर जावेंगी और इस बुरी किफायत शारी का नतीजा किसान को नुकसान देगा।

दूध देने वाले जानवरों को खली काफी पानी में भिगोकर और दाने व नमक मिलाकर अच्छी गीली करके खिलानी चाहिये जो अलावा चरने जाने के दिन में दो या तीन बार सुबह-शाम और रात को दी जावे परन्तु इस बात का ख्याल रहे

कि सानी इतनी ज्यादा न बनाई जावे कि पड़ी रहे। रेशेदार लम्बे चारों की बारीक २ कुट्टी करके और उसमें कुछ सब्ज चारे की कुट्टी भी जरूर मिलानी चाहिए। सानी खा लेने के बाद उस नांद को पानी से धोकर साफ करदो बल्कि उसको पानी से भर दो ताकि जब जानवर का जी चाहे पानी पीता रहे गर्मियों में खली व दाने सुबह के भिगोये शाम को और शाम के भीगे सुबह को नहीं देने चाहिये ऐसा करने से उनमें सड़ाँद पैदा होकर हाजमा खराब कर देती हैं सिर्फ २ घण्टे खली व दाना भिगोना चाहिये। इसको जानवर शौक से खायेंगे। जब दूध देने वाले जानवरों को दाना अलग से खिलाया जाता है तो वह चारा पेट भर कर शौक से नहीं खातेहैं और दूध भी कम देते हैं अलबत्ता काम करने वाले बैलों को कम से कम ३ सेर दाना रोजाना जिसमें १ सेर चना, १ सेर चोकर और १ सेर दला हुआ जौ हो मय १ छटाँक नमक के थोड़ी देर भिगोकर और सूखे चारे पर डालकर सुबह शाम खिलाया जावे। गर्मी के दिनों में जौ के सत्त भी पानी में मिला कर दे सकते हैं दानों को अच्छी तरह दल कर दिया जावे ताकि जल्दी हजम होजावे दानों में अरहर, मूँग या उर्द की चूनियां भी शामिल करके खिला सकते हैं बच्चों को खली अलसी की व अरहर व मूँग की चूनी खिलानी बहुत मुफीद है जो सब मिलाकर १ पाव से लगाकर १ सेर तक उनकी उम्र के लिहाज से दे सकते हैं परन्तु तीन माह तक तो उनकी माताओं का दूध ही काफी मिकदार में पीने देना चाहिये बाद को दूध कम करके दाने शुरू कर देने चाहिये। और उन्हें खाने के लिए नर्म दूब घास या दूसरी हरी घासें व चारे देने चाहिए और खुले बाड़ों में फिरने देना चाहिये मगर मौसम की सख्त गर्मी व सर्दियों से हिफाजत रात को झूल वगैरह उढ़ाकर रखना

चाहिये उनके जिस्मों को जूहों वगैरह से पाक साफ़ रखना चाहिये। नमक का डला उनके बाड़े में पड़ा रहे ताकि उसको चाटते रहें ऐसा करने से वह एक दूसरे के जिस्म को नहीं चाटेंगे और पेट में बालों का गोला न पैदा होगा जब दूध देने वाला जानवर दूध देना बन्द करदे और ग्याभन भी हो तो उसको तन्दुरुस्त रखने को और पेट में बढ़ने वाले बच्चे की परवरिश करने को डेढ़ से दो सेर तक मिला हुआ दाना खली जरूर रोज़ाना दिया जावे वरना वह और बच्चा दोनों कमजोर होजावेंगे और काफी दूध भी जानवर मालिक को न दे सकेगा। आम दस्तूर दाना देने का जानवर के जिस्म और उसके दूध देने और काम को अन्दाज करके दिया जाता है यानी फी सौ पौंड जानवर के जिस्म के वजन पर ½ पौंड दाना उसके जिस्म पालने के लिये चाहिये उसके बाद दूध देने वाले जानवर को ३ सेर दूध देने पर १ सेर दाने के हिसाब स और दो। उसी प्रकार ज्यादा काम करने वाले जानवर को २ सेर दाना और ज्यादा दो।

जानवर को वजन लेने के लिये तोलने की जरूरत नहीं है बल्कि उसको ठीक २ निकालने के लिये इन्च वाले फीते से छाती की गोलाई को इन्चों में नाप कर उस को गुणा करो और फिर कन्धे के जोड़ से चूतड़ के आखरी हिस्से तक इन्चों में नाप कर उसी से गुणा करके ३०० पर भाग देदो जो कुछ आवे वह उसका वजन पौंडों में होगा पौंड का वजन करीब आध सेर के होता है एक मामूली वजन के जानवर के लिये ८ से १० सेर तक सूखा भूसा या उससे तीन चार गुना हरा चारा और दो से तीन सेर दाना मय १ छटांक नमक के काफी होता है दानों की मिलावट का ध्यान रखते हुए नीचे का हिसाब मिलाना

मुनासिब होगा उसमें से २ या ३ सेर जितना देना हो दिया जावे।

दाना बारीक दला हुआ चने का		१ हिस्सा
,,	जौ या जई का	,,
गेहूँ का चोकर		,,
खली (अलसी, सरसों, तिल, मूँगफली की		,,
नमक		१ छटांक
खड़िया मिट्टी		१ तोला

यह एक दिन का दाना है जिसको तीन बार सानी दूध वाले जानवरों को और दो बार बैलों को भिगोकर देना चाहिये।

हरे चारों में उसी वक्त तक ताक़त रहती है जब तक उनमें दाना नहीं पड़ता है उस के बाद उनका रेशा सख्त होजाता है। जो मुश्किल से हज्म होता है और सूखने के बाद उनकी विटामिन भी ग़ायब हो जाती है जो हाजमे का खास जुज होती है हमेशा हरा चारा देने के लिये या तो ऐसी घासों की फ़स्लें बोनी चाहिये ताकि सिलसिला हरे चारे का न टूटे जैसे गर्मी और बरसात में चरी की फस्लों की बुआई करके सिंचाई से जब तक बरसात न शुरू हो चारे पैदा करना। बाद बरसात के सितम्बर के महीने में बरसीम चारे की फसल बोना यह चारा रिजके की तरह का होता है परन्तु दूध देने वाले जानवरों के लिये दूध बढ़ाने के लिये खास चारा है उसकी हर महीने फसल माह मई तक कटती रहती है इनके अलावा जब अगस्त के महीने में चरी तैयार हो जाती है तो उसमें दाना पड़ने से पहले ही फसल काटकर जमीन के गड्ढे में खूब दबा दबाकर भर दो गड्ढा जरूरत के लिहाज से ६ से ८ फुट तक लम्बा चौड़ा और गहरा हो सकता है उसके खब ऊपर तक भर जाने के बाद खुदी हुई मिट्टी को ऊपर चढ़ा

कर कब्र की तरह बना दो ताकि हवा पानी उसके भीतर न जाने पावे उस गड्ढ़े का चारा जिसको साइलेज कहते हैं दूध देने वाले जानवरों के लिये और भैंस बैलों के लिये भी अच्छा होता है मगर खाने में कुछ खट्टा और सिरके जैसी बू उसमें आने लगती है सो उन दिनों में जानवरों को चाटने के लिये नमक जरूर देना चाहिये।

यह साइलेज सब प्रकार की हरी - हरी घासों व बरसीम जई, रिजका दूब, अंजना, गिन्नी घासों व जंगली घासों की भी जहाँ वह बहुतायत से मिलती हों बन सकती हैं हरे बाजरे की भी अच्छी होती है।

चूंकि हर किस्म के दानों और चारों में यह गिजा के पांचों हिस्से जुदा २ मिक़दार में पाये जाते हैं लिहाज़ा नीचे के नक्शे से खास २ गिज़ाओं का जो रोज़ाना काम में आती हैं ब्योरा दिखाया गया है ताकि उनमें से दोनों को ठीक २ तरह से मिला कर जानवरों को उनके काम के लिहाज से खिलाया जावे।

नाम दाना व चारा

	चिकनाई,	अलब्यूमन,	निशास्ता	
गेहूँ, ज्वार, मक्का का दाना	८५	७५	८५	२
,, ,, ,, का भूसा	०	२०	४५	५५
दालदार दाने जैसे चना, उर्द, मोठ, मूंग	८०	८५	६०	८०
,, ,, ,, ,, ,, ,,	०	४५	६०	४०
खली जैसे मूंगफली की अलसी व सरसों	९०	८०	५०से८०	२
हरे चारों में जैसे चरी वगैरह में	०	५०	६०	५०

इस नकशे से जाहिर है कि सबसे अव्वल दरजे पर खली है दूसरे पर दालदार दाने और तीसरे पर गेहूँ ज्वार व मक्का के दाने हैं इनके अलावा और सब निचले दर्जे पर हैं इसलिये किसानों को चाहिये कि अपने मवेशियों को चारे के साथ २ कुछ खली और दालदार दाने व चोकर चूनी मिलाकर खिलाया करें जिससे उनके जानवर तन्दुरुस्त रह कर काफी दूध दें और अर्से तक काम दें।

४—मेहनत

Exercise

चौथे दरजे में, यानी हवा, पानी, खाने के बाद तन्दुरुस्ती रखने के लिये, मुनासिब मेहनत का लेना भी ज़रूरी है। छोटे बच्चों को दो घण्टे के लिये जब उनकी मां जङ्गल को चरने के लिये चली जावे, छोड़ देना चाहिये। दूध देने वाली और गाभिन गायों को जङ्गल में चरने ज़रूर छोड़ना चाहिये। और काम देने वाले बैलों को खाने के दो घण्टे बाद काम पर लगाना चाहिये। बाद को काफ़ी आराम देना चाहिये।

छूतवाली बीमारियों की रोक

How to check Contagious Diseases

खाने-पीने वग़ैरह की सब सावधानी रखते हुये भी जानवर छूतवाली बीमारियों में बीमार होजाते हैं। क्योंकि इन बीमारियों के बाइस बहुत बारीक-बारीक कीड़े होते हैं, जिनको आँख से नहीं देख सकते। वे बीमारों की नाक, थूक, गोबर, पेशाब के ज़रिये खारिज होकर चारे, पानी और हवा वग़ैरह में मिलकर दूसरे जानवरों के साँस और मुँह व जिल्द के रास्ते ख़ून में

मिलकर बीमारी पैदा करते हैं। ये कीड़े गन्दी अँधेरी जगहों में बहुत दिनों तक ज़िन्दा रहते हैं, परन्तु रोशनदार और साफ़ हवादार मकानों में मर जाते हैं। धूप इनको मार देती है। लिहाज़ा इन बीमारियों से बचाने के लिये इन बातों का ध्यान रखना चाहिये—

(१) मरीज़ जानवर को हमेशा अच्छे जानवरों से अलहदा रक्खो।

(२) जिस गाँव में बीमारी हो, वहाँ के जानवरों के साथ अपने जानवरों को न चरने दो। न अपने गाँव में उन बीमारी वाले गाँव के जानवरों को आने दो।

(३) बाहर से खरीदे हुये जानवरों को भी शुवहतन १५ दिन तक अलहदा रक्खो। मुमकिन है, उनमें छिपी हुई हालत में बीमारी हो।

(४) सफ़र में अपने जानवरों को आम पड़ाव से अलहदा बाँधो। मुमकिन है, वहाँ बीमार जानवर बाँधे गये हों।

(५) पानी कुओं से खींचकर अलहदा बाल्टी या तसले से सफ़र में पिलाओ, कुओं के चौबच्चों से न पीने दो।

(६) बीमारों की खिदमत के लिये आदमी अलहदा हो, जो अच्छों को न छुए।

(७) बीमारों का बचा चारा, गोबर वग़ैरह जला दो या गढ़े में डालकर रोज़ाना मिट्टी फेर दो।

(८) जिस जगह बीमार रहे हों या मरे हों, उन स्थानों में आग जलाकर बाद को १ फुट मिट्टी खोदकर दूसरी ताज़ी मिट्टी और चूना डाल दो। गन्धक जलाओ और १२ घण्टे मकान को बन्द करदो। बाद को कुछ दिन खाली पड़ा रहने दो। सफेदी वग़ैरह करके फिर अच्छे जानवर उसमें रक्खो।

(६) रोडे की बीमारी के सिवा बाक़ी सब छूतवाली वाली बीमारियों में, जिनका अभी ज़िक्र होगा, बीमारी के रोकने का टीका लगवाओ। यह काम डॉक्टर लोग, जो हर तहसील में तैनात हैं करते हैं,। फ़ौरन् उनको पटवारी या चौकीदार के ज़रिये रिपोर्ट देकर अच्छे जानवरों को टीका करा देना चाहिये। इससे बीमारी फैलने से एकदम रुक जाती है। किसी तरह की तक़लीफ़ इसमें नहीं होती। न काम का हर्ज होता है। बच्चों व गाभिन जानवरों को भी बिला ख़तरे टीका करा सकते हैं। दूध में कोई फ़र्क़ नहीं आता। टीका लगाकर बीमारों में अच्छों को मिला दो। टीका लगों को बीमारी नहीं होगी। अगर हुई, बहुत खफ़ीफ़। मगर उसके बाद वह हमेशा के लिये रोग से बच जाते हैं।

(१०) बीमारी से मरे हुए जानवरों को ६ फुट गहरे गढ़े में डलवाकर दबवा देना चाहिए या जलवा देना चाहिये। अक्सर ज़मींदार साहबान चमारों को खालों का ठेका दे देते हैं। लिहाज़ा वे छूतवाली बीमारियों से मरे जानवरों की भी खाल निकाल लेते हैं, जिसकी हवा गाँव में फैल जाती है। माँस, हड्डी को कुत्ते जगह-जगह गिराकर बीमारी फैलाने में मदद देते हैं। छूत की बीमारी के मौक़ों पर खालों का निकालना ख़िलाफ़ क़ानून है। अगर चमार लोग न मानें, तो पुलिस में रिपोर्ट देकर मुक़दमा क़ायम करा देना चाहिये। गाड़ने की सूरत में चमारों को मजदूरी ज़रूर दी जावे।

(११) अच्छे जानवरों की सफ़ाई का ख़याल रक्खा जावे, ताकि वे—बदन की चिचड़ी, पिस्सू, जूओं, डाँस और मक्खियों, से, जो छूत की बीमारियों के फैलाने के ज़रिये हैं—बरी रहें।

अध्याय २

छूतवाली बीमारियां

Contagious Diseases

मवेशी अक्सर छूतवाली बीमारियों से आये साल एक बड़ी तादाद में मरते हैं। ये बीमारियाँ आँख से नजर न आने वाले कीड़ों के जरिये से, जो बरसात में आम तौर पर होते हैं, और बीमार जानवरों से मिलने-जुलने से फैलती हैं। वे इस प्रकार हैं —

(१) बड़ा रोग या प्लेग। (२) खुर-खुर या रोड़ा।
(३) घुटरूआ या गलघोंटू। (४) बाथा या जहरबाद।
(५) लँगड़ा या चिरचिरा। (६) फेफड़ी या निकासा।
(७) माता या चेचक। (८) तपेदिक (९) रक्त मूतना।
(१०) पागल होजाना। (११) खाँसी मार जाना।
(१२) छूतदार जुकाम। (१३) बच्चों के सफेद छूतदार दस्त।
(१४) छूत से गायों के हमल का गिरना आदि।

अब सिलसिलेवार इन सब बीमारियों की शनाख्त और उनके इलाज का हाल अलहदा-अलहदा बयान किया जायगा, जिसको खूब बार-बार पढ़कर समझना चाहिये क्योंकि जानवरों के इलाज करने में बड़ी मुश्किल बात बीमारी का तशखीश करना ही है, जो बहुत दिक्कत तलब है। क्योंकि हमारे मरीज आदमियों को तरह से, अपनी तकलीफों का हाल नहीं बतलाते। बेजबानों की जिन्दगी का दारमदार इलाज करने वालों

... और रहम पर क़ायम है। लिहाजा उन्हें अपने फ़... होशियारी से अदा करने की निहायत जरूरत है। उनकी जरा-सी लापरवाही से हजारों जानें जा सकती हैं, जिससे वे दुनिया और दीन, दोनों में गुनहगार रहेंगे।

(१) छेरा या बड़ा रोग

Riderpest

इसको बहुत-से नामों से पुकारा जाता है। यानी सीतला, घोल, छेरा, बेधन, माता, दुख, हाँडा, मरी, पोकनी कहते हैं। इसमें तमाम जुगाली करनेवाले जानवर—खास करके गाय, बैल, भैंस, ऊँट, बकरी, भेड़ी, हिरन वग़ैरह— बीमार होते हैं। यह बड़ी मुहलिक छूतवाली बीमारी है।

सबब बीमारी—आँख से न देखे जानेवाले बारीक कीड़ों के खाने, चारे, हवा, पानी के साथ मिलकर तन्दुरुस्त जानवरों के जिस्म में दाखिल होने से यह बीमारी होती है। छूत लगने के ३ से ६ दिन तक बीमारी जिस्म में छिपी हालत में रहती है, बाद को बीमारी जाहिर होती है।

अलामत बीमारी

जानवर का सुस्त होकर खाना, पीना और जुगालना बन्द कर देना, बदन में कँपकँपी होकर बालों का खड़ा होना, जिस्म का गर्म और कानों की नोकों का ठण्डा होना, अव्वल हालत में गोबर का सख़्त आना, दाँतों का पीसना। यह हालत दो-तीन दिन रहकर बाद को बदबूदार पतले दस्तों का, जिसमें ख़ून और आँव भी मिला हो, बार-बार आना।

इस हालत में मुँह में नीचे के होठों के अन्दर और जीभ के नीचे छोटे-छोटे जख्म होजाते हैं, आँखों से कीचड़ आती है, थनों और पेशाब की जगह पर भी मादीनों में जख्म हो जाते हैं। जानवर एक से दो हफ्ते तक बीमार रहकर कमजोर होकर मर जाता है।

इलाज--इसको दो तरीकों में बाँटा जाता है यानी एक तो बीमारों का इलाज, दूसरे अच्छों की हिफाजत करके उनको बीमार ही न होने देना। इन दोनों का अलहदा-अलहदा बयान किया जायगा।

बीमार जानवर को फौरन अच्छे जानवरों से अलहदा कर दो। उस जगह पर घास-फूँस जलाकर, मिट्टी खोदकर दूसरी मिट्टी डालो। थोड़ा चूना या राख डालो। उस जगह पर दो हफ्ते तक दूसरे जानवरों को न बाँधा जावे। शुरू बुखार की हालत में आध सेर घी मय आधी छटांक काली मिर्च के एक खुराक से गुनगुना करके पिला दो। बाद को अगले दिन से काफूर ३ मासे, कलमी शोरा डेढ़ तोला, देशी शराब २ छटांक आध सेर पानी में मिलाकर दिन में दो बार दो। काफूर को शराब में पहले हल कर लो, बाद को सबको मिला दो।

(१) जब बीमार को दस्त शुरू हो जावें, तो खड़िया मिट्टी २½ तो०, कत्था २½ तो० गोंद ढाक २ तो०, अफीम ४ माशे, चावल का माँड आध सेर मिला कर दो बार दिन में दो।

(२) अथवा खड़िया मिट्टी २½ तो०, फिटकरी १ तोला, पुटाश परमेंगनेट ३ माशे तीन पाव माँड में मिलाकर पिलाओ।

(३) १ पाव आँवलों को मिट्टी के बरतन में रात को ३ पाव पानी में भिगोकर, सुबह को पानी छानकर उसमें १ पाव दही व इस्फगोल १ छटाँक और देशी कच्ची खाँड़ २ छटाँक मिलाकर दो बार दिन में पिलाओ।

(४) ½ सेर शीशम की कोपलों को कूटकर २ छटाँक कतीरा गोंद मिले दो सेर पानी में भिगोकर रात को ओस में रक्खो। सुबह को मल छानकर आध-आध सेर तीन बार दिन में दो।

(५) कत्था ½ छटाँक, मेंहदी की पत्ती ½ छटाँक, मक्खन १ छटाँक, इन्हें कूट मिला कर दिन में दो बार चावल के पीछ के साथ दो।

(६) २ छटाँक लसौड़े के पत्तों को आध सेर पानी में भिगोकर दो।

(७) फनील १ तोला दो बार दिन में आध सेर चावलों के माँड में दो।

(८) अपनी तहसील के मवेशियान-डॉक्टर को बुलाकर बीमारी को सोल्यूशन आइडील की पिचकारी खाल में लगवा दो बहुत फायदा करती है।

जो जानवर इस बीमारी में मरें, उनकी खाल न निकाली जावे। उनको गढ़े में दबवा देना चाहिये। स्थान को साफ करा दो। बीमार जानवरों को गाँव में खुला नहीं छोड़ना चाहिये।

दूसरा तरीका इलाज का अच्छों को बीमारी से महफूज यानी बीमारी से बचा रखने का है। इसके लिये सरकार ने हर तहसील में शफाखाने कायम करके उनमें डाक्टर रक्खे हैं। छूत की बीमारी शुरू होते ही उनके पास फौरन रिपोर्ट करनी चाहिये, जो

गाँव के पटवारी, चौकीदार और मुखिया का फर्ज है। वैसे हर कोई इत्तिला कर सकता है जिसका जानवर बीमार हो। वह आकर सब अच्छे जानवरों को इस बीमारी से बचाने का टीका लगा देंगे। फिर बीमार और अच्छों को मिला दो, तब भी टीके लगे हुये जानवर बीमार नहीं होंगे। लेकिन टीके से पहले अगर मिलाओगे, तो अच्छे जानवर बीमार होजावेंगे।

इस टीके से जानवर को किसी किस्म की तकलीफ नहीं होती हल और गाड़ी में फौरन बैलों को जोता जा सकता है। गाभन व दूध देनेवालों को व बच्चों को किसी तकलीफ का अन्देशा नहीं होता, न दूध देने में कमी करते हैं। सिवा फायदे के कोई नुकसान नहीं होता।

बाज़ दफ़ा ऐसा होता है कि जानवर में छूत पहले से दाखिल हो गई है और उसको टीका किया गया, वह बीमार जरूर होगा। परन्तु सख्त बीमार न होकर बच जावेगा। बीमारों को इस वजह से टीका इस दवा का नहीं दिया जाता कि अगर वे मर जावें, (क्योंकि यह बीमारी बहुत खराब होती है) तो टीके की बदनामी होती है।

इस टीके की कोई फीस नहीं ली जाती। फायदा पूरा तभी होता है, जब कि गाँव के सभी जानवरों को टीका लगवाया जावे। ऐसा करने से एक हफ्ते के अन्दर बीमारी जाती रहती है। वरना बिना टीका लगे जानवरों में बीमारी फैली रहकर ९ या १० दिन के बाद टीके का असर चला जाकर वे भी बीमार हो सकते हैं, जिस हालत में ९ दिन के बाद फिर टीका लगाने की जरूरत पड़ती है।

एक दूसरा, रोग से बचाव करने का टीका है, जिसमें जानवर थोड़ा बीमार होकर बच जाता है और फिर मर्ज में बीमार नहीं होता। परन्तु ऐसा टीका सरकारी जानवरों में या उन लोगों के जानवरों को किया जाता है, जो अपने जानवरों के थोड़ा बीमार हो जाने की परवा न करें। ऐसा टीका बीमारी के वक्त भी या उसके पहले, जब गर्मी, बरसात के दिनों में फैलने का अंदेशा हो, किया जा सकता है, जो बकरों से वैक्सीन तैयार करके या टिस्सू वैक्सीन से किये जाते हैं। मगर बीमारों से अलहदा रखकर और कुल गाँव के जानवरों का एक ही दिन में होना चाहिये। जब लोग खूब समझकर, ऐसी रजामन्दी लिखकर जाहिर करें, तो इस रोगबच टीके का इन्तजाम भी किया जा सकता है। ज्यादा दूध देती हुई व गाभिन गायों, भैंसों और छोटे बच्चों को पहले वाला ही टीका लगवाना ज्यादा अच्छा है।

छेरे रोग पर कुछ नोट

Rinderpist

छेरे के रोग से बचाने के लिये अच्छे जानवरों में कान के अन्दर की तरफ १ बूंद दवाई नश्तर पर डालकर घुमा देने वाली वैक्सीन तैयार होकर बहुत कामयाब साबित हुई है १ साल तक टीका लगे जानवर को इस मर्ज से बचाती है मगर वह गर्मियों के दिनों में १ हफ्ते से ज्यादा नहीं काम देता है खराब हो जाती है सो इन दिनों में से ड्राइड वैक्सीन यानी सूखा पाउडर उस वैक्सीन का तैयार करके इस्तेमाल तजुर्बे के के तौर पर किया जारहा है उसको करीब १ महीने तक इस्तेमाल किया जा सकेगा और हर जिले के सदर शफाखानों में उस का

स्टाक भी फौरन इस्तेमाल के लिये रखा जा सकेगा। पब्लिक को चाहिये कि छेरे की बीमारी शुरू होने पर अपने नज़दीक के मवेशियों के डाक्टर को जल्दी रिपोर्ट करके सब अच्छे जानवरों को टीका कर उनको रोग बच वरा दिया जावे इसी में उनका फायदा है।

(२) रोडा या खुरा

Foot and Mouth Disease

मुँह-खुर की बीमारी, जिसे आम तौर पर खुरा, खुरपका, रोडा भी कहते हैं, आमतौर से फैलनेवाली बीमारी है। लेकिन इसमें जानवर मरते नहीं, पर खुरों में कीड़े पड़ जाने से बहुत दिनों तक काम नहीं दे सकते, जिससे हर्ज होता है। इस बीमारी में भी सब जुगालनेवाले जानवर बीमार होते हैं। उनका कच्चा दूध पीने से आदमियों का भी मुँह आ जाता है। लेकिन गर्म करके पीने से कम होता है। ३ या ४ दिन बीमारी छिपी रहती है।

सबब—यह भी न देखे जानेवाले बारीक-बारीक कीड़ों से हवा, पानी, खाने के साथ लगती है।

अलामत बीमारी—जानवर को शुरू हालत में बुखार होता है। खाना, जुगालना छोड़ देता है। बाल खड़े रहते हैं। मुँह से चप-चप करके झाग डालता है। पैरों को ज़मीन पर पटकता है। मुँह और खुरों के बीच बड़े-बड़े ज़ख्म हो जाते हैं, जिनमें कीड़े भी पड़ जाते हैं।

इलाज--बीमारों को अच्छों से अलहदा करके साफ, हवादार, रोशन अस्तबलों में खुश्क फर्श पर रक्खो। पानी के लिये अलहदा बरतन में साफ पानी और मुलायम चारा दो। जैसे दूब - घास हरी - हरी दो। दाने के बजाय चावलों का मांड़ नमक $\frac{1}{2}$ छटांक मिलाकर ठंडा - ठंडा पिलाओ। मुँह को, कीकर की छाल पानी में पकाकर उसमें २ तोला फिटकरी मिलाकर, धोओ। या कुओं में डालनेवाली लाल दवाई पानी में थोड़ी डाल कर उससे धोओ। बाद को १ छटाँक सुहागा पीसकर व १ तोला काफूर ४ छटाँक शहद में मिलाकर मुँह के जख्मों में दो-तीन बार दिन में लगाओ।

शुरू बुखार की हालत में पहली खराक $\frac{1}{2}$ सेर घी गुनगुना मय आधी छटाँक काली मिर्च के दो। बाद को अगले दिन से काफूर या कलमी शोरा १$\frac{1}{2}$ तो०, देशी शराब २ छटाँक आध सेर पानी में मिलाकर दिन में दो बार दो। पैरों को भी शुरू में कीकर और फिटकरी के पानी से धोओ। जब जख्म हो जावें, तब उनको फिनायल के पानी से धोकर फिनायल लगाकर पट्टी बाँधो। इससे कीड़े भी मर जावेंगे और जख्म भी अच्छे होजावेंगे। कीड़े मारने के लिये काफूर और तारपीन का तेल मिलाकर रूई में लगाकर जख्म में भरकर पट्टी लगाने से फ़ायदा होता है।

अगर पैरों में माँस बढ़ जावे, तो तूतिया रगड़ो। अगर सुम गिर जावे, तो तूतिया १ हिस्सा, फिटकरी २ हिस्से, खड़िया मिट्टी ४ हिस्से, कोयला ४ हिस्से मिलाकर, छिड़ककर पट्टी बाँधो। अगर हैवाने पर जख्म हो, तो फुका जस्त गोले के तेल में मिला कर लगाओ। इस बीमारी में टीका नहीं लगाया जाता। बीमारों को अच्छों से अलहदा रखना चाहिये।

(३) गलघोटू

Haemorrhagic Septicemia

इसको गलघोटू, घुटरवा, घटरीन व बीसी भी कहते हैं।

सबब—आँख से न देखे जाने वाले बारीक-बारीक कीड़ों के बाइस हवा, पानी, खाने के ज़रिये से—ख़ासकर मौसम बरसात में नशेब की जगह चरने से—यह बीमारी होजाती है। मर्ज़ के छिपे रहने का समय ३ दिन का है।

अलामत—तेज़ बुखार, खाना-जुगालना, बन्द, बाल खड़े, कान लटके हुये, गले और गर्दन पर ज्यादा दर्दवाली सख्त सूजन का होना, जिसके बाइस जानवर लड़खड़ करके मुश्किल से साँस ले पाता है। कभी क़ब्ज़ और कभी दस्त होते हैं। दस्तों में आँत की झिल्ली बहुत लम्बी ख़ारिज होती है। जानवर १२ से २४ घंटे के अन्दर मर जाता है।

इलाज—बीमार जानवर के गले की सूजन को फ़ौरन गर्म लोहे से दागो। अन्दर १ तोला फ़नील आध सेर गुनगुने घी में मिलाकर एक ख़ूराक में दो। बाद को काफ़ूर ३ माशे, कलमी शोरा १½ तोला और देशी शराब २ छटाँक आध सेर पानी में मिलाकर दो बार दिन में दो। बीमारों को अच्छों से अलहदा करो। अगर मर जावे तो गड़वा दो। डाक्टर को फ़ौरन बुलाकर अच्छे सब जानवरों के टीका लगवा दो। बीमारी हट जावेगी। बीमारी से जो बच जावे, तो एक महीना बाद अच्छे जानवरों में मिलाओ।

(४) बाघा या ज़हरी बुख़ार
Anthrax

इसे सिर, बावला, ज़हरी बुखार भी कहते हैं। यह ज्यादा करके हाथियों आदमियों औरकुत्ते व परिन्दे, सब में फैलता है।

सबब—इसमें भी न देखे जाने वाले कीड़े हवा, पानी, खाने के साथ मिलकर बीमारी पैदा करते हैं। खासकर बरसात के दिनों में नीची जगहों के चरनेवाले जानवरों में या वहाँ की घास खिलाने से होती है। इसबीमारी में भी १२ से २४ घंटे के अन्दर-अन्दर मौत होजाती है। बीमारी के छिपे रहने का वक्त चन्द घंटे ही होता है।

अलामत—बुखार एकाएक बहुत तेज़ी के साथ चढ़ता है। उससे दिमाग़ पर असर होकर पागल के से चक्कर काटने लगता है। अक्सर क़ब्ज़ होता है। सिर, गर्दन, छाती, अगले पैरों व व पिछले पैरों और पेट, किसी जगह भी पुरदर्द सूजन होजाती है, जिसको दबाने पर दर्द मानता है। आँख, नाक और पाखाने के रास्ते से काला खून मिला इख़राज होता है। जानवर बहुत जल्द कमज़ोर होकर गिरकर मर जाता है।

इलाज—इसमें कोई दवा कारगर नहीं होती। फिनायल २ तो० आध सेर घी में दो। काफ़ूर और शराबवाला नुस्खा दो। सूजन को गर्म लोहे से दागो। डाक्टर को बुलाकर अच्छे जानवरों को टीका लगवा दो। मुर्दों को गड़वा दो। स्थानों की घास जलाकर मिट्टी खुदवाकर दूसरी मिट्टी व चूना डलवा दो। कुछ दिनों तक खाली पड़ा रहने दो। लाश के मुँह, नाक और

गुदा में रुई लगा दो, ताकि रास्ते में खून न गिरे।

(५) लँगड़ी

Black Quarter

इसे लँगड़ी, गोलो व चिरचिरा कहते हैं। यह भी गाय, बैलों और भैंसों को ६ महीने की उम्र से तीन साल तक होती है। यह जानवरों की बड़ी छूतदार सख्त बीमारी है।

सबब—आँख से न देखे जानेवाले बारीक-बारीक कीड़ों के जरिये से जो घास, पानी और जख्म के जरिये दाखिल होते हैं, फैलती है। यह भी बरसात के दिनों में नीची जगहों में चरने व वहाँ की घास खिलाने से होती है।

अलामत—एकदम तेज बुखार होकर गर्दन, छाती, पिछले पुट्ठे, पैर पर ज्यादा करके सूजन होजाती है। वह सूजन गर्म और पुरदर्द नहीं होती, बल्कि उसे दबाया जावे, तो उसमें हवा चर-चर करके बोलती है। जानवर लँगड़ाकर चलता है। दम जोर से लेता और दाँत पीसता है। खाना बन्द कर देता है। जानवर २४ घण्टे के अन्दर मर जाता है।

इलाज—इसमें बहुत कम कामयाबी होती है। सूजनवाली जगह को गर्म लोहे से दाग दो। अन्दर ½ सेर घी और फिनाइल २ तोले मिलाकर दो। लाशों को गड़वा दो। अच्छों को बीमारों से फौरन अलहदा करके डाक्टर को बुलाकर टीका लगवा दो। बीमारी रुक जावेगी। टीके से किसी किस्म का नुकसान नहीं बल्कि फायदा होगा। इससे सबको फायदा उठाना चाहिये। मुफ्त होता है।

(६) फिफड़ी का रोग

Contagious Pleuropneumonia

इसे फिफड़ी का मर्ज या छूतदार निमोनिया भी कहते हैं। यह मवेशियों, भेड़, बकरियों में होता है।

सबब—इसका बाइस भी आँख से न देखे जानेवाले बारीक-बारीक कीड़े होते हैं। यह बीमारी ठण्ड लग जाने व तङ्ग जगह में बहुत से जानवरों के बाँधने से, या रात को बारिश मे बँधे रहने से ज्यादा होती है। मामूली निमोनिया इतनी तेज़ी से दूसरे जानवरों में नहीं फैलता। इस बामारी की छूत के छिपे रहने का ज़माना १५ दिन से ४ माह तक है।

अलामत—जानवर को जोर का बुखार चढ़ता है, जो हर तीसरे-चौथे दिन तेजी पकड़ता है। खाँसी होती है, मुँह आगे को बढ़ाकर साँस लेता है। नथने फैले होते हैं। कुहनियाँ बाहर को फैलाये रहता है। साँस से बदबू आती है। नब्ज़ जल्द-जल्द फी मिनट १०० बार तक चलती है, जो जबड़े की हड्डी के नीचे देखी जा सकती है। खाना-जुगालना बन्द होजाता है। उसी स्थान में चन्द जानवर इस बीमारी के मिलते हैं।

इलाज—जानवर को खुश्क, गर्म, हवादार, रोशन स्थान में, सर्दी में गर्म कम्बल ओढ़ाकर रक्खो। छाती पर तारपीन का तेल मलो। पीने के पानी में साल्ट नमक १ छटाँक, कलमी शोरा १ तोला दो। खाने को गर्म चोकर दूध में डालकर दो। तारपीन का तैल खोलते पानी में डालकर नाक से भपारा २० मिनट तक दो बार दिन में दो। काफूरवाला बुखार का नुस्खा भी एहतयात से दो ताकि खाँसी न आवे।

खाँसी की ज्यादती में यह नुस्खा दो—काफूर ३ माशे, कलमी शोरा १ तोला, नौशादर ६ माशे, मुलहठी १ तोला, अलसी ½ छटाँक, शोरा १ छटाँक। सबको कूटकर दिन में दो बार चटाओ। अगर क़ब्ज़ ज्यादा हो, तो नमक ४ छटाँक, गन्धक १½ तोला, सोंठ १ तोला, गुड़ एक पाव, गर्म पानी आध सेर में मिलाकर दो। जब आखीर मर्ज में दस्त आवें, तो खड़िया मिट्टी २ तोला, कत्था २ तोला, सोंठ १ तोला, अफ़ीम ३ माशे ½ सेर पानी में दो।

(७) माता या चेचक

Cow Pox

सबब—इसकी छूत भी हवा के ज़रिये से बीमार से तन्दुरुस्त गायों में लग जाती है।

अलामत—थनों और बाँक के ऊपर सुर्ख दानों का निकलना, जिनमें १ हफ्ते बाद पानी भर जाता है और फूटकर छोटे-छोटे पुरदर्द जख्म बन जाते हैं। गाय को थोड़ा-थोड़ा बुखार भी होता है। दूध कम होजाता है। यह बीमारी भेड़, बकरी और ग्वालों को भी होजाती है। पेट में कब्ज होती है। राल टपकती है। बीमारी का असर तीन महीने तक रहता है।

इलाज—अच्छों को बीमारों से अलहदा करो। मरीज का दूध इस्तेमाल न करो। हैवाने व थनों पर जहाँ सूजन हो, पोस्त के छिलके को पानी में औटाकर सेक करो। बाद को टिंक्चर लगाकर, अगर जख्म हो तो फुके जस्त में गोले का तेल व थोड़ा काफ़ूर मिलाकर लगाओ। खाने को हरी घास और चोकर दो। पीने को गन्धक १ तोला, शोरा १ तोला, चिरायता १ तोला, बच

६ माशे, शराब १ छटाँक, आध सेर पानी में मिलाकर दो बार दिन में दो। टीका इसमें नहीं होता।

(८) तपेदिक
Tuberculosis

सबब—यह भी न दिखाई देनेवाले बारीक - बारीक कीड़ों के जिस्म में हवा, चारे और पानी के साथ जाने से पैदा होती है। ज्यादा दूध देनेवाली गायें इसमें ज्यादा बीमार होती हैं। हिन्दुस्तान में १६ फीसदी गायें इसमें बीमार होती हैं, जिनका दूध पीने से आदमियों में भी यह मर्ज फैलता जारहा है।

अलामत — इसमें ज्यादातर फेफड़े, आँतें और बाँक मुतला होते हैं और उन्ही के मुताबिक अलामतें होती हैं। बीमारी के छुपे रहने का जमाना महीनों से लगाकर बरसों का होता है, जो मर्ज के आखीर में जाहिर होता है।

फेफड़े बीमार होने की हालत में जानवर खाँसता है। बुखार रहता है और दुबला होता चला जाता है। गर्दन व सीने की जिल्द के ऊपर के गदूद बढ़ जाते हैं बाल खड़े रहते हैं आँखों से कीचड़ आता है और उसकी झिल्ली पीली पड़ जाती है। नाक से मवाद आता है, जिसमें बीमारी के कीड़े होते हैं।

आँतों की बीमारी में बुखार और पतले-पतले बदबूदार दस्त बहुत दिनों तक जारी रहते हैं। जानवर कमजोर होता चला जाता है।

हैवाने यानी बाँक के बीमार होने पर दूध पैदा करनेवाले गदूदों में सख्ती होजाती है। दूध कम और पनयाला नीले रङ्ग

का, कभी-कभी ख़ून मिला भी आता है। उसको रखने पर छिछड़े पैदा होजाते हैं। ज़ायक़ा खारा होता है और खास क़िस्म की नागवार बदबू आती है।

इलाज—मरीज़ जानवर को अच्छों से अलहदा करके अच्छा, ताक़तवाला खाना, चारा दिया जावे। बुखार के लिये काफ़ूर व शोरा शराबवाला नुसखा और सुबह शाम खाँसी के लिये काफ़ूर, मुलहठी और शीरे वग़ैरह की चटनी दो। जब अच्छा होने लगे, तो मछली का खालिस तेल दो।

जब आँतों की बीमारी हो, तो पहले १ पाव घी दो। अगले दिनसे २ आने-भर तूतिया पाव भर पानीमें मिलाकर पिलाते रहो

जब मर्ज़ थाँक में हो, तो उसे सेंककर पोस्त के छिलकों को पानी में पकाकर बाद को काफ़ूर और कड़वे तेल की मालिश करो। इलाज से कम फ़ायदा है।

जो जानवर कमजोर हो और खाँसते हों, उनका दूध नहीं पीना चाहिये, जबतक कि उनकी डाक्टरी न करा ली जावे। वरना दूध इस्तेमाल करनेवालों को बीमारी लग जाने का खतरा रहता है।

(६) चिचडी का बुखार

Piroplasmosis

इसे रक्त मूतना या चिचड़ियों का बुखार भी कहते हैं।

सबब—यह भी गाय, बैलों की छूतवाली बीमारी है, जिसके बारीक-बारीक कीड़े चिचड़ियों के जरिये से मरीज से अच्छों में पहुँच जाते हैं और वे ही बीमारी पैदा करते हैं। अँग्रेजी नसल के गाय बैलों में सख्त होती है।

अलामत—गर्मियों में बीमारी का हमला तेज और जाड़े में मुलायम होता है। जानवर सुस्त, उसको बुखार का होना, खाना-जुगालना बन्द, पेट में शुरू में दर्द होता है और बाज़-बाज़ मरतबा दस्त होकर, फिर क़ब्ज़ होजाता है। पेशाब खून मिला हुआ स्याह सुर्ख या बहुत पीला करता है। मुँह, आँखों की झिल्ली व पेट के नीचे की खाल पीले रङ्ग की होजाती है। मुँह से लार गिरती है। सख्त हमले में जानवर १ से २ हफ्ते के अन्दर मर जाता है।

इलाज—अच्छे जानवरों को बीमार के पास से फौरन हटा दो। जब उनमें से किसी को सुस्त पाओ, फौरन् अलहदा कर दो। खाने के साथ एक व दो तोला पिसा हुआ गन्धक देते रहो। चिचड़ियों को जानवरों पर से छुड़ाकर मारते रहो, देवदार का तेल चिचड़ियों के मारने में अक्सीर है, उसे लगा दो। बीमारों को दवाई की पिचकारी डाक्टर साहब को बुलाकर लगवा दो। मरीज़ के स्थान पर आग जलवाकर, मिट्टी खुदवाकर दूसरी मिट्टी डलवा दो। जब जानवर को क़ब्ज हो, तो उसे नमक, गन्धक, सोंठ, गुड़ मिलाकर जुलाब दो। बाद को चिरायता १ तोला, नौशादर १ तो० शीरा १ तोला, सोंठ १ तोला, देशी शराब १ छटाँक मिलाकर आध सेर पानी में दो बार दिन में दो।

(१०) हड़काना या पागल होजाना

Rabies

सबब—यह मर्ज़ पागल गीदड़ या कुत्तों के काटने से पैदा होता है।

अलामत—जानवर खाना-पीना छोड़ देता है। मुँह से राल गिरती है। काटने की कोशिश करता है। अगर कुत्ते के काटने का हाल मालूम हो, तो यक़ीनी पागल है। शुरू में फ़ौरन् ज़ख्म को गर्म लोहे से जला दो।

इलाज—जब अलामत होजावे, कोई इलाज नहीं। जानवर को मज़बूत बाँधो। मर जावे, तो उसको गहरा गड़वा दो, ताकि कुत्ते-गीदड़ न खावें।

(११) चाँदनी मार जाना

Tetanus

सबब—इस बीमारी के भी छोटे-छोटे कीड़े किसी ज़ख्म में पैदा होजाते हैं, जो गर्द-गुबार और लीद-गोबर से ज़ख्म में चले जाकर बीमारी पैदा करते हैं।

अलामत—जानवर को बुखार होता है। गर्दन और सारा जिस्म अकड़ जाता है। जब मुँह ऊपर को उठाओ, तो आँख की पुतली पर परदा आ जाता है। जानवर का मुँह बन्द होजाता है। क़ब्ज़ होता है और चौंकता है।

इलाज—ज़ख्म को धोकर अगर कोई हो तो साफ़ करो। उसको दाग़ से या कुओं में डालनेवाली दवा से जला दो। जानवर को आराम से रक्खो। अकड़ाव कम करने को पहले १ जुलाब दो। साबुन व गर्म पानी का, गोबर निकालकर दिन में दो बार अमल दो। बाद को यह नुस्खा बतौर चटनी के चटाओ—चरस २ माशे, काफ़ूर ४ माशे, मुलहठी १ तोला, शीरा ३ तोला, दिन

में दो बार दो। गर्म चोकर में नमक डालकर व हरी-हरी दूब घास खाने को दो।

(१२) जुकाम

Contagious Catarrh

(इसे छूतदार जुकाम कहते हैं)।

सबब—सर्दी लगने से या देर तक भीगने से, जानवर की मर्ज रोकने की ताकत कम होकर, बारीक-बारीक जुकाम के कीड़े हमला करके बीमारी पैदा कर देते हैं।

अलामत—नाक आँख से पानी निकलना, छींकना, खाँसना, बुखार का होना, खाने में कमी, साँस जल्दी-जल्दी लेना, नाक से बलगम का आना।

इलाज—जानवर को गर्म स्थान में—जहाँ हवा आवे, परन्तु झोंका न लगे—रक्खो। नाक में तारपीन का भपारा दो। काफूर की चटनी दो बार खिलाओ। पानी में साल्ट १ तोला डालकर दो। गर्म चोकर, दूब, घास खाने को दो। बीमार को अलहदा रक्खो।

(१३) बच्चों के सफेद दस्त

White Scour

(इसे बच्चों के छूतदार सफेद दस्त कहते हैं)।

सबब—यह बहुत छोटे बच्चों की छूतदार बीमारी है। जिसका सबब भी बारीक आँख से न देखे जानेवाले कीड़े ही होते हैं, जो दूध पीते हुए गन्दे थनों से मुँह में जाकर यह बीमारी पैदा करते हैं।

अलामत—बच्चा सुस्त होजाता है। थोड़ा बुख़ार होता है। दस्त सफेद, बहुत पतले-पतले होते हैं। कमजोर होकर मर जाता है।

इलाज—इस जानवर को दूसरों से अलहदा रक्खो। अरण्डी का तेल ½ छटाक से १ छटाँक देकर बाद को तूतिया ४ रत्ती, खड़िया मिट्टी १ तोला, कत्था ६ माशा, माँड़ १ पाव मिला कर दिन में दो बार दो

(१४) हमल गिराना

Contagious Abortion

इसे छूत से हमल का गिरना कहते हैं, जो विशेषतः गौओं में होता है

सबब—इस मर्ज के भी बारीक-बारीक आँख से न देखे जानेवाले, कीड़े होते हैं, जो मादीन की पेशाब की जगह से नर के जुफती खाते वक्त पहुँचकर बच्चेदानी में असर करके बच्चेको हमल से गिराने का सबब होते हैं

अलामत—बिला चोट-पीट खाये हुए गायों का तीसरे-चौथे महीने बार-बार हर दफ़ा गर्भ गिरा देना, जिससे मालिक को नुक़्सान होता है।

इलाज—जब हमल गिरे, तो दूसरी गाय और साँड को वहाँ से अलहदा कर दो। इस गाय पर जब साँड पड़े, तो उसकी इन्द्रियों को पानी में लाल दवा डालकर धो दो। जब गाय गाभन

हो, तो उसे दवा का टीका करा दो। दूसरे जानवरों से अलहदा बाँधो।

(१५) चौंधे की बीमारी

Surra

कारण—मौसम बरसात में डाँस, मक्खी के काटने से बीमारी के कीड़े जिन्हें ट्राइपनोसोम कहते हैं एक बीमार जानवर से दूसरे तन्दुरुस्त जानवरों के खून में पहुँचकर बीमारी पैदा होती है।

लक्षण—गाय, बैल, भैंसों में इस बीमारी का हमला एक बारगी होता है। जिसमें जानवर को बुखार होता है चक्कर खाता है सिर को दीवार से लगाकर खड़ा होता है और रस्सा तोड़कर पीछे को गिर जाता है बूँद-बूँद करके पेशाब करता रहता है आँखों को जल्द-जल्द मीचता है और उन से दिखाई नहीं पड़ता है मौत चन्द घण्टों में होजाती है अगर इस हालत में उसके खून की १ बूँद शीशे पर फैलाकर खुर्दबीन में देखे तो लाखों कीड़े खून में साँप की तरह जल्द-जल्द हरकत करते हुए दीखेंगे जो डाक्टर लोग ही कर सकते हैं।

इलाज—नजदीक के मवेशी डाक्टर साहबको बुलाकर उनसे मरीज जानवर की गरदन की बड़ी रग में २ फीसदी का नागानाल दवाई की पिचकारी १०० सीसी करा दो। चूँकि इस बीमारी में खून बहुत पतला होकर जानवर बहुत कमजोर होजाता है अगर बीमारी के हमले से बच जावे तो फिर उसको ताकत देने वाली दवाइयाँ जिसका नुस्खा नीचे लिखा है दिन में दो बार पानी में मिलाकर पिलाओ या दाने में डाल कर खिलाओ दाना भी काफ़ी मिक़दार में जितना हज़्म कर सके दो।

नुस्खा—हीरा कसीस ४ माशे, कुचला २ माशे, सोंठ १ तोला, नमक लाहोरी २ तोला।

यह एक वक्त की खूराक है एक हफ्ते के लिये इसको १६ गुनी तैयार कराकर रोज़ाना दो बार दो।

नोट—(१) इन सब छूतवाली बीमारियों में जगह २ यह लिखा गया है कि इनके बाइस आँख से न देखे जाने वाले कीड़े होते हैं। इनको डॉक्टर लोग ही, खून की बूँद को शीशे के ऊपर फैलाकर एक खास मशीन से, जिसे माईक्रास्कोप कहते हैं, जिसमें एक चीज़ हज़ारों गुना बड़ी होकर दिखाई देती है, देख सकते हैं। और बीमारी की, उसके ज़रिए से ठीक-ठीक पहचान करके, इलाज कर सकते हैं। हर कोई आदमी इस काम को नहीं कर सकता।

(२) इन तमाम छूतवाली बीमारियों में इस बात के खयाल रखने की बहुत ज्यादा ज़रूरत है कि बीमारों को खुला हुआ गाँवों में न फिरने दिया जावे, और न जोहड़ में पानी पिलाया जावे, ताकि गाँव के दूसरे जानवर भी उससे छूत हासिल करके बीमार न हो जावें। बल्कि उस बीमार जानवर को दूसरे अच्छे जानवरों से ५०० गज के फासले पर अलहदा रख कर उसकी सेवा के लिये आदमी भी वे हों, जो अच्छे जानवरों का चारा-पानी और खिदमत न करें। वरना उस आदमी के हाथ पैरों और कपड़े वगैरह से बीमारी दूसरों को लग जावेगी।

दूसरी यह एहतयात रखनी चाहिए कि मेलों और मण्डियों से खरीदे हुए जानवरों को १५ दिन तक अलग रक्खो। अगर कोई छूतवाली बीमारी उनमें छिपी होगी, तो जाहिर हो जावेगी और इस तरह दूसरे जानवर बच जावेंगे। हमारा काम सब बातोंसे आगाह करना है। अमल करना और उससे फ़ायदा उठाना तुम्हारा काम है।

अध्याय ३

जिस्म की बिला छूत वाली बीमारियाँ

Non Contagious Diseases

छूतवाली बीमारियों का बयान करने के बाद यह ज़रूरी मालूम पड़ता है कि थोड़ा हाल जिस्म में पैदा होने वाली दूसरी बीमारियों का भी लिखा जावे, ताकि वक्त पड़ने पर उससे मदद ली जा सके। इन बिला छूतवाली बीमारियों का सबब ज्यादातर जानवरों की परवरिश और निगरानी में बदइन्तज़ामी का होना है।

(१) मवेशी रखने के लिये यह बहुत ज़रूरी है कि उनके लिये फसल के वक्त काफ़ी से ज़्यादा चारा-दाना जमा कर लिया जावे, ताकि कहत और ज्यादा बारिश व मौसम सर्दी-गर्मी में उनको आराम से खिलाया जा सके।

(२) खास मौसमों में जानवरों के लिये— सर्दी, बारिश व तेज धूप से बचाने के लिये— खुश्क, हवादार और रोशनीदार मकानों की ज़रूरत होती है, वरना वे ज्यादा गर्मी, सर्दी और बारिश में गीली ज़मीन पर लगातार खड़े रहने से बीमार होजायेंगे। उस मकान की सफ़ाई की भी ज्यादा ज़रूरत है।

(३) कूड़ा, गोबर व पेशाब को फौरन उठाकर खाद के खत्तों में, जो ६ फुट गहरे, लम्बे और ४ फुट चौड़े हों, मय पानी के डालकर, तीन महीने तक बन्द करके खेतों में डालो। यह सबसे अच्छा खाद बनता है, जिससे चौगुनी पैदावार होती है।

ऐसी क़ीमती चीज़ को गाँवों में कण्डे बना-बनाकर चूल्हों में जलाते हैं, जिसका काम लकड़ी से होसकता है, जो ज्यादा पैदावार के लाभ से खरीदी जासकती है।

(४) जानवरों के अस्तबलों या गायखानों में नीचे खिड़की हवा आने को और ऊपर छत में रोशनदान खराब हवा निकलने और रोशनी आने के लिये हर वक्त और हर मौसम में खुले रहने देना चाहिये।

(५) फ़र्श भी थोड़ा ढालू, पक्का या कच्चा, मगर हमवार हो। जिसके पिछली तरफ़ पेशाब वगैरह बहने के लिये नाली हो।

(६) साफ़ पानी पिलाने का इन्तजाम स्थान के अन्दर या सहन में होना ज़रूरी है। उस बर्तन या नाँद को रोज़ाना धोकर साफ़ कर दिया जाया करे।

(७) खाना, चारा, पानी वक्त पर दिया जावे।

(८) फ़ी जानवर को १ छटाँक खाने का नमक भी ज़रूर दिया जाये, जिससे हाज़मा ठीक रहे और भूख-प्यास अच्छी लगे और पेट में कीड़े भी न पड़ें।

जब जानवर की इन सब बातों में ग़लती की जाती है, तो वह तरह-तरह की बीमारियों का शिकार होजाता है जिनका ज़िक्र आगे किया जावेगा। जब मवेशी बीमार होता है, तो खाना बन्द कर देता है।

(१) उस वक्त उसको मुलायम और जल्द हज़म होनेवाली दूब, धान लूसर्न रिजका वगैरह देकर लुभाना चाहिये और दाने के बजाय चावल पकाकर, या अलसी और जौ पकाकर या गेहूँ का चोकर गर्म पानी में भिगोकर, या दूध और अण्डे

मिलाकर देना चाहिये। अगर मुँह से न खा सके, तो पिचकारी से गुदा से देना चाहिये।

(२) पिलाने में यह एहतयात होनी चाहिये कि दवा नरखड़े में न चली जावे। ऐसा होने पर जानवर खाँसता है। उसका मुँह फ़ौरन् छोड़ देना चाहिये। जब खाँस चुके, तब पिलाओ। ताज़ा पानी, बीमार जानवर का सब हालतों में, सिवा दस्तों की ज्यादती के, दो। दस्तों में पानी के बजाय सिर्फ़ चावलों का माँड ही दो।

(३) सर्दियों में झूल या कम्बल गर्मियों में हलकी चादर मक्खियों से बचाने के लिये डाले रक्खो।

(४) आँख, मुँह धोकर पोंछो।

बिला छूत की बीमारियों को आसानी के साथ बयान करने और समझने के लिये नीचे लिखे जिस्म के हिस्सों को काम के लिहाज़ से बाँटा जावेगा—

(१) हाज़मे के आज़ाओं की बीमारियाँ—जिसमें मुँह, हलक़, निगलनेवाली नाली, चारों मेदे, आँतें छोटी-बड़ी और गुदा व जिगर वग़ैरह शामिल हैं, ज़िक्र होगा।

(२) साँस लेने के आज़ाओं की बीमारियाँ—जिसमें नाक़, गला, नरखड़ा, और फेफड़े व उनको गिलाफ़ देनेवाली झिल्ली है, शामिल होंगे।

(३) पेशाब के आज़ाओं की बीमारियाँ—जिसमें गुर्दे, मसाना और पेशाबगाह शामिल हैं, ज़िक्र होगा।

(४) आँख की बीमारियाँ।

(५) कानों की बीमारियाँ।

(६) दिमाग़ की बीमारियाँ।

(७) दिल और खून की बीमारियाँ, जिसमें ताव खाना गटियावाय का भी बयान है।

(८) खाल की बीमारियाँ—जैसे फोड़ा, फुन्सी, ज़ख्म, चोट, जोड़ों का उतरना और हड्डियों का टूटना है

(९) मादीनों के जच्चाखाने की व बच्चों की बीमारियाँ।

(१०) ज़हर दिया जाना और हरी चरी से, जब बारिश न हो, ज़हर होना

(११) जानवरों की नसल पर भी कुछ लिखा जावेगा

(१२) देशी दवाइयों के असर इस्तेमाल, जो गाँवों में मिलती हैं, लिखे गये इलाज में ऐसी दवाइयों के नुस्खे, जो मेरे तजुर्बा किये हुये हैं, लिखे जावेंगे, जो आम तौर से देहातों में मिल सकें और आसानी से जल्दी तैयार करके दिये जा सकें परन्तु दवाइयाँ ताज़ी और अच्छी हों क्योंकि दवाइयाँ पुरानी होकर अच्छा असर नहीं करतीं और फिर इलाज की बदनामी होती है।

हाज़मे की बीमारियों को बतलाने से पहले यह बतलाना जरूरी है कि इसमें कोन-कौन आज़ा शामिल हैं और उनके क्या-क्या काम हैं, जो हाज़मे में मदद देते हैं।

इसमें सबसे पहले मुँह है, जिसमें होंठ चारा पकडते, दाँत काटते, ज़बान चारे को दाढ़ों से कुचलने के बाद हलक़ में धकेलती और खाने की नाली में होकर गिज़ा पहले मेदे में जाकर भर जाती है।

वहाँ से जानवर आराम के वक्त थोड़ी गिज़ा जुगाली के लिये मुँह में लौटाकर और बारीक चबाकर दूसरे तीसरे और

चौथे मेदों में, जहाँ गिज़ा और पिसता व उसमें हाज़िम अर्क मेदों से पैदा होकर काबिल हज़म बनाते हैं।

फिर छोटी आँतों में जाकर उसमें जिगर से पित्त आकर मिलता है। आँतों में गिज़ा का सत जज़्ब होकर ख़ून में शामिल होकर हर हिस्से जिस्म में परवरिश के लिये जाता है।

और वहाँ से गन्दा ख़ून दिल में वापस होकर फिर फेफड़ों में जाकर साफ़ होता है।

जो सख्त नाहज़म हिस्सा गिज़ा का रह जाता है, वह पाखाना, गोबर की सूरत में, दिन में चन्द बार, ख़ारिज होजाता है।

काम करने से खाने का सत जल्द सर्फ़ होजाता है और जब जिस्म को खाने की ज़रूरत पड़ती है, तो भूख लगती है। तन्दुरुस्ती में ऐसा ही रद्दोबदल का सिलसिला जारी रहता है।

अगर जानवर से सख्त मेहनत व काम लिया जावे, लेकिन खाना कम दिया जावे या ख़राब और कम परवरिश वाला, जैसे महज़ भूसा बिला दाने के दिया जावे, तो जानवर कमज़ोर होकर तरह-तरह की बीमारियों में मुब्तिला होजाने के काबिल होजाता है। बरख़िलाफ़ इसके अगर काम के बाद गिज़ा, दाना वग़ैरह काफी चारे में, वक्त से आराम के साथ दी जावे और काम न लिया जावे या कभी-कभी हद से ज्यादा बेक़ायदा लिया जावे, तो इस बेतरतीबी से भी बीमारी पैदा होती है।

भाग १

हाज़मे के आज़ाओं की बीमारियाँ

Diseases of degestive System

(१) मुँह की जलन या ज़ख़्म

(Ophtba)

सबब—बहुत गर्म खाना या पानी मुँह डालना, चूना या तेज़ाब का खाना, किसी सख्त चीज़ से ज़ख्मी होना, मेदे की खराबी। मुँह, खुर और घोला या छेरे की बीमारी में भी ज़ख़्म होजाते हैं।

अलामत—मुँह गर्म, सुर्ख और ज़ख्मी होगा, मुँह से झाग या राल गिरेगी, खाने में कमी, बुखार का बाज़ वक्त होना ज़बान का सूजकर बाहर लटकना।

इलाज—अव्वल बीमारी के सबब को मालूम करके रफ़ा करो। मुँह को चन्द बार दिन में फिटकरी १ तोला आध सेर पानी में मिलाकर या १ माशा कुओं में डालने की लाल दवा आध सेर पानी में मिलाकर मुँह अन्दर से धोओ। बाद को १ तोला काफ़ूर, १ छटाँक सुहागा पीसकर ४ छटाँक शहद में मिलाकर चन्द बार ज़ख़्मों पर लगाओ।

अगर ज़बान सूख जावे, तो दवा के लाल गर्म पानी से सेक करके टिंक्चर आइडीन लगा दो। या हल्दी ३ हिस्से और चूने १ हिस्से में पानी १० हिस्से मिलाकर लगाओ। अगर मुँह में

काँटे बढ़ गये हों, जो बदहाज़मे की एक अलामत होती है, उनको छीलना या कटवाना नहीं चाहिये। बल्कि हल्दी, नमक और काली जीरी पीसकर उनपर दो-तीन बार मल दो। खाने को हरी-हरी दूब और चावल पकाकर दो।

(२) दाँत, दाढ़ों का बेक़ायदा बढ़ जाना

Irregular Teeth

सबब—बूढ़े जानवरों में अक्सर पिछली दाढ़ें बढ़ जाती हैं, और कोई नीची ऊँची होजाती हैं।

अलामत—जानवर चारे को अच्छी तरह से नहीं चबा सकता। गोबर में मोटा चारा खारिज होता है। जानवर दुबला व कमजोर होता जाता है।

इलाज—डाक्टर-हैवानात के पास ले जाकर दाँतों को रितवा या कटवाकर ठीक करा लेना चाहिये। खाना मुलायम देना चाहिये।

(३) जुगाली गिराना

Quiding Food

सबब—मोटे और खराब चारे का देना, खाना देकर फ़ौरन् काम में लगाना, और जुगाली करने का वक्त न मिलना, बदहज़मी का होना।

इलाज—जुलाब दो। उसके लिये साल्ट आध सेर, नमक १ पाव, सौंठ १ छ०, शीरा आध सेर १ सेर पानी में मिलाकर दो। पीने को गर्म पानी दो। बाद को सोडा २ तो०, सौंफ २ तो०

चिरायता १ तो०, इस्फगोल के लुआब आध सेर मिलाकर रोजाना सुबह दो।

(४) हलक़ या खाना निगलनेवाली नली की रोक गर्दन के हिस्से में

Chocking

सबब—सख्त, बड़ी और गोल चीज़, जैसे गाजर, शलगम गन्ने का टुकड़ा या जड़ और छोटे बच्चों में आम की गुठली का निगल जाना। या दीगर सख्त सूखा चारा व दाना बिना चबाए निगल जाने से गोला-सा-बन जाना जब प्यासा हो।

अलामत—जब कोई चीज खाने की नाली में अटकी हो, तब नाक और मुँह से गिज़ा या पानी वापस गिरते हैं। खाँसी होती है। जानवर बार-बार निगलने की कोशिश करता है। बेचैन होता है गर्दन को कै करने के तरीके पर तानता है। रोक ज्यादा देर तक रहे, तो अफ़ारा हो जाता है। जब सीने के खाने में नाली की रोक हो, तो पानी थोड़ा पी लेता है। परन्तु थोड़ी देर बाद नाक और मुँह से वापस फैंकता है।

इलाज—सबब को दूर करो। हलक़ में है तो मुँह फैलाकर हाथ डालकर अटकी चीज़ को निकालो। गर्दन की बाईं तरफ नरखड़े के पास रोक हो, तो गर्म तेल से आगे-पीछे मालिश करो। लचकदार बेंत के सिर पर कपड़ा गोल बांधकर उसको घी से तर करके मुँह के ज़रिये दाखिल करके रोक को मेदे में धकेल दो। तेल अलसी या मीठा और पानी बराबर मिलाकर पिलाओ। अगर कामयाबी न हो, तो डाक्टर हैवानात को

बुलाकर आपरेशन करा दो। खाने को चन्द दिनों तक चावल का माँड, अलसी, जौ का आटा, सत्तू वगैरह पानीमें पकाकर दो। अगर तेल-पानी पिलाते वक्त जानवर खाँसे, तो मुँह फौरन् छोड़ दो। वरना दवा साँस की नली में जाकर मौत का बाइस होगी।

(५) अफ़ारा

Tympanitis

मेदे और आँतों की सब बीमारियों में से अफ़ारा ज्यादती से होता है।

सबब—जानवरों को सड़ी गली चीजें, जूठन, या बदबूदार पानी देना। बरसात के मौसम में नये उगे हुये और जहरीले चारों का खाना। गर्मी और बरसात के दिनों में ज्यादा देर तक भीगे हुये दाने का देना। हाज़्मे की खराबी होना। गिज़ा की नली में रोक होना। जानवर को खाना पानी देकर फौरन् काम लेना या भगाना।

अलामत—इस बीमारी में,जानवर की बाईं कोख ज्यादा फूली और दाहनी भी कदरे फूली होती है। यह दबाने पर दबती और पीटने पर ढोल की तरह बोलती है। जानवर बेचैन होकर उठता-बैठता है और नाक-मुह आगे करके साँस लेता है। है। ज्यादती की हालत में दम बन्द होकर मौत होजाती है, अगर इलाज जल्दी न किया जावे।

इलाज—जानवर को फौरन् हींग १ तो०, तारपीन का तेल १ छटाँक तेल मीठा या अलसी ३ पाव में मिलाकर फौरन् पिला दो और जानवर को टहलाओ। कोखों की दोनों तरफ आग से सेंको और पीठ को मालिश करो। काला नमक २ तोला, अजवायन २ तोला, मदार के पत्ते १ छटांक पीसकर पानी में दो।

अफारा कम होने पर देसी शराब २ छटांक, सोंठ २ तोला काली मिर्च १ तो०, काला नमक २ तो०, ३ पाव गर्म पानी में मिलाकर पिलाओ। खाना, पानी २४ घण्टे तक न दो।

बाद को एक जुलाब दो। नमक ६ छटाँक, ऐलवा १½ तोला, सोंठ २ तोला, शीरा पाव-भर, गर्म पानी १ सेर में दो। उसके बाद चिरायता १ तोला, काला नमक २ तोला नौशादर १ तोला, सोंठ १ तोला आध सेर पानी में दो। खाने को हरी-हरी दूब, चोकर और साफ़ पानी दो।

(६) मेदे में चारा अड़ना

Obstruction of Reuman

यह भी मवेशियों में आम बीमारी है, जिसमें ओझड़ी में सूखा चारा अड़ जाता है।

सबब — मुलायम चारे से एकदम खुश्क और सख्त चारे का बदलकर खिलाना। जब मेदा चारे से ज्यादा भर जाता है, तो पहले सुस्ती से काम करता है। खाने के दबाव से मेदे की दीवारें फैल जाती हैं। बाद को मेदा कमजोर होकर बेहरकत हो जाता है और चारे को आगे नहीं फेंक सकता।

अलामत—बाईं कोख में दबने से गुँदे हुये आटे की तरह गढ़ा पड़ जाता है। अलामत आहिस्ता-आहिस्ता जाहिर होती है। जानवर जुगाली व खाना छोड़ देता है क़ब्ज़ होजाता है। १ घंटे के अन्दर मर्ज शिद्दत पकड़ता है। नथने उठाये रखना, साँस जल्दी २ लेना, अगर लेटे तो दाहनी करवट पर, लेकिन जल्दी खड़ा होजाता है, दाँत पीसता है, गोबर थोड़ा २ सख्त होता है,

जब चारा अर्से तक मेदे में रहता है, तब सड़कर, अफारे की अलामत भी पैदा होजाती है, और मर जाता है।

इलाज—अव्वल जुलाब दो। नमक आध सेर, ऐलवा १¼ तो०, सोंठ १ छ०, शीरा १ पाव, पानी गर्म १ सेर में मिलाकर एक खूराक में दो। या ऐलावा १½ तो०, जमालगोटे के बीज १०, शीरे के साथ मिलाकर चटा दो। या तेल अरंडी ३ पाव, गंधक २ छटाँक, शराब २ छ० मिलाकर पिलाओ।

कोख पर मालिश हो और सेक भी। पेट पर कम्बल को पानी में भिगोकर और तारपीन का तेल छिड़कर बाँधना फायदा करता है। अगर २४ घण्टे तक दस्त न हों, तो तारपीन का तेल १ छ० तीन पाव अलसी के तेल में मिलाकर दो।

अगर जानवर बेहोश होने लगे, तो अजवायन २ तो०, नौशादर १ तो०, सोंठ १ तो० ½ सेर पानीमें दो। अलसो पकाकर उसका गर्म पानी पीने को दो। जब दस्त हो, तो चावल का माँड ½ छ० नमक मिलाकर दो। जब अफ़ारा जाता रहे, तब हरी-हरी घास, दूब और चोकर खाने को दो। अगर फ़ायदा न हो, तो अपने हलके के डाक्टर को बुलाकर दिखाओ।

(७) बन्द लग जाना

Obstruction in Omasum

इसमें सिर घुमता वा दर्द भी होता है। कब्ज़ होता है।

सबब—कहतसाली व गर्मियों के दिनों में चारे-पानी का कम और सख्त दिया जाना। जैसे सरकंडे, दरख्तों और झाड़ियों

की टहनियाँ देना। कपड़े खाना या सूखी रोटियाँ ज्यादा खिलाना। क्योंकि तीसरा मेदा ऐसे सख्त चारों को हज़म नहीं कर सकता; इसलिये आगे बढ़कर चारा वहाँ इकट्ठा होकर सख्त होजाता है।

इलाज—इसका भी मर्ज नं० ६ की तरह किया जाता है। फ़ायदा होने के बाद भूख बढ़ाने के लिये चिरायता १ तो०, नमक काला २ तो०, नौशादर १ तो०, सोंठ १ तो०, आध सेर ताजे पानी में चन्द दिनों तक देते रहो।

(८) बदहजमी

Indigestion

यह भी मवेशियों में आम बीमारी है, जिसमें खाना हज़म नहीं होता।

सबब—खराब चारा-दाना और पानी का देना। मेदों में जो रस-हाज़मा पैदा होकर खाने में मिलता है, उसका ज्यादा कम या बिलकुल न पैदा होना। बाज़ वक्त पट्ठों की कमज़ोरी व पेट के कीड़े उसका कारण होते हैं। दाँतों की बेतरतीबी व जिगर की खराबी व ज्यादा सर्दी व गर्मी, बेफ़ायदगी काम भी इसके सबब होते हैं।

अलामत—जानवर का हाज़मा ख़राब रहना, कमज़ोर होते जाना, कभी कब्ज़, कभी दस्त, कभी भूख का लगना व कभी बिलकुल नदारद, जुगाली में बेक़ायदगी, मट्टी खाना, ज्यादा प्यास का लगना, पेट में कभी कभी अफारा, मुँह में काँटों का बढ़ना।

इलाज—अव्वल जानवर को आध सेर अलसी का तेल और १ पाव अरण्डी का तेल मय ½ छटाँक तारपीन के तेल के १ खूराक दो। बाद को अगले दिन से दस्त होजाने के बाद कुचला ४ माशा, खाने का सोडा २ तोला, नौशादर १ तोला, सोंठ १ तोला, अतीस १ तोला आध सेर पानी में मिलाकर सुबह को दो। खाने को नरम चारा और साफ़ पानी दो। जानवर के स्थान में नमक का एक बड़ा डला चाटने के लिये हमेशा रक्खो। पुराने मरीज़ों को चार रत्ती सफेद संख्या १ छटाँक आटे में दो हफ्ते खिलाना फ़ायदेमन्द है।

(६) दस्तों का आना
Diarrhoea

इसमें पानी मिला पतला गोबर आता है।

सबब—ख़राब चारे, दाने और पानी का देना। आँतों में ख़राश का होना। ज्यादा गर्मी व सर्दी का लगना। बाज दूसरी बीमारियों में, जैसे चोल व आँतों की दिक़ में, सूखे चारों के बाद कच्चे हरे चारों का देना। पेट में कीड़ों का होना।

अलामत—गोबर का पतला होना। जुगाली कम या बिलकुल न करना। जिल्द का खुश्क होना। कमज़ोरी, पिछले पैरों पर गोबर लगा रहना। पानी ज्यादा पीता है।

इलाज—बीमारी के सबब को दूर करो। खाना व चारा बदलो। पानी के बजाय चावलों का माँड़, उसमें ½ से १ छटाँक नमक डालकर दो। पहले आँतों की ख़राश को निकालने के लिये

अलसी या तिल या अरण्डी का तेल आध सेर मय ३ माशे अफीम के दो। बाद को अगले दिन से खड़िया मिट्टी १ छटाँक, कत्था २ तोला, अफीम ३ माशे, सोंठ १$\frac{1}{4}$ तोला, देशी शराब १ छटाँक, पानी या चावल के माँड़ तीन पाव में मिलाकर, दिन में दो बार दो। या पकी प्याज १ छटाँक, कत्था २ तोला, अफीम ३ माशे आध सेर माँड़ में दो। या सोंफ ३ तोला, केले का फूल १ छटाँक, अनार-फल का वक्कल ३ तोला, देशी शराब २ छटाँक आध सेर माँड़ में दो बार दो। या गन्धक का तेजाब ३ माशे, हीराकसीस ६ माशे, पानी आध सेर दो बार दिन में दो। या जामन का अर्क २ छटाँक, सोंफ $\frac{1}{2}$ छटाँक, गोंद बबूल $\frac{1}{2}$ छटाँक, अफीम ३ माशा चावल के माँड़ आध सेर दो बार दो। या आम की गुठली १ छटाँक, सोंफ $\frac{1}{2}$ छटाँक, दालचीनी १ तोला, बेलगिरी १ छटाँक तीन पाव चावल के माँड़ में दो बार दिन में दो। या अजवायन २ तोला, कत्था २ तोला, सोंफ ३ तोला, आध सेर माँड़ में दो बार दो। या नमक २ तोला, दालचीन १ तोला, रेवद चीनी १ तोला, शीरा या शहद १ छटाँक में मिलाकर चटाओ।

अगर दस्त के साथ पेट में दर्द भी हो, तो गर्म पानी में कम्बल भिगो व निचोड़कर और उसपर थोड़ा तारपीन का तेल छिड़ककर पेट के चारों तरफ लपेटकर ऊपर से खुश्क टाट या कम्बल लपेटकर $\frac{1}{2}$ घण्टे तक दिन में दो-तीन बार सेक करो। खाने को हरी दूब व पीने को चावल का माँड़ दो।

(१०) पेट के कीड़े

Worms

ये लम्बे व गोल, दो तरह के होते हैं।

सबब—मैला पानी व खराब जगह को घास-चारा देना।

अलामत— जानवर ज्यादा खाता है, लेकिन दुबला होता जाता है। कीड़े गोबर में भी निकलते देखे जा सकते हैं।

इलाज—जानवर को भूखा रखकर पलासपापड़ा २ तोला, हींग १ तोला, खट्टे मट्ठे में मिलाकर रोजाना सुबह को दो। या कमेला १ से २ छटाँक गुड़ में मिलाकर खाली पेट खिलाओ। या नमक १ छ०, हीराकसीस १ तो०, गन्धक ½ तोला, पलासपापड़ा २ तोला, बच १ तोला ३ पाव पानी में घोलकर दो। या पलासपापड़ा १ तोला, अनार की छाल १ तोला, सौंफ १ तोला, सनाय १ तोला चार दिन तक दो। बाद को अलसी का तेल ३ पाव तारपीन का तेल ½ छटाँक, बतौर जुलाब के दो। खाना, पानी साफ दो। खाने में नमक बराबर दो।

भैंस के छोटे बच्चे ज्यादातर पेट में जूने यानी लम्बे, गोल कीड़े पैदा होजाने से मरते हैं। वे सुस्त रहते, अव्वल कब्ज, बाद को बदबूदार मटियाले दस्त आते हैं, जिसमें कीड़े भी निकलते हैं।

इलाज—बच्चे को खाली मेदे सुबह को बिला दूध पिलाये ही काफूर १ माशा, तारपीन का तेल १ तोला, हींग २ माशे, अलसी के २ छटाँक तेल में मिलाकर पिलाओ। अगले दिन से बच्चे को खट्टा मट्ठा आध सेर या पाव-भर में १ तोला नमक १ तोला नीम की पत्ती पीसकर और आधी छटाँक कड़वा तेल मिलाकर दोपहर को ३ महीने की उम्र तक दो। जिनके कीड़े न भी हों, उनको भी यह मट्ठे वाला नुस्खा तीन महीने की उम्र तक दिया जावे, तो कीड़े नहीं पड़ने पाते।

या गोल, लम्बे कीड़े मारने को ५ रत्ती तूतिया २ छटाँक पानी में मिलाकर खाली मेदे पिलाओ। बाद को तेल तारपीन १ तोला, तेल अलसी २ छटाँक में दो।

(११) पेट का दर्द या शूल

Colic

यह अक्सर मवेशियों में होता है।

सबब—खराब चारा व पानी देना। गर्म हालत में ठण्डे पानीको देकर खड़ाकर देना। तीसरे मेदे में चारे का अड़ जाना

अलामत—जानवर बेचैन होकर उठता-बैठता है। पिछले पैर पेट पर मारता है। कब्ज़ होता है। दाँत पीसता है। खाना बन्द करके जुगाली नहीं करता। बार-बार पेशाब व कभी-कभी पतला गोबर भी करता है। कभी-कभी अफारा भी होता है।

इलाज—शुरू हालत में तेल तारपीन १ छटाँक, हींग १ तो० तीन पाव मीठे या अलसी के तेल में मिलाकर एक खूराक दो। बाद को अगले दिन से लहसुन १ तो०, प्याज़ १ छटाँक, काला नमक २ तो०, काली मिर्च १ तो०, अजवायन २ तो०, हींग १ तो०, अदरक या सोंठ २ तो०, पानी गर्म तीन पाव में मिलाकर दिन में दो बार दो। खाना बन्द करके सिर्फ अलसी का पानी पिलाओ।

(१२) पेचिश

Dysentry

पेचिश यानी मड़ोड़े, जिसमें दर्द के साथ खून व आँव मिला बार २ दस्त हो।

सबब—खराब खाना-पानी देना। दस्तों का अर्से तक आना। पेट में कीड़ों का होना। ज्यादा सर्दी और गर्मी, दूसरे मर्ज के अलामत के तौर पर, होना।

अलामत—खून या बलगम मिला बार-बार थोड़ा-थोड़ा दर्द के साथ गोबर आना।

इलाज—जानवर को खुश्क, गर्म, हवादार स्थान में रक्खो। गुनगुना मांड़ या अलसी की चाय बजाय पानी के दो। दाने के बजाय चावल पकाकर दो। भूसा न दो, बल्कि हरी-हरी घास दो। ½ सेर अरण्डी के तेल में ३ माशे अफीम मिलाकर पिलाओ जिसके बाद से खड़िया मिट्टी २ तो०, कत्था २ तो०, सोंठ १ तो०, अफीम ३ माशे आध सेर चावल के माँड़ में दो बार दो। या बेलगिरी १ छटांक, सौंफ २ तो०, सोंठ १ तो० दाल चीनी ६ माशे, बच ६ माशे, अफीम ३ माशे, चावल का माँड़ तीन पाव में मिलाकर दो बार दो। पेट पर गर्म पानी में कम्बल भिगो निचोड़ कर दो-तीन बार सेक करो।

(१३) कब्ज़
Constipation

कब्ज़ यानी गोबर का कम और सख्त आना।

सबब—सूखा भूसा-चारा देकर अर्से तक पानी न देना। पहले और तीसरे मेदों में चारों का अड़ जाना। काम न लिया जाना।

अलामत—गोबर सख्त, जिस पर आँव भी लिपटी हो, थोड़ा-थोड़ा आना, मुँह में काँटों का बढ़ जाना। भूख का कम होजाना। पेशाब ज्यादा करना।

इलाज—अलसी, तिल या अरण्डी का तेल १ सेर, सोंठ ½ छटाँक मिलाकर १ खूराक में दो। या खाने का नमक १ पाव, नौसादर ½ छटाँक, सोंठ १ छटाँक, शीरा ४ छटाँक, गन्धक ½ छटाँक, ऐलवा २ तोला, गर्म पानी १ सेर में मिलाकर दो। अगले दिन से काला नमक २ तोला, सौंफ २ तोला, अजवायन १ तोला, चिरायता १ तोला, कुचला १ माशा, आध सेर पानी में सुबह २ पिलाओ। खाने को चोकर गर्म पानी में भिगोकर व हरी-हरी दूब घास दो।

(१४) आँतों की व पेट की झिल्ली की सूजन

Peritonitis

सबब—खराब, सड़ी-गली खूराक और गन्दा पानी देना। आँतों में कीड़ों का होना, सख्त गर्मी व सर्दी और बन्द चोट का लगना। दस्त व पेचिश का बहुत दिनों तक रहना। किसी खराशदार ज़हर, संखिया वगैरह का खाना।

अलामत—जानवर का खड़ा ही रहना। बुखार का होना। पेट पर लातें मार-मारकर दर्द ज़ाहिर करना। दाँत पीसना। क़ब्ज़ होना। खाना जुगालना छोड़ देना। आँख की झिल्ली गहरे सुर्ख रङ्ग की होना।

इलाज—१ पाव अलसी के तेल में काफूर ३ माशा व मीठा तेलिया ½ माशा मिलाकर दो बार दो। अलसी की चाय पीने को दो। पेट पर सेक करो। अच्छा होने पर साल्ट १ छटाँक, कलमी शोरा १ तोला पीने के पानी में दो। चावल का माँड़ दो।

(१५) जलोदर

Ascities

इसमें पेट के खाने में पानी भर जाता है।

सबब—जिगर व दिल की बीमारियों में अक्सर पानी पेट में बढ़ने लगता है।

अलामत—पेट का बढ़ना। रीढ़ की हड्डी का महराबदार होना। जानवर का दुबला होते जाना सुस्त रहना। दबाने पर पानी मालूम पड़ना।

इलाज—पानी कम दो। जुलाब दो। साल्ट ½ सेर, खाने का नमक ¼ सेर, गन्धक ½ छटाँक, सोंठ १ छ०, शीरा ½ सेर, गर्म पानी १ सेर एक खूराक में दो। जब दस्त होजावें, तो चिरायता १ तोला, कुचला ३ माशे, सोंठ १ तोला, नौसादर १ तोला, बालछड़ २ तोला, नमक ½ छटाँक दोबार दिन में १ हफ्ते दो। अगर कुछ फायदा न हो, तो डाक्टर साहब हैवानात को बुलाकर ऑपरेशन के ज़रिये पानी निकलवा दो।

(१६) बवासीर
Piles

सबब—क़ब्ज़ का रहना। जिगर का अच्छी तरह से काम न करना।

अलामत—पाखाने की जगह मस्सों से खून का निकलना और वहाँ पर पुरदर्द का होना। मस्सों की मौजूदगी।

इलाज—मस्सों पर भङ्ग के ताजे पत्तों को कूटकर गर्म करके बाँधो या गेंदे के पत्तों की टिकिया बाँधो। बाद को माजूफल १ तोला पीसकर उसमें अफीम ३ माशा मिलाकर, चर्बी या घी में मिलाकर चन्द बार लगाओ।

(१७) सुई या कील का चारे में खा जाना
Foreign body in Stomach

सबब—मालिक की ग़लती से सुई या कील का चारे में गिर जाना और जानवर का उसे खाना।

अलामत—जानवर कमी के साथ खाने लगता है। जुगालना कम कर देता है। क़ब्ज़ होना। दाँतों को पीसना। बालों का खड़ा रहना। दुबला होकर मर जाना।

इलाज—जब सुई या कील किसी अन्दरूनी आज़ाओं की तरफ़ चुभ जाती है, जैसे दिल व फेफड़े में, तो कोई इलाज नहीं। लेकिन जब सीने की जिल्द की तरफ़ कुहनी के पीछे चुभकर अन्दर से खाल की तरफ आती है, तो फोड़ा बन जाता है, जिसको डाक्टर से चिरवाकर फिनाइल लगाना चाहिये।

भाग २

जिगर की बीमारियाँ

Diseases of Liver

जिगर जो जानवर में दाहिनी तरफ़ आखिरी पसलियों के नीचे होता है, जिससे पित्त पैदा होकर छोटी आँतों में गिरकर खाने को हज़म करनेका और आँतों की हरकत बढ़ाने का व उनमें सड़न को रोकने का काम करता है, उसी से खून के सुर्ख दाने भी पैदा होते हैं और खाने का रस भी इसी के अन्दर होकर फिर खून में मिलता है।

मवेशियों में जिगर की बीमारियाँ कम होती हैं। बाज़ दफा मोटे ताजे जानवरों में ज्यादा गर्मी-धूप के बाइस या सर्दी लग जाने से जिगर में खून ज्यादा भर जाता है, जबकि जानवर से काम न लिया जाता हो। और उसे खाने को दाना वगैरह ज्यादा दिया जाता है।

(१) पीलिया रोग

Jaundice

इसे यरक़ाँ भी कहते हैं। इसमें मुँह, आँख की झिल्ली पीली होजाती है।

सबब----जिगर की बीमारी। पित्त का पैदा होकर आँत में न गिरकर फिर से खून में जज्ब हो जाना, जो पित्त की नाली की रोक से कीड़ों के उस नाली में पैदा होने या उसमें पथरी के होने से होता है।

अलामत----जानवर की आँख, नाक, मुँह की झिल्ली का पीला पड़ जाना। गोबर का मिट्टी के रङ्ग का होना। पेशाब

बहुत पीला, भूख कम, हरारत कभी कम, कभी थोड़ी ज्यादा होना। कमजोरी, कब्ज, ज्यादती प्यास और आखिरी दर्जे में दस्तों का होना।

इलाज—अव्वल जुलाब दो। गूदा अमलतास ३ तो०, गूदा इमली ३ तो० गर्म पानी आध सेर में दो। या गन्धक २ तो०, नमक ४ छटाँक, सोंठ २ तो०, ऐलवा १$\frac{1}{4}$ तो०, शीरा १ पाव गर्म पानी में दो। बाद जुलाब के नौसादर १ तोला, आक की छाल १ तोला, चिरायता १ तोला, नमक $\frac{1}{2}$ छटाँक, कुचला १ माशा रोजाना आध सेर पानी में मिलाकर दो बार दो। खाने को चोकर और हरी-हरी घास दो।

(२) जिगर में खून का भर जाना

Congestion of liver

सबब—ज्यादा ताक़तवाली खूराक देना और काम न लेना ज्यादा सर्दी गर्मी लगना व दिल की बीमारियों का होना।

अलामत—सुस्ती, झिल्लियाँ पीली होना। नब्ज़ कमज़ोर व सुस्त चलना। पेशाब कम व रङ्गीन, दाहनी बग़ल को देखना, भूख कम, बुखार असली से कम, पेट की दाहनी तरफ़ दबाने से दर्द मानना, आखिरी दिनों में जलोदर होना।

इलाज—जानवर को साल्ट $\frac{1}{2}$ सेर, ऐलवा सवा तो०, सोंठ २ तो०, मिलाकर दो। बाद को नमक १ तो०, नौसादर १ तो०, कल्मी शोरा १ तो०, काफूर ३ मा०, साल्ट १ छटाँक आध सेर पानी में दो बार दिन में दो। दाहनी तरफ पसली के नीचे राई

१ पाव गर्म पानी में पीस कर कागज़ या कपड़े पर लगाकर बाल काटकर पलास्टर लगाओ। आध घन्टा बाद खोलकर तारपीन का तेल और कड़ुआ तेल बराबर मिलाकर लगाओ। खाने को गर्म पानी में चोकर व ½ छटाँक नमक मिलाकर दो। हरी दूब, घास दो।

(३) जिगर की सूजन

Hepatitis

सबब—चोट लगना, गर्मी में सर्दी लगना, खाना अच्छा देकर काम न लेना।

अलामत—दाहनी तरफ़ पसली के नीचे दर्द, दांत पीसना कांखना, बुखार का होना, आँख की झिल्ली का पीली माइल सुर्ख होना। खाना जुगालना बंद। पेशाब का गहरे पीले रंग का और थोड़ा होना। क़ब्ज होना।

इलाज—अव्वल जानवर को साल्ट ½ सेर, नौसादर ½ छ० सोंठ २ तो०, कलमी शोरा २ तो०, तीन पाव पानी में मिलाकर दो। अगले दिन से काफ़ूर ३ मा०, कलमी शोरा १ तो०, नौसादर १ तो०, देशी शराब १ छटाँक आध सेर पानी में दिन में दो बार दो। जब हालत अच्छी हो, तो ताक़त के लिए कुचला ३ मा०, नौसादर १ तोला, चिरायता १ तो०, कुटका १ तो०, नमक २ तो० कलमी शोरा १ तो०, आध सेर पानी में दो बार दो हफ्ते तक दो। दाहिनी तरफ़ आखिरी पसली के नीचे पेट पर सेक करो और अलसी की पुलटिश या राई का पलस्टर लगाओ। बाद को तारपीन का तेल कड़ुए तेल में बराबर का मिलाकर मलो। खाने को गर्म पानी में चोकर मय नमक के और हरी दूब-घास दो। गुनगुना पानी दो।

(४) पित्त की थैली में चपटे कीड़ों का होना
Liver flukes

सबब—नीची जगहों का चारा व पानी देने से होते हैं, जहाँ इन कीड़ों के अण्डे जोहड़ों की मिट्टी व पानी में व घास में लगे रहते हैं।

अलामत—जानवर का कमज़ोर होते जाना। कभी कब्ज़, कभी दस्त होना। गर्दन के नीचे ठंडी वरम का होना, जो कभी कम, कभी ज्यादा होता रहता है। झिल्ली फीके रङ्ग की होती है। प्यास ज्यादा और भूख कम लगती है। चपटे कीड़ों का गोबर के साथ गिरना।

इलाज—गंधक २ तो०, नमक १ पाव, सोंठ १ तो०, शीरा १ पाव १ सेर पानी में दो। अगले दिन से हीराकसीस ६ माशा, नमक २ तो०, बच १ तो०, सोंठ १ तो०, पानी ½ सेर में दो। इसकी ख़ास दवा हर मवेशी-शफ़ाख़ानों में मिलती है।

(५) जिगर में पानी की थैलियों का पैदा हो जाना
Hydated Systs

सबब—यह बीमारी नशेबी चरागाहों और जोहड़ों के पानी पीनेवालों में, चपटे कीड़ों के अण्डों के खाने के साथ पेट में जाकर वहाँ से खून में मिलकर जिगर में जाकर ये थैलियाँ पैदा करते हैं।

अलामत—जानवर को बावजूद अच्छा खिलाने के भी मोटा नहीं होता। गोबर कभी सख्त, कभी पतला होगा। झिल्ली फीके रंग की होना। जब ज्यादा हो जाती हैं, तो जिगर काम नहीं कर सकता और मौत हो जाती है।

इलाज—इसमें मुश्किल से कारगर होता है। जुलाब देकर फिर हीराकसीस ६ माशा, नमक २ तो०, चिरायता १ तो०, कुचला ३ माशा, सोंठ १ तो०, अजवायन १ तो० आध सेर पानी पानी में दिन में दो बार दो। मरने पर ही चीर कर देखने से शनाख्त होती है। जिन्दगी की हालत में पहचानना बहुत मुश्किल है।

(६) पित्ती उछलना
Urticaria

सबब—पित्त जब खून में मिलकर जिल्द के नीचे जाता है, तो वहाँ खराश पैदा करके सूजन के धाफड़ पैदा कर देता है।

अलामत—खाल के नीचे जगह-जगह पर मच्छर के काटे के धाफड़ से लगाकर हथेली की चौड़ाई के सख्त सूजन खाल में पैदा होकर छिपते और निकलते रहते हैं।

इलाज—जानवर को अव्वल जुलाब दो। साल्ट $\frac{1}{2}$ सेर, नौसादर १ तो०, ऐलवा $1\frac{1}{4}$ तो०, सोंठ २ तो०, पानी गर्म १ सेर में मिलाकर दो। जुलाब के बाद अगले दिन से कुटकी १ तो० अनन्तमूल १ तो०, गेरू १ तो०, नौसादर १ तो०, चिरायता १ तो० नीम की छाल १ तो० तीन पाव पानी में पीस छानकर दो।

भाग २

सांस के आज़ाओं की बीमारियाँ

Diseases of Respiratory System

इन बीमारियों का बयान करने से पहले यह मुनासिब है कि कुछ बयान उन तन्दुरुस्त आज़ाओं के काम का किया जावे, जिनमें फ़र्क़ पड़ने पर ही बीमारिया हो जाती हैं। इन आज़ाओं का जिनमें नाक, हलक़ नरखड़ा, फेफड़े और उनकी झिल्ली शामिल हैं, व नोज़ पेट व सीने के खाने का अलहदा करनेवाला परदा पसलियाँ व उनके बीच का मांस भी शामिल है सांस लेने व छोड़ने में जिससे जिन्दगी क़ायम रहती, व खून साफ़ होता है, काम देते हैं।

जानवर को तन्दुरुस्ती में फ़ी मिनट १२ दफ़ा बराबर के वक्त से बिला किसी तकलीफ़ व आवाज़ के सांस आते हैं। अन्दर जानेवाली साफ़ हवा खून में जज़्ब होकर उसको साफ़ करती है और बाहर आनेवाली हवा में खून की गन्दगी बाहर जाती है। अगर अन्दर जानेवाली हवा ताजी और साफ़ न होगी तो खून के साफ़ न होने से तरह-तरह की बीमारियां पैदा हो जायँगी।

जो जानवर गन्दी और तङ्ग जगहों में बहुत-से बाँधकर और किवाड़ बन्द करके रक्खे जाते हैं, वे बावजूद अच्छी खिलाई पाने के भी तन्दुरुस्त नहीं रहते। लिहाज़ा जानवरों को तन्दुरुस्त रखने के लिए अच्छी खिलाई से ज्यादा जरूरी उनको साफ़ जगहों में, जहाँ अच्छी ताजी हवा लगे, रखना चाहिए। बीमारों को तन्दुरुस्तों की बनिस्पत ज्यादा ताजी और साफ़ हवा और ज्यादा

जगह की जरूरत हुआ करती है, जिसका हमेशा खयाल रखना चाहिए।

(१) नाक के अन्दर जोंक का लगना

Leeches in nostril

सबब—तालाबों में पानी पिलाना।

अलामत—जानवर छींकता रहता है और कभी-कभी नाक से खून बहता है।

इलाज—जानवर को प्यासा रखकर नथने पर पानी डालो। उसकी खुशबू पाकर जोंक, जो प्यासी होती है, बाहर निकलती है। उसे किसी मोचने से पकड़कर खींच लो या नाक में तेज नमक के पानी की या तम्बाकू के जुशांदे की पिचकारी दो।

(२) नकसीर (नाक से खून का आना)

Epistexis

सबब—मोटे-ताजे जानवरों में ज्यादा गर्मी के बाइस नाक की बारीक-बारीक रगें फटकर उनसे खून निकलने लगता है।

अलामत—नाक से गर्मी के वक्त बिला छींक वगैरह के खून का बहना।

इलाज— नाक में, १ तो० फिटकरी को १ पाव पानी में मिलाकर, पिचकारी करनी या छींटें देना। उसमें रुई या कपड़ा

भिगोकर नथने में रखना। सिर पर बरफ या ठंडा पानी डालना अन्दर साल्ट २ छ०, नौसादर १ तो०, हीराकसीस ६ माशे, पानी ८ छ० में दो। बाद को चिरायते का पानी ४ छ०, १ छटाँक शहद में मिलाकर रोजाना दो। चने का दाना बन्द करके भुने हुए जौ व चोकर दो। हरी-हरी घास दो।

(३) जुकाम (नाक की झिल्ली की सूजन)
Nasal Catarrh

सबब—गर्मी की हालत में सर्दी का लगना। गर्द-गुबार का साँस के साथ अन्दर जाना। बहुत-से जानवरों का तङ्ग, अन्धेरे मकान में, जहाँ हवा ताजी न आती हो, बाँधना।

अलामत—नाक से पानी का निकलना। छींकों का आना। खांसी होना। बुखार का १०२ डिग्री से ज्यादा होना, जो जीभके नीचे उंगली डालकर देखा जा सकता है। मगर बुखार के देखने के आले को जानवर के पाखाने के मुकाम पर दो मिनट तक लगा कर देखते हैं। जानवर की असली गर्मी १०१ से १०२ डिग्री होती है। नाक की झिल्ली सुर्ख होती है। बाद को बलग़म आने लगता है। खाना कम खाता है।

इलाज—जानवर को खुश्क, हवादार स्थान में जाड़ों के मौसम में कम्बल उढ़ाकर रखना। खौलते पानी में, जो घड़े में हो १ तो० तारपीन का तेल डालकर जानवर के सिर पर कम्बल डालकर उसको भाप सुबह-शाम आध-आध घण्टा दो, मगर जहां हवा न आती हो। उस स्थान में दो। या हल्दी का धुआँ सुँघाओ। या टाट की धूनी दो।

काफूर ४ माशा, नौसादर १ तो०, कलमी शोरा १ तो०, मुलहठी १ तो०, आक की जड़ की छाल १ तो०, अलसी २ तो०, शीरा १ छटाँक में मिलाकर ऐसा दिन में दो बार दो। या अजवायन २ तो०, अदरक १ तो०, प्याज ३ तो०, काफूर २ माशे, शोरा १ तो० शीरे में मिलाकर दो बार दो। या गूगल ६ मा०, राई १ तो०, हल्दी १ तो०, हींग १ तो०, धतूरा ३ माशे, गोली बनाकर दो। पीने को गुनगुना पानी दो। हरी दूब-घास व गर्म पानी में चोकर दो। गले पर काफूर १ तो०, तारपीन का तेल १ छटाँक, अन्डा-मुर्गी १, कड़ुवा तेल पाव-भर मिलाकर मलो। पीने के पानी में साल्ट १ छ०, शीरा १ तो० दो।

(४) खाँसी हलक की सूजन में

Cough

सबब—किसी गर्म चीज़ का खाना। खाने में कोई चीज़ निगलते वक्त नरखड़े में चले जाना। सर्दी, गर्मी और बदहज़मी में भी बाज वक्त खाँसी होती है।

अलामत—हवा का एकदम झटके के साथ अन्दर खींचकर जोर से एकबारगी मुँह के रास्ते बाहर फेंकना, जिससे आवाज़ पैदा हो। यह खाँसी शुरू हालत में खुश्क और बाद को तर हो जाती है। जब किसी दूसरे मर्ज़, मस्लन् निमोनिया (फेफड़ों की सूजन) के बाइस हो, तो बुखार भी मर्ज की शिद्दत के मुताबिक़ कम या ज्यादा होता है। सीने पर कान लगाकर सुनने से साँस की आवाजें भी मुख्तलिफ़ दो चीजों के रगड़ने की सी या चट-चट या खट-खट या सीटी की-सी होती हैं।

इलाज— जानवर को हवादार, गर्म अस्तबल में आराम से रक्खो। दवा के तौर पर १ छटांक सुर्ख अनार के छिलके १ छ० मक्खन में मिलाकर दो। या केले के पत्तों की राख २ तो०, ४ तो० मक्खन में दो। या १ छ० नमक की डली आक के पत्तों में भुल-भुलाकर तीन दिन तक पाव-भर पानी में दो। मगर जानवर खाँसे, तो मुँह छोड़ दो। वह चटनी दो, जो जुकाम में दी गई है। वैसे ही नाक से भपारा और उसी तेल की गर्दन पर मालिश करो, और वही गर्म पानी, गिज़ा व घास दो।

(५) साँस की नाली की सूजन से खाँसी
Branchitis

सबब—गर्मी-सर्दी का एकदम बदल, दवा देते वक्त उसका नरखड़े में चले जाना, दूसरी बीमारी में अलामत के तौर पर होना, नरखड़े में कीड़ों का होना।

अलामत—बुखार, पहले खुश्क खाँसी, बाद में तर होती है, जिस हालत में बलगम निकलता है। अव्वल सर्दी लगना, बुखार बढ़ना, बाद को पसीना आना। क़ब्ज़, खाना-जुगालना बंद। आँख से पानी व कीचड़ आना। गर्दन को आगे बढ़ाकर साँस लेना। जब कीड़ों की वजह से खाँसी हो, तो खुश्क हुआ करती है। छाती पर कान लगाकर सुनने से साँ-साँ या खट-खट की आवाजें सुनाई देती हैं।

इलाज—जानवर को हवादार, खुश्क गर्म स्थान में जाड़े के दिनों में कम्बल डालकर रक्खो। छाती जिस तरफ बीमार हो, राई का पलास्टर बाल काटकर लगाओ। बाद को तारपीन का

तेल व कड़ुआ तेल बराबर मिलाकर लगाना। खाने को गर्म पानी में अलसी कुटी हुई व चोकर दो। हरी-हरी दूब-घास दो। पीने के पानी में साल्ट १ छ०, कलमीशोरा १ तो० मिलाकर दो।

पीपल १ तो०, अड़ूसे की पत्ती १ छटाँक, मुलहठी १ तो०, सोंठ १ तो०, १ छटाँक शहद में दो। या हींग ६ माशा, पीपल ६ मा०, काफूर ४ मा० नौसादर १ तो०, मुलहठी १ तो०, शहद ४ तो० में दो। या गूगल १ तो० काफूर ¼ तो० मुलहठी १ तो०, शहद ३ तो० मिलाकर दिन में दो बार चटाओ। या पीपल १ तो०, काकड़ासींगी १ तो० काली मिर्च ६ माशा, गोंद ढाक १ तो० शहद ३ तो० में दो। या काफ़ूर ३ मा०, कलमीशोरा १ तो०, नौसादर १ तो० मुलहठी १ तो०, अलसी २ तो०, आक की छाल १ तो० शोरा १ छटाँक में मिलाकर दिन में दो बार दो। या कुटकी १ तो० कालीमिर्च १ तो०, अदरक १½ तो० पान १ तो०, शहद १ छटाँक मिलाकर दो। तारपीन का तेल १ तो० खौलते पानी में डालकर दिन में दो बार भपारा दो।

(६) फेफड़ों में खून का भर जाना
Congestion of lungs

सबब—जो जानवर आराम से रहता है, अगर उसे ज्यादा दौड़ने वग़ैरह से गर्मी पैदा होकर सर्द हवा या बारिश लगे, तो यह मर्ज होजाता है।

अलामत—जानवर जल्द-जल्द और तकलीफ से दम लेता है, जिसमें नथने फैलते और कोख ज्यादा ऊपर-नीचे होती है। सींग व कान ठंडे, ठंडा पसीना, नब्ज कमजोर जल्द-जल्द चलना

बुखार का न होना या थोड़ा होना, नाक से खून मिला इखराज होना। छाती पर कान लगाकर सुनने से कोई आवाज साँस की नहीं मालूम होती। अगर जल्द इलाज न हो, तो निमोनिया या मौत होती है।

इलाज—सीने पर काफूर १ तो०, तारपीन का तेल १ छ० अण्डा १, व कड़ुआ तेल २ छटांक मिलाकर मलो, जिसे राई क पलास्टर लगाने के बाद इस्तेमाल करो। दवा के तौर पर काफूर ३ मा०, गूगल १ तो०, अदरक १ तो०, नौसादर १ तो०, कलमी शोरा १ तो०, पीपल ६ माशा, मुलहठी १ तो० १ छटाँक, शहद में मिलाकर दिन में दो चार दो। जब नाक से खून ज्यादा आवे, तो सीने पर बरफ लगाओ।

(७) फेफड़ों की सूजन

Pneumonia

सबब—एकदम गर्मी-सर्दी का बदल, पसीने की हालत में बारिश में भीगना या पसीने की हालत में सख्त काम के बाद ठंडा पानी पिलाकर खड़ा कर देना। जब किसी दूसरे सबब से जिस्म कमजोर हो, तो इस बीमारी के बहुत बारीक-बारीक कीड़े जो हर वक्त फेफड़ों में मौजूद रहते हैं, इस बीमारी को पैदा कर देते हैं। खाँसी जब अर्से तक रहे, तो उससे भी निमोनिया आखिरी दर्जे में हो जाता है। अगर जानवर तङ्ग मकानों में, जो रोशन न हों और गीले रहते हों, रक्खे जावें, तो इस मर्ज में अक्सर बीमार होजाते हैं। यह सख्त बीमारी होती है। इसका इलाज फौरन् होना चाहिए।

अलामत—तेज बुखार, काँपना तङ्गी के साथ साँस लेना, नथनों का फैलना और उनसे खून मिले झागदार बलग़म का निकलना, आँखों की झिल्ली गहरी सुर्ख होना, अगले पैरों को कुहनियों से फैलाकर खड़े रहना, बैठकर फौरन खड़ा होना, नब्ज बहुत तेज यानी १०० से ज्यादा चलना, खाँसी होना, क़ब्ज होना और बाद को दस्त लगना, पेशाब गहरे रंग का होना। जानवर कराहता है, दाँत पीसता है। या तो एक हफ्ते के अन्दर मर जाता है, वरना अच्छा होने की तरफ मायल होता है।

इलाज—गर्म, हवादार स्थान में कम्बल उढ़ाकर रखना। पैरों पर पट्टी बाँधना। छाती पर कान लगाकर सुनो, जहाँ पर बिलकुल आवाज़ न आवे और उँगली के ठोकने से ठोस आवाज़ हो, तो वहीं बीमारी मौजूद होती है। उस जगह पर बाल काटकर, अलसी की पुलटिस लगाओ, जो दिन में ४ या ५ दफ़ा बदलो। या राई का पलास्टर बड़े काग़ज़ या कपड़े पर फैलाकर लगाओ। नाक से भपारे दो। दूध १ सेर, २ अण्डे और १ छटाँक शराब मिलाकर दिन में तीन बार दो।

दवा के तौर पर काफूर ३ माशा, जावित्री ६ माशे, मदार की छाल १ तोला, मुश्क ६ रत्ती, मुलहठी २ तोला, क़लमी शोरा १ तोला, नौशादर १ तोला, अलसी २ तोला, शोरा १ छटाँक दिन में दो-तीन बार चटाओ। पीने को गुनगुना पानी, खाने को चोकर व हरी दूब दो।

(८) फेफड़े की झिल्ली की सूजन

Pleurisy

सबब—गर्मी में भीगकर ठण्डी हवा का लगना। निमोनिया के बाद चोट से।

अलामत—जानवर को तेज़ बुखार, दाँत पीसना, खाँसने में तकलीफ़, साँस ज़्यादातर पेट के खाने से लेना, सीने और पेट के खाने के बीच खड़ी लकीर का पसलियों के आखिरी हिस्से पर मालूम पड़ना, पसलियों पर दबाने से दर्द होना।

इलाज—जानवर को आराम से गर्म, हवादार अस्तबल में कपड़ा उढ़ाकर रक्खो। सीने पर तेल तारपीन १ छटाँक, तेल जमालगोटा २ तोला, काफूर १ तोला, कड़ुवा तेल ४ छटाँक में मिलाकर मलो। अन्दर काफूर ३ माशा। कलमीशोरा १ तोला, देशी शराब २ छटांक, आध सेर पानी में दिन में दो बार दो। पानी में साल्ट १ छटाँक, शोरा १ तोला दो।

(९) सीने के खाने में पानी का पड़ जाना

सबब—फेफड़े की झिल्ली में सूजन होकर और पानी का छनकर जमा होजाना।

अलामत — जानवर थोड़ा चलने से भी थक जाता है और दुबला होता जाता है। सीने पर वर्म भी होजाता है।

इलाज—अपने हल्के के डाक्टर-हैवानात को दिखाकर उनसे ज़रिये आपरेशन पानी निकलवा दें। और जो वह दवा करें, कराओ।

(१०) दमा

Asthma

सबब—कमज़ोर जानवर से ज़्यादा दौड़ने का काम लेना, या खाँसी देर तक रहे। हाज़मे के देर तक खराब होने से भी यह मर्ज होजाता है।

अलामत—अन्दर जानेवाली साँस की हवा ज़ोर से जाकर बाहर आनेवाली हवा का—दो झटकों के साथ, जो पेट की कोखों को ग़ौर से देखने से मालूम होसकते हैं—खारिज होना। खाँसी का ज़्यादा होना। सीने पर कान लगाकर सुनने से चीख़ या सीटी की-सी आवाज़ मालूम देना।

इलाज—इसमें धतूरे के बीज १० रत्ती, अफ़ीम १ माशा, गर्म पानी १ पाव में दो। या सफेद संखया ५ रत्ती आटे में मिला कर दो हफ़्ते बारी-बारी से दो। खाना जल्द हज़्म होनेवाला दो। चोकर व अलसी पकी हुई मिलाकर व हरी दूब खाने को दो।

भाग ४

पेशाब के आज़ा गुर्दों की बीमारियाँ

Diseases of Urinary system

इन बीमारियों का हाल बयान करने से पहले उन आज़ाओं की बनावट, काम, तन्दुरुस्ती की हालत में, बयान करना ज़रूरी है, ताकि बीमारी की हालत की जल्द पहचान मिले।

इन आज़ाओं में २ गुर्दे, जो रीढ़ की हड्डी के दाहिनी-बाईं तरफ़ आख़िरी पसलियों के जोड़ के ठीक पीछे पेट की छत में लगे रहते हैं। उनका काम खून में से पेशाब को, जिसमें बहुत-सी खून की खारिज होनेवाली नाक़िस व गन्दी चीजें मिली होती हैं, छानकर अलहदा करते हैं। जिस क़दर पानी जानवर पीता है, वह सब मेदे और आँतों से खून में जज़्ब होकर गुर्दों में से छनता है और पेशाब होकर खारिज़ होजाता है। अगर पेशाब छनना रुक जावे, तो खून ज़हरीला होकर बहुत जल्द मौत होजाती है। जैसे आदमियों के हैजे में पेशाब बन्द होकर यह पेशाब गुर्दों से टपक-टपक कर दो नालियों के ज़रिएसे मसाने में, जो पेड़ू के नीचे की तरफ़ होता है, जमा होता रहता है। जब भर जाता है, तो पेशाब की हाजित होकर पेशाब की नाली में से, जो इन्द्रिय में होती है, खारिज हो जाता है। पेशाब असली ज़र्दी माइल सफेद दिन में छः या सात दफ़ क़रीब १ सेर की तादाद में, पतली धार से नर जानवरों में, और ज्यादा ज़ोर के साथ मादीनों में खारिज होता है। इसकी बनावट का इनहसार गिज़ा और पानी की मिक़दार व इन आज़ाओं के ठीक काम करने पर निर्भर होता है।

(१) गुर्दों की सूजन

Nepbritis

सबब—सर्दी लगना। कमर पर चोट लगना। खराश करने वाली दवाइयों का देना।

अलामत—बुखार होना। कमर को झुकाकर टेढ़ा करके खड़ा होना। थोड़ा-थोड़ा गाढ़ा पेशाब दर्द के साथ करना। दर्द की वजह से जल्द-जल्द साँस लेना। दाँत पीसना. कमर को दबाने पर दर्द मानना। पेशाब का बिलकुल बन्द होजाना और कोशिश करने पर भी न होना। गोबर बूदार होना। बेहवासी, पसीने से पेशाब की बू का आना। आखिर में बदबूदार दस्तों का होना।

इलाज—तेल का जुलाब दो। कमर पर सेक करो और गर्म तेल की मालिश करो। या राई का प्लास्टर लगाओ। खाने को दूध, अलसी की चाय वग़ैरह दो। आधी छटाँक सोडा खाने को चोकर में दो हफ्ते तक देते रहो।

(२) पेशाब में खून आना

Hæmaturia

सबब—गुर्दे या मसाने में पथरी, कमर पर चोट लगना, पेशाब की नाली का जख्म, बाज जहरीले पौदों का खाना, खराब खूराक का अर्से तक खिलाना।

अलामत—पेशाब लाल और बुखार का होना। कभी दस्त और कभी क़ब्ज होना।

इलाज—अगर खून ज्यादती से हो, तो ठंडे पानी के अमल दो। कमर पर ठंडा पानी डालो। १ तो० फिटकरी दूध में मिलाकर दो। अलसी की चाय या शीशम की पत्तियों का पानी व हरी दूब खाने को दो। साल्ट १ छटाँक, हीराकसीस १ तो०, गन्धक का तेजाब २ मा० आध सेर पानी में मिलाकर दिन में दो बार दो।

(३) पेशाब का बन्द होजाना

Retention of urin

सबब—गुर्दों का काम बन्द होजाना। पथरी का पेशाब की नाली में होना। सूखा चारा देना और पानी की कमी। मसाने की कमज़ोरी। पिछले धड़ का फ़ालिज़, बेचैनी, मसाने का भरकर फूट जाना और पट्ठों की कमज़ोरी है।

अलामत—मरीज़ को पेशाब नहीं होता। बेचैन होना, बार-बार पिछली लातों को पेट पर मारना, उठना-बैठना, बार-बार पेशाब करने की कोशिश करना, पाखाने के रास्ते से हाथ डालकर देखो, तो मसाना पेशाब से भरा होगा।

इलाज—हाथ को तेल लगाकर, गोबर निकालकर मसाने को आहिस्ता-आहिस्ता आगे से पीछे को दबाओ। गर्म पानी के अमल दो। कबाबचीनी १ तोला, घनिया २ तोला, कलमीशोरा १ तोला, आध सेर पानी में दो बार दो। अलसी की चाय दो। देशी शराब व गाय का घी एक-एक पाव मिलाकर दो। कलमीशोरा १ तोला १ सेर दूध में दो।

(४) पेशाब ज्यादा आना
Diabeties

सबब—खून की खराबी, खराब दाना-चारा, गीली जगहों में रखना।

अलामत—पेशाब ज्यादा और,बार-बार आना। कभी-कभी शकर भी उसमें खारिज होती है। जानवर दुबला होता जाता है।

इलाज—जानवर को अच्छी, ताक़त वाली खूराक दो। दवाई के तौर पर जामन की २ तोला गुठलियों को पीसकर पाव-भर पानी में दो बार दो। काफूर १ माशा, फिटकरी १ तोला, खुरासानी अजवायन १ तोला, सोडा १ तोला, शहद १ छटाँक, मिलाकर दिन में दो बार चटाओ।

(५) पेशाब का हर वक्त टपकना
Incontinuence of urin

सबब—मसाने की कमज़ोरी, खून का खराब होना, मसाने में खराश, बुढ़ापा, पथरी का होना।

अलामत—पेशाब का थोड़ी-थोड़ी मिक़दार में बराबर टपकते रहना।

इलाज—पथरी को आपरेशन करके खारिज कराना। खाने को दूध और अलसी की चाय देना। दवाई के तौर पर कुचला ३ माशा, कबाबचीनी १ तोला, वंशलोचन ३ माशा, लुआब

रेशाखतमी १ छटाँक, सोंठ १ तोला, खुरासानी अजवायन १ तोला आध सेर पानी में मिलाकर दिन में दो बार दो।

(६) मसाने की सूजन

Cystitis

सबब—खराशदार जहर या घास का खाना। पथरी का होना। चोट, सदमा, अर्से तक पेशाब का रुका रहना।

अलामत—पेशाब सुर्ख, दर्द, बग़लों की तरफ़ देखना, बुखार का होना।

इलाज—तेल का जुलाब दो। गर्म पानी की पिचकारी करो। कमर पर सेक करो। दवाई के तौर पर काफ़ूर २ माशा, बिहीदाना १ तोला, खुरासानी अजवायन १ तोला, सोडा १ तोला १ छटाँक शहद में मिलाकर दिन में दो बार चटाओ।

(७) मसाने या पेशाब की नाली की पथरी

सबब—पानी में ज्यादा चूना होना। खुश्क गिज़ाओं का देना।

अलामत—पेशाब का दर्द के साथ रुक-रुककर आना, कभी-कभी खून के साथ पेशाब का आना।

इलाज—डाक्टर से बिला आपरेशन कराये अच्छा होवे की कोई उम्मेद नहीं।

भाग ५

नर, मादीन के ख़ास आज़ाओं की बीमारियाँ

Diseases of reproductive organs

नर जानवर के आज़ाओं के फ़ोते—जिनसे वीर्य पैदा होकर इन्द्रिय के ज़रिये से मादीन से जोड़ खाकर नस्ल क़ायम रखने का कुदरती काम देते हैं। जब मादीन गरमाती है, तभी नर तैयार होता है। बदनस्ले और दूसरे नर जानवर को ज्यादा मेहनती बनाने की ग़रज़ से उनको आख़ता यानी बधिया किया जाता है, ताकि नस्ल ख़राब न हो और जानवर मोटाताज़ा व ज्यादा मेहनती और हलीम होजावे।

इन दिनों हर तहसील के मवेशी शफ़ाख़ानों में ऐसा औज़ार आख़ता करने का मौजूद है, जिसको एक बार दबाने से जानवर बिला तकलीफ़ बधिया होजाता है। लिहाज़ा उनको उससे बधिया कराना चाहिये। कूटने से ज़्यादा तकलीफ़ जानवर को होती है, जो बेरहमी है। यह काम शफ़ाख़ानों में मुफ़्त किया जाता है।

(१) फ़ोतों की सूजन

Orchites

सबब—चोट लगना।

अलामत—फ़ोतों पर सूजन व गर्मी, बेचैनी, बुख़ार, पैरों को फैलाकर चलना।

इलाज—फ़ोतों पर टेसू के फूल मय थोड़े नमक के पानी में पकाकर बाँधना। अन्दर काफूर २ माशा, कलमीशोरा १ तोला, शराब १ छटाँक ½ सेर पानी में दो बार दो।

(२) फ़ोतों में पानी भर जाना
Hydrocele

सबब----सूजन फ़ोता या चोट सदमा।

अलामत----फ़ोते बड़े-बड़े जिनमें गर्मी नहीं होती, बल्कि पानी भरा मालूम हो।

इलाज—फ़ोतों को चिरवाकर बधिया करा देना चाहिये।

(३) बैलों में सूज़ाक़
Bull Burnt

सबब—यह मरीज़ गायों से नर को लग जाता है।

अलामत—पेशाब दर्द से बार-बार थोड़ा-थोड़ा होना, उस नाली से मवाद निकलना। पिछली टाँगें इधर-उधर मारना, कराहना और दुम मारना। पेशाब एकबार में न होकर झटकों से आना। कदरे बुखार होना।

इलाज—ज़ख्मों को लाल दवा के पानी से धोकर चाँदी का तेज़ाब लगाओ। जानवर को बधिया करा दो, ताकि दूसरी गायों को बीमार न करे।

(४) नरेन्द्रिय का बाहर या अन्दर रहजाना
Paraphymosis and Phymosis

सबब----अन्दर रहना पैदायशी भी होता है। लेकिन बाहर चोट लगकर होने से अन्दर नहीं जा सकती।

अलामत----इन्द्रिय का अन्दर से बाहर न आना या बाहर से भीतर न जाना।

इलाज—दोनों हालतों में डाक्टर से आपरेशन कराने की ज़रूरत है।

(५) हैवाने की सूजन

Mammitis

मादीन के बच्चे पैदा करने के आज़ाओं में कमर के दो गद्दूद हैं। जब मादीन गर्म होती है, तो वहाँ से रज बच्चेदानी में गिरता है, और, वहीं नर के वीर्य से मिलकर हमल क़रार पाता है, जो पूरा समय होने पर, बच्चेदानी का मुँह फैलने पर झेर से लिपटा हुआ बाहर आता है। फ़ौरन ही कुदरत उसको दूध पीने की, जो हैवाने में बनता है, रग़बत दिलाती है। लिहाज़ा हैवाना भी इन्हीं आज़ाओं में शामिल है।

सबब—यह ज्यादा दुधार गाय, भैंसों में, अक्सर बच्चा जनने के बाद एकदम गर्मी-सर्दी लगने, देर तक दूध न दुहने, जनने के बाद ठंडा पानी देने से होता है।

अलामत—कभी एक, कभी दो और कभी चारों दूध के गदूदों में सूजन हो जाती है। दूध के बजाय पानी आने लगता है। बुखार होता है। जानवर बेचैन, खाना कम या बन्द कर देता है। फोड़ा बन जाता है, जो फूटकर नासूर होजाता है।

इलाज—तेल या साल्ट का जुलाब दो। पीने के पानी में कलमी शोरा १ तो० दो। दूध या मवाद को दिन में कई बार निकालकर दवा दो। पोस्त के छिलके पानी में पकाकर उनकी टकोर करो। बाद को मकोह के पत्तों का अर्क़, काली जीरी और

गेरू पानी में मिलाकर गुनगुनी लेप कर दो। जब ज़ख्म होजावे, तो फिनायल नीम के तेल मे मिलाकर नीम के पानी से धाने के बाद लगाओ। अगर थन का सूराख बन्द हो, तो उसको डाक्टर से खुलवा दो। खाने को ऐसी खूराक दो, जिससे दूध की पैदा-इश ज्यादा न हो। बुखार के लिए काफ़ूर २ मा०, शोरा १ तो० शराब १ छ० दो। आध सेर दही में पाव-भर मीठा तेल मिला कर अन्दर दो। जब थन में गिल्टी पड़ जावे, तो १ पाव कत्था १ सेर पानीमें मिलाकर पिलाओ। जब थन मारा जावे, तो गाभन की हालत में १ पाव तेल महीने में १ बार दो। दो घण्टे पहले ½ छ० हींग चने के आटे में दो। जब दूध देती हुई को यह तक-लीफ हो जावे, तो काली मिर्च व काली जीरी हरएक एक छटाँक को आध सेर घी में मिलाकर सुबह-शाम दो बार तीन दिन तक दो।

(६) बच्चेदानी की जलन

Motritis

सबब — बच्चे के पैदा होने में तकलीफ़ या चोट लगना। सर्दी लगना। बच्चा पैदा होते वक्त मैले-कुचैले हाथ डालना।

अलामत — पेशाबगाह से बदबूदार मवाद का आना। कदरे बुखार, बेचैनी।

इलाज — मरीज़ को सर्दी से बचाकर आराम से रखना। तेल का जुलाब देना। गर्म लाल पानी से बच्चेदानी को धोना। काफूर २ मा०, कलमीशोरा १ तो०, शराब १ छ० आध सेर पानी में दो बार देना।

(७) बच्चेदानी का बाहर लौट जाना

Inversion of uterus

सबब—बच्चा पैदा होने में बेक़ायदगी। हामला जानवर का कमजोर होना।

अलामत—बच्चेदानी का, जिसमें गुठलियों की बनावट के गद्द जेर से ढके रहते हैं, पेशाब के रास्ते से बाहर लौट पड़ना।

इलाज—बच्चेदानी को लाल दवा से धोकर और देसी शराब चुपड़कर फौरन् अन्दर करके छींका लगा दो और चन्द दिनों तक धोते रहो। अगला धड़ नीचे और पिछला ऊँचे रक्खो।

(८) पेशाबगाह में कीड़े पड़ना

Maggots in valva

सबब—बच्चा देने के बाद जगह गन्दी रहने से मक्खी कीड़े के अण्डे छोड़ देती है।

अलामत—वह जगह सूज जाती है और जख्म से खून बहता रहता है।

इलाज—जानवर को काबू करके कीड़ों को निकालकर फ़िनायल या बच पीसकर भर दो। फ़िनायल तेल में मिलाकर लगा दो।

——:o:——

भाग ६

आँखों की बीमारियां

Diseases of eyes

——:o:——

(१) आंख का दुखना

Ophthalmia

सबब—किसी चोट से या किसी चीज के पड़ जाने से, सख्त गर्मी व सर्दी, बदबूदार गन्दे मकानों में रखना, मक्खी व मच्छर का काटना।

अलामत—आँखों का सुर्ख होना, वरम पपोटों पर आकर आँख का बन्द होना। आँसुओं का जारी रहना, पपोटों पर वरम का होना।

इलाज—अगर आँख में कोई चीज पड़ गई है, तो उसे निकालकर अरण्डी का तेल डालो। फिर आँख में गुलाबी फिटकरी १० रत्ती गुलाब के अर्क आधी छटाँक में मिलाकर डालो। अगर आँख में सूजन हो, तो पोस्त का छिलका पानी में पकाकर उसमें साफ रुई भिगोकर सेक करो। जानवर को धूप और रोशनी से बचाकर अन्धेरे स्थान में रक्खो। शुरू हालत में बजाय सेकने के फिटकरी के लोशन में साफ रुई तर करके आँख पर रखकर बाँधो और बार-बार तर करते रहो लेकिन जब बीमारी दूर की हो जावे, तो सेक फायदा करता है। मरीज को आँख रगड़ने से रोकना चाहिये। खाने को चने का दाना बन्द करके चोकर, हरी दूब-घास देनी चाहिये। पीने के पानी में साल्ट २ छटाँक, कलमीशोरा १ तोला मिलाकर १ हफ्ते तक दो।

(२) आंख में जाला फूला पड़ जाना
Opacity of Cornia

सबब—जब देर तक आँख दुखती है, तो पुतली पर जख्म हो जाते हैं, जिस पर बाद को सफेदी होजाती है।

अलामत—आँख में काली पुतली पर सफेदी छा जाना या दिखाई न देना। पानी का बहते रहना। आँख का बन्द रखना।

इलाज—काला सुरमा १ तो०, चाकसू ६ माशे, जिसे इमली के पत्तों में पकाकर छिलका उतार कर साए में सुखाकर, कलमी शोरा ३ मा०, हाथी-दाँत का बुरादा ३ मा०, मिलाकर कागजी नीबू के अर्क के साथ खरल करके चने के बराबर गोलियाँ बनालो। १ गोली पानी में साफ पत्थर पर घिसकर दिन में दो बार डालो। धूप से बचाओ। फिटरी को बहुत बारीक पीसकर दो बार थोड़ी २ आँख में डालो।

(३) रतौंधी (रात को न दिखाई देना)
Night blindness

सबब—यह आसावी कमजोरी के बाइस होता है।

अलामत—दिन छिपने के वक्त से जानवर टोहकर चलने लगता है, पास का उसको नहीं दिखाई देता।

इलाज—मछली के पित्ते में शहद बराबर का मिलाकर ५ रोज़ तक आँख में डालो। या हुक्के की कीट पानी में पीसकर लगाओ। अरण्डी के तेल को चन्द बूँद डालो।

(४) मोतियाबिंद
Cataract
(आँख के अन्दर के पर्दे में पानी उतर आना)

सबब---अक्सर बुढ़ापे में या चोट-सदमे से पानी उतर आता है।

अलामत—जानवर अन्धा होजाता है। तिल फैल जाता है, जिसके अन्दर स्याही के बजाय सफेदी नज़र आने लगती है।

इलाज---जानवरों में यह लाइलाज मर्ज़ है, क्योंकि आपरेशन के बाद चश्मा नहीं लगाया जा सकता।

(५) आँखों के डेले बड़े होकर अन्धा होजाना

सबब—बीनाई के पट्ठे का फालेज होना।

अलामत—तिल बड़ा व डेला बड़ा होना, दिखाई न देना यह भी लाइलाज मर्ज़ है। आँख में कीड़ा सूत की तरह का पैदा होना।

इलाज—डाक्टर से आपरेशन कराओ।

——:o:——

भाग ७
कानों की बीमारियाँ
Diseases of ears

कान, जानवरों में सिर के दोनों तरफ़, सुनने के आले हैं। जब कान के अन्दर हवा पर्दे पर लगती है, तो सुनने की क्रिया

होती है। कान का अन्दरूनी भाग बहुत नाजुक होता है, जिसमें मैल होकर या किसी खुजली वगैरह के कीड़े या चोट के बाइस अक्सर सूजन होकर मवाद बहने लगता है, जिसपर हरी मक्खी बैठकर कीड़े के अण्डे दे देती है, और कीड़े पड़ जाते हैं।

(१) कान की सूजन

Otitis

सबब—मैल का होना, चोट-सदमा।

अलामत—जानवर कान को पैर से या खूँटे से बार-बार रगड़ता और फटफटाता है और उस तरफ गर्दन को नीचा किये रहता है।

इलाज—नीम के पत्ते व पोस्त का छिलका ½ छटाँक २ सेर पानी में पकाकर कम्बल के टुकड़ों से सेक करो। बाद में कान में भनोलन के पत्तों का अर्क निकालकर गुनगुना करके २ रत्ती अफीम मिलाकर डालो। दिन में दो बार सुबह-शाम डालो खुजलाना बन्द करो।

(२) कान से मवाद आना

Otorrhoea

सबब—कान के अन्दर मैल या चोट-सदमे से जख्म होकर मवाद आना।

अलामत—कान को हिलाना, खुजलाना व नीचा रखना।

इलाज—कान को लाल दवा के गर्म पानी से या नीम के पके पानी से धोकर जस्त व काफूर गोले के तेल में मिलाकर दिन में दो बार लगाओ।

भाग ८

दिमाग़ी बीमारियां

Diseases of brain

जिस्म में दो तरह के आसाब यानी बारीक-बारीक पट्ठे काम करते हैं। एक से तो जिस्म में हरकत होती है, और दूसरों से छूना मालूम होता है। जब हरकत करनेवाले आसाब बीमार होते हैं, तो फ़ालिज होता है। जब दूसरे बीमार हों, तो छूने की ताक़त जाती रहती है।

(१) सरसाम

Delirium

यह दिमाग़ की झिल्लियों के पर्दों में खून भर जाने से होता है, जिसका बाइस दिमाग़ पर चोट लगना, जहर खून में शामिल होकर दिमाग़ में जाना या छूतवाली बीमारियों का जहर दिमाग़ में चढ़ना है।

अलामत—यह मोटे ताजे जानवरों में, जब उनसे कड़ी धूप में सख्त काम लिया जावे, होता है। शुरू में जानवर बदहवास, आँखें सुर्ख, नब्ज सुस्त व आहिस्ता, नींद आना, बाद को बुखार होकर पागल-सा मालूम होने लगता है। फ़ालिज होकर मर जाता है।

इलाज—सबसे पहले जानवर की फस्द लो। सिर पर ठंडा पानी डालो. और बराबर डालते रहो। अन्दर एक जुलाब दो, जो जमालगोटे के बीजों का तेल १० बूँद तीन पाव अलसी के तेल में मिलाकर दो। मीठा तेल १० रत्ती दिन में दो बार दो।

(२) मिर्गी
Epilepsy

यह रोग बच्चों में कभी-कभी होता है, जो पेट के कीड़ों के सबब से होता है।

अलामत—जानवर एकाएक लरजता, लड़खड़ाकर गिर जाता है। गर्दन अकड़कर पीछे को घूम जाती है। बेहोशी होना मुँह से झाग आना, पैरों का अकड़ना।

इलाज—कीड़े मारने के लिये बायबिड़ंग १ तो० ३ दिन देकर बाद को तेल तारपीन १ तो० आध पाव से १ पाव तक अलसी के तेल में मिलाकर दो। बाद को बालछड़ १ तो०, जवाखार ६ मा०, गुड़ आधी छटाँक मिलाकर दिन में तीन बार खिलाओ। गुद्दी पर दाग़ दो।

(३) ख़फ्ता या बेहोशी
Appoplexy

यह मिर्गी से जुदा बीमारी है, जिसमें मोटे-ताजे जानवर गर्मी में बीमार होजाते हैं।

सबब—गर्मी से खून का दौरा दिमाग़ में ज्यादा होकर किसी किसी रग का फट जाना।

अलामत—जानवर का बेहोश होकर एकबारगी गिर पड़ना। पैरों से हरक़त चली जाना। नब्ज़ कमज़ोर और तेज़ी से चलना। आँखों की पुतली फैल जाना और दिखाई न देना। दम धीरे-धीरे और खर्राटे के साथ लेना।

इलाज—बेहोशी की हालत में फस्द—गर्दन की बड़ी वाली रग से, जिसमें खून झटके से चलता नज़र आता है, जिसे जुगलर बेन कहते हैं—लेना। होश आने पर जुलाब देना। और जानवर को ठण्डी जगह में आराम से रखना। अन्दर दूध देना।

(४) फ़ालिज
Paralysis

इसमें एक तरफ़ का धड़ या पिछले हिस्से (धड़) से हरक़त जाती रहती है।

सबब—कमर पर चोट-सदमा। सख्त गर्मी और सर्दी व बारिश में भीगना। बाज़ ज़हर खाना। या सूत की तरह के कीड़े रीढ़ की हड्डी के गूदे में पैदा होजाना।

इलाज—जानवर के नीचे खूब बिछाली लगाना और थोड़ी-थोड़ी देर बाद करवट बदलते रहना। दूध अण्डे पिलाओ। संखिया ४ रत्ती, कुचला ४ माशा, सोंठ ६ माशा, हीराकसीस ६ माशा, नमक लाहौरी आधी छटाँक आध सेर पानी में दो।

—:o:—

भाग ९

दिल व खून की बीमारियाँ
Diseases of Heart

दिल, मवेशी की बाईं तरफ़ दूसरी पसली से छठी पसली तक बाईं कुहनी के नीचे फेफड़े में, जिसका वज़न ४ से ५ पौंड होता है, रहता है, जो खून को सुकड़ने और फैलने से आगे को धकेलता रहता है। इसकी हालत का हाल, नाड़ी-परीक्षा से, जो

जानवरों में दुम के नीचे या जबड़े के नीचे के किनारे पर हाथ रखकर, मालूम की जाती है। इससे मर्ज के पहचानने में बड़ी मदद मिलती है। बैलों में दिल की बीमारियाँ दूसरे जानवरों की बनिस्बत कम होती हैं। दिल एक मिनट में ४० से ५० बार सुकड़ता और फैलता है, जिसके कारण नब्ज़ ४० से ५० बार तन्दुरुस्ती में चलती है।

(१) दिल की धड़कन

Palpilation of Heart

सबब---देर तक बदहज़मी रहना। कमज़ोरी खून और ज़हरों का खून में मिलना।

अलामत----नाड़ी छोटी, लगातार थोड़े कामसे जानवर थक जाता है और दम जल्द-जल्द लेता है। भूख की कमी। आँखें हरकत जल्द-जल्द करती हैं।

(२) दिल के अन्दर की झिल्ली की सूजन

Endocardites

सबब---खून का ज़हरीला होना। गठिया की बीमारी अर्से तक रहना।

अलामत---बुखार, कमज़ोरी दिल की, बेक़ायदा हरकत नब्ज़ खून के बहाव में आवाज़ आना। इस मर्ज की पहचान मुश्किल है। मौत में ख़तम होता है।

(३) दिल के बाहर की झिल्ली की सूजन

Perecarditis

(यह मवेशी में अक्सर होता है)

सबब—चोट-सदमा, कील या रुई का खाना, जो मेदे के

निकल कर दिल में चुभ जाती है। गर्मी-सर्दी का लगना। गठिया को बीमारी।

अलामत—मरीज सुस्त, कभी भूख, बदहज्मी, कभी-कभी पेट फूलना, छोटी साँस, जो पेट से लेता है, नब्ज बेक़ायदा और बीच-बीच में रुकना, नथने फैले हुये, खाना-जुगालना बन्द। अक्सर दर्द जाहिर करता है। दाहिनी करवट बैठता व लेटता है। गर्दन के हींगे और छाती पर वरम। बड़ी रगें खून से भर जाना। छाती को बाईं तरफ दबाने पर दर्द मानना। क़ब्ज़ लड़खड़ाकर चलना। अगर हमला थोड़ा है, तो आराम हो जाता है, वरना अक्सर मौत में खातमा होता है।

इलाज—छाती पर बाईं तरफ जमालगोटे का तेल १ हिस्सा कड़ुए तेल २ हिस्से में मिलाकर लगाओ। क़ब्ज हो, तो तेल का जुलाब दो। पैरों को मलकर गर्म पट्टी बाँधो। कलमीशोरा, काफ़ूर और देशी शराब दिन में दो बार अन्दर दो।

(४) रग की जलन

Phlebitis

सबब—चोट-सदमा, या जमे खून का टुकड़ा रग में जाकर रुक जाना जहरीला खून।

अलामत—रग का फूल जाना, उसमें जलन व गर्मी होना। बाद में फोड़ा बन जाना।

इलाज—अव्वल हालत में ठंड पहुँचाओ। जब पुराना हो जाके तो सेक करो। और आखिर में जमालगोटा पीसकर प्लास्टर लगाओ।

भाग १०

खून की बीमारियां

Diseases of blood

खून जिस्म मवेशी में १०० में २६ हिस्सा होता है । जो दिल के दबाव से रगों में १ सेकेन्ड में दौर करके और जिस्म की टूट-फूट की कमी को पूरा करके फिर दिल में वापस हो कर फेफड़ों में सफाई पाकर दिल में आता है । और जिन्दगी भर यही दौर रहता है ।

खून जिगर, तिल्ली व हड्डी के गूदे में पैदा हुआ करता है, जिसमें लाल व सफेद बारीक-बारीक दाने, चन्द किस्म के नमक और जमनेवाली चीज़ जिसे फाइब्रिन कहते हैं होते हैं। खून पर ही जिन्दगी का दारमदार है । इसीमें शामिल होकर गिज़ा का हज़मशुदा सत व पानी व आक्सीजन हवा हर हिस्से-जिस्म की परवरिश के लिए पहुँचती रहती है । जब यह गाढ़ा हो जाता है, तो प्यास लगती है । इसकी बीमारी मुटापा या ज्यादा मोटा होना है ।

(१) मुटापा (ज्यादा मोटा होना)

Obesity

सबब—अच्छी खूराक ज्यादा देना और आराम से रखना । और बहुत ही कम काम लेना । जब हाज़मा अच्छा हो, तो खून ज्यादा बनता है और जिस्म में कम खर्च होता है, तब चर्बी जिस्म में बढ़ जाती है ।

अलामत—ज्यादा मुटापा, थोड़े काम से दम चढ़ जाना।

इलाज—खुराक कम देना और काम ज्यादा लेना। चरने के लिये खुले मैदानों में छोड़ना। तेल वाली गिज़ा व दाने बन्द कर देना।

(२) कमज़ोरी

Anæmia

(इसमें खून पतला व कमज़ोर होता है)।

सबब—ख़राब हाज़मा, पुरानी बीमारियाँ रहना, ख़राब हवा, गिज़ा व पानी, खून बहना।

अलामत—कमजोरी, सुस्ती, भूख कम लगना, नाड़ी कमजोर व तेज चलना, दुबलापन, पैर ठंडे, गर्दन के नीचे खाल में पानी भर जाना, जूहों का पड़ जाना। किलनियों का ज्यादा होना।

इलाज—हर किस्म के सबब को दूर करके अच्छे खाना को थोड़ा-थोड़ा देना। हलका जुलाब देना। खाने में नमक रोजाना १ छटाँक दिन में दो। या एक बड़ा डला स्थान में चाटने के लिये रखदो। क़ब्ज न पड़ने दो। कभी-कभी साल्ट या तेल देते रहो। हीराकसीस ६ माशा, चिरायता १ तोला, नमक ½ छटाँक, आध सेर पानी में दो बार दो। चरने को छोड़ना।

(३) बुखार

Fever

(जिस्म की मामूली हरारत १०२ डिग्री से बढ़ जाना)

सबब—खराब गन्दी आबहवा, मच्छर चीचड़ी व मक्खी

के काटने से छूत पहुंचना, ज्यादा खूराक, क़ब्ज़, पसीना बन्द होना, ज्यादा सर्दी-गर्मी का लगना, ज़हर का खून में मिलना ।

अलामत—जिस्म काँपना, बाल खड़े होना, नाड़ी तेज चलना, दम बार-बार जल्द लेना, जो गर्म होता है। दूध में कमी, सुस्ती। मुँह खुश्क, क़ब्ज़, पेशाब गाढ़ा व कम, खाना-जुगालना बन्द ।

इलाज—जानवर को साफ़, हवादार अस्तबल में हवा के झोंके से बचाकर मौसम के लिहाज से कपड़ा उढ़ाकर रक्खो। स्थान में १ बाल्टी ताज़ा पानी, जिसमें नौशादर व कलमीशोरा १ तो०, व साल्ट १ छटाँक पड़ा हो, पीने के लिए रक्खो। दवा के तौर पर काफूर ३ मा०, कलमीशोरा १ तो०, देशी शराब १ छटाँक, आध सेर पानी में दिन में दो बार दो। बेहतर है कि यह दवा, घी आध सेर, काली मिर्च आधी छटाँक इसकी पहली खूराक एक बार में देने के बाद, अगले दिन से दो। अगर बुखार एक दिन छोड़कर आता हो—जो रोज़ाना जानवर की गुदा में थरमामीटर लगाकर देखा जा सकता है— तो गोमा घास के फूल ½ छटाँक, काली मिर्च १ तो०, आध सेर पानी में पीस कर एक बार दो।

(४) गठिया-बाय

Rhumatism

इसमें खून में जमनेवाला तुर्श मादा पैदा होकर रग, पट्ठों और जोड़ों में जाकर सूजन हो जाती है।

सबब—एकदम गर्मी में तर ठंड का लगना, जैसे बारिश में भीगना। ज्यादा गिज़ा और कम काम। बूढ़े जानवरों को ज्यादा होता है।

अलामत—दो तरह की होती है। पहली तेज़वाली, जिसमें बुखार १०५ दर्जे तेजी से चढ़ता है। जोड़ों में सख्त दर्द, जो एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ बदलता रहता है। जानवर लँगड़ाकर चलता है, दबाने से दर्द मानता है। क़ब्ज़, खाने-जुगालने में कमी होना। जब जिस्म के माँस में वह माद्दा जाता है, तो दर्द बहुत होता है। पसीना, पेशाब कम होता है।

इलाज—जानवर को शुरू में साल्ट नमक २ पौंड, सोंठ १ छटाँक, गर्म पानी २ सेर में दो। बाद को अगले दिन से शोरनजान १ तो०, कड़ुई काली जीरी २ तो०, कलमीशोरा १ तो०, जवाखार १ तो०, सोडा खाने का २ तो०, गर्म पानी ३ सेर में दो बार दो। चने का दाना न दो। बिछाली काफ़ी लगाओ वरमवाली जगहों पर सेक करके तारपीन का तेल १ छ० काफ़ूर २ तो०, कड़ुआ तेल १ पाव में मिलाकर दिन में दो चार मलो।

——:o:——

भाग ११

जिल्द-मर्ज

Diseases of skin

जिल्द तन्दुरुस्ती की हालत में बदन के नाक़िस माद्दों को पसीने के ज़रिये बाहर निकालकर और हवा अन्दर करके खून साफ़ करने का काम देता है। जब सफ़ाई व मालिश नहीं की जाती, तो तरह तरह की बीमारियों में मुब्तिला हो जाती है। जिनमें तरह-तरह के कीड़े पैदा होकर खून चूसकर जानवर में कमज़ोरी पैदा कर देते हैं। तन्दुरुस्ती में खाल चिकनी,

चमकदार, ढीली होती है। जो मर्ज होने पर खुरदरी और बदन से सट जाती है।

(१) छाजन, चेपा या दाद
Eczima & Ringworm

इस मर्ज में जानवर की जिल्द में बारीक-बारीक दाने निकलते हैं। जिनसे पानी बहता है।

सबब—खराब गिज़ा व पानी, जिससे खून गन्दा हो जाता है। जानवर का गन्दा रखना। मालिश व सफ़ाई न करना। बच्चों में, जब दूध न मिलने से कमज़ोर हों, यह बीमारी होती है।

अलामत—चेहरा, कान, गर्दन, कमर की जिल्द पर बाल गिरकर सख्त खुरंड बन जाना। जानवर कमजोर होता जाता है।

इलाज—खुरण्डों को गर्म पानी और साबुन से धोकर फिनायल १ हिस्सा अरण्डी के तेल या नीम के तेल में मिलाकर एक बार दिन में लगाओ। जस्त फूंका हुआ १ तो०, काफूर ३ मा०, नारियल के १ छटांक तेल में मिलाकर लगाओ।

(१) मस्से, खाल में सख़्त उभारों का पैदा होजाना
Warts

सबब—खून में ऐसे मादे का पैदा होजाना।

अलामत—उभारों का सख्त होना, जिनमें मवाद नहीं पड़ता ये अक्सर चेहरे, होंठ, नथनों वगैरह पर होते हैं।

इलाज—जब छोटे हों, कैंची से काटकर दाग दो या चूना लगा दो।

(३) रसौलियां

Tumours

खाल के नीचे गेंद-सी पैदा होकर बढ़ती चली जाती हैं, जिनमें दर्द नहीं होता।

इलाज—शिगाफ देकर निकाल दो। फिर ज़ख्म में टाँके बाल से लगाकर ज़ख्म का इलाज करो।

(४) आँत का जिल्द में उतर जाना

Hernia

सबब—चोट-सदमा। बच्चों में नाफ़ में सूराख से उतरना।

अलामत—खाल के नीचे मुलायम उभार होना, जिसको अन्दर को दबाया जावे, तो दब जाता है और फिर उसी तरह निकल आता है। जब आँत में चारा अड़ जावे, तो खतरनाक होजाता है।

इलाज—शुरू हालत में अन्दर करके रुई रखकर अर्से तक दबाकर पट्टी बाँधो। वरना बाद को आपरेशन करा दो।

(५) जिल्द में वरम का होना

oedima

यह दबाने से दब जाता है और गर्म नहीं होता।

सबब—कमज़ोरी, खराब गिज़ा, खून का पतला होना, कमजोर करने वाले मर्ज़, दिल की कमजोरी, मेहनती जानवर को खड़ा रखना, क़ब्ज़। कभी-कभी चमड़े की खराश से होता है।

इलाज—अव्वल एक हल्का जुलाब दो, जो साल्ट आध सेर नमक १ पाव, सोंठ ½ छटाँक, गर्म पानी में मिलाकर दो। बाद को हीराकसीस ४ माशे, संखिया सफेद २ रत्ती, चिरायता

१ तोला, सोंठ १ तोला, नमक लाहौरी २ तोला बेसन में मिलाकर दो। गिज़ा धीरे-धीरे अच्छी बढ़ाओ।

(६) जिल्द के नीचे हवा भर जाना

Emphysema

सबब----खून की खराबी। खाल में छेद होजाना, जिससे बाहर की हवा खाल में चली जाती है।

अलामत----जब खाल को दबाया जावे, तो फूली जगह में चिरचिराहट की आवाज़ सुनाई देती है। बुखार नहीं होता। परन्तु जब लंगड़ी की बीमारी हो, जो छूतवाले कीड़ों के बाइस होती है, तो सख्त बुखार होता है।

इलाज—वरम की जगह में जगह-जगह चाकू की नोक से छोटे चीरे दो, और उन चीरों में से हवा को दाब-दाबकर बाहर निकालो। बाद को उन पर तेल नीबू व काफूर मिलाकर मालिश करो और ज़ख्मों पर लगा दो।

(७) जिस्म में सूखी खुजली व बालों का गिरना

Mange

सबब—जिल्द का मैला रखना। खराब खूराक व चारा-पानी। अन्धेरे स्थान में रखना।

अलामत----जानवर बार-बार जिस्म को खुजलाता है। बाल गिरते हैं।

इलाज----साफ रखना। जिल्द में १ हिस्सा मिट्टी का तेल ५ हिस्से दूध में मिलाकर तीसरे दिन मालिश करो। गिज़ा व

पानी अच्छा, ताज़ा दो। गन्धक १ तोला दाने में मिलाकर रोज़ाना दो।

(८) साँप, बिच्छू, भिड़, मक्खियों का काटना

Snake or Scorpion bite

अक्सर चरते वक्त साँप ज़बान में काटता है। इलाज साँप काटने का—काटी जगह से ऊपर रस्सी का बंध दो। उस जगह को चीर कर लाल दवा भर दो। बिच्छू व बर के काटे की जगह चूना, नौसादर बराबर पानी में मिलाकर लगाओ या सिरका, फिटकरी, नमक का पानी मिलाकर लगाओ।

(९) खुजली, जो कीड़ों के बाइस हो

सबब—जिल्द का गन्दा रहना। छूत वाले जानवरों से मिलना।

अलामत—यह बीमारी चेहरे, गर्दन, कन्धों और दुम के नीचे होती है, जिनको जानवर बार-बार खुजलाता है, और जख्म कर लेता है। यह बीमारी जानवरों से आदमियों को भी हो सकती है।

इलाज—उस जगह को गर्म पानी व साबुन से धोकर दारचिकना ५ रत्ती १० छटाँक पानी में मिलाकर लगाओ। सूख जाने पर गन्धक १ छटाँक, जवाखार २ तोला, शीशम की लकड़ी का तेल २ तोला, बकरे की चर्बी १ पाव या कड़ुए तेल या नीम के तेल १ पाव में मिलाकर तीसरे दिन लगाओ। खाने में गन्धक १ तोला, भुना हुआ सुहागा १ तोला मिलाकर दो। मिट्टी का तेल १ हिस्सा ५ हिस्से दूध में मिलाकर लगाना फायदेमन्द है।

(१०) मनया फूटना

Filaria hemorrhagica

सबब—एक कीड़ा जिल्द के अन्दर से खाल में छेद कर देता है, जिससे खून गर्दन, कंधों पर खास करके बहता है। परंतु कोई तकलीफ नहीं होती।

इलाज—जानवर को साल्ट १ सेर, सोंठ १ छटाँक, पानी २ सेर में दो। बाद को १ पाव प्याज दिन में तीन बार करके एक महीना तक दो। संखिया ४ रत्ती गेहूँ के आटे में मिलाकर १ हफ्ता दो। बाद को गन्धक आँवला सार १ तो०, सुरमा ६ मा० एक हफ्ते तक दो। फिर संखिया १ हफ्ता दो। जख्म धोकर चूना-हल्दी मिलाकर लगाओ।

(११) जूएँ

Lice

अक्सर गन्दे जानवरों में जाड़े के मौसम में पड़ जाती हैं। बालों पर अण्डे दे देती हैं।

इलाज----बड़े बालों को काट कर तम्बाकू १ छटांक, शरीफे की पत्ती २ छटांक २ सेर पानी में पकाकर रोजाना नहलाओ। या दारचिकना ५ रत्ती, १० छटांक पानी में मिलाकर मलो।

(१२) आग से जल जाना

Burnt

सर्दी के दिनों में अक्सर झूलों में आग लग जाती है।

इलाज --चूने का निथरा हुआ पानी, अलसी का तेल या गोले का तेल, जिसमें थोड़ा काफूर भी मिला लिया हो, बराबर

का लेकर बोतल में हिलाकर दिन में दो बार लगाओ। मक्खियों से बचाने को चादर डालो और चाटने से बचाओ।

(१३) कीड़ों के दुम्बल

Warbles

ये मौसम बहार में जानवरों की पीठ पर निकलते हैं।

सबब—एक मक्खी का अण्डे देना, जिससे जिल्द के नीचे कीड़े बनकर दुम्बल बनता है।

अलामत—जिल्द के नीचे फोड़े-जैसे उभार होते हैं, जिनमें एक सूराख होता है, जिससे कीड़ा साँस लेता है। जब पूरा हो जाता है, तो उससे बाहर निकल जाता है।

इलाज—मौसम बहार के शुरू ही से जानवर के बदन पर फिनायल १ हिस्सा, तेल कडुआ ४ हिस्से में कमर, गर्दन वगैरह पर चुपड़ रखना चाहिये। जो दुम्बल पक गये हों, उनसे भींचकर कीड़ा निकाल दो, और फिनायल मिलाकर तेल लगादो।

(१४) सूजन

Inflammation

यह कुदरती तौर पर जिस्म से नुकसान करनेवाली चीज़ को दूर करने के लिये पैदा होती है। यह हर हिस्से-जिस्म में हो सकती है। उसकी जगह के लिहाज से तरह-तरह के नाम बीमारियों के हो जाते हैं। जब फेफड़ों में होती है, तो निमोनिया, जोड़ों में होती है तो गठिया, जिल्द में होती है, तो फुन्सी व फोड़े कहलाती है। जहाँ यह होती है, वहाँ पर खून का बहाव ज्यादः होता है और खून के सफेद दाने, जो जिस्म में पुलिस

और फौज का काम देते हैं, उस जगह पर जाकर दुश्मन से, जो दाखिल होता है, लड़ते हैं और उनको खा जाते हैं। परन्तु जब दुश्मन जबरदस्त होता है. तो उनको मार डालता है और उस जगह पर मवाद बन जाता है, जो फुन्सी और फोड़े की शकल जिल्द में पैदा करता है।

सबब---चोट, सदमा, ज्यादा गर्मी व सर्दी, कमजोरी।

अलामत—वह जगह गर्म, दर्द, सुर्ख और काम करने से लाचार होती है। वहाँ वरम होता है।

सबब —यह दो सूरतों में किया जाता है। अव्वल जब कि हमला शुरू में सख्त होता है, तो ठंडा पानी डालना चाहिये और ठंडी गद्दी लगानी चाहिये। जब एक हफ्ते में फायदा न हो, तो दूसरे हफ्ते सेक करके हल्दी २ तो०, साबुन १ तो०, गर्म पानी में मिलाकर लगाओ, और तेलों की मालिश करनी चाहिये। अगर फिर भी ३ हफ्ते तक फ़ायदा न हो, तो फिर १ हिस्सा जमालगोटे का तेल, ४ हिस्से कड़ुए तेल में मिलाकर प्लास्टर लगाओ। जब खाल उतर जावे, तो नमक और मक्खन लगाओ जानवर को आराम से रक्खो। खाने में चोकर, अलसी, दूध, हरी दूब-घास दो। चने न दो। अगर बुखार हो, तो पानी में शोरा, नौशादर तोला-तोला, साल्ट १ छटाँक दो और १ मा० काफूर देशी शराब १ छ०, व शोरा १ तो०, आध सेर पानी में दिन में दो बार दो।

(१५) फोड़े फुन्सियाँ

Boils

जब तक उनकी चोटी पर मवाद न हो, गन्देबिरोजे का फोया लगा दो। अगर दर्द ज्यादा हो, तो पुलटिस अलसी,

प्याज या आटे में सुहागा डालकर दिन में ३ या ४ बार लगाओ। जब मवाद पड़ जावे, तो चाकू से चीरा ऐसा दो, ताकि मवाद खूब बहे और रुकने न पावे, जिसमें फ़िनायल रुई में लगाकर भर दो। बाद को फ़िनायल १ हिस्सा, तेल ४ हिस्से में मिलाकर लगाओ। अगर माँस बढ़ा हो, तो तूतिया लगाओ और फिर फ़िनायल व तेल लगाओ। परन्तु ज़ख्म को रोजाना नीम के पत्तों के पके पानी से धोकर साफ़ करो, तब दवा लगाओ। ज़ख्म भरने के लिए मुर्दासंख तूतिया, राल, नीम की पत्ती बराबर २ गाय के घी में पकाकर बारीक पीसकर कपड़े में लगाकर मलो।

(१६) हड्डी पर चोट, टूटना या जोड़ उतरना
Fracture & Dislocation

हड्डी जिस्म में ढाँचे का काम देती है और जिस्म को सहारे रखती है। उन पर मांस जुटा रहता है। जब वह सुकड़ता व फैलता है, तो हड्डियों में हरकत पैदा होती है और जानवर चलता-फिरता है। जोड़ों में कुदरत ने तेल भी पैदा किया है, ताकि हड्डी सूखी होकर घिस न जावे। गठिया में यह तेल जम जाता है जिस वजह से जानवर जोड़ों को नहीं हिला सकता और दर्द मानता है।

सबब—चोट-सदमा, पैर का फिसल जाना।

अलामत—हड्डी पर चोट लगने से ज्यादा दर्द होता है। जानवर लँगड़ाता है और उस हिस्से को वज़न पड़ने से बचाकर दूसरे तन्दुरुस्त हिस्से को आगे बढ़ाकर उस पर वज़न डालता है, जिससे लँगड़ापन ज़ाहिर होता है। वह जगह सुर्ख, गर्म और दर्दनाक होती है। अगर हड्डी टूट जावे, तो हिलाने पर खट

खट की आवाज़ सुनाई देती है अगर जोड़ उतर जावे, तो वह हिस्सा दूसरे हिस्से के मुक़ाबले में बदनुमा, बढ़ा हुआ और काम के नाक़ाबिल होता है।

इलाज—हड्डी पर चोट का इलाज अव्वल हालत में ठन्डा पानी डालकर ठन्डी बर्फ की पट्टी लगाओ, जब तक सूजन न जाती रहे। जाड़े के दिनों में बाद को धतूरे के पत्तों को पानी में पकाकर कम्बल के टुकड़ों को निचोड़ कर सेक भी कर सकते हैं। बाद को गर्म तेल की मालिश करके रुई रखकर पट्टी लगा देनी चाहिये। जब हड्डी टूट जावे, तो दोनों सिरों को मिला कर अलसी का तेल मलकर रुई रखकर बाँस की खपचियाँ रख कर सुतली या रस्सी से मज़बूत ६ हफ्ते तक बँधा रक्खो। लेकिन जब खाल फटकर हड्डी बाहर निकल आवे, तो उस हिस्से को अच्छी तरह धोकर फिनायल लगाकर पट्टी ऐसी बाँधो कि जख्म वाला हिस्सा खुला रहे, जिसको धोकर रोज़ाना दवा फ़िनायल वग़ैरह लगती रहे, वरना सड़ाँद पैदा होजावेगी। हड्डी का जोड़ उतर जावे, तो उसको खींचकर बैठा दो और वहाँ पर राई का प्लास्टर लगा दो।

(१७) पट्ठों में मोच आजाना
Sprain

सबब—कूदना, नीचे-ख़ाली में पैर पड़ जाना, दूसरे जानवरों से लड़ना वग़ैरह है।

अलामत—जानवर लँगड़ा होता है। काम नहीं कर सकता। टटोलने पर उस जगह दर्द मानता है।

इलाज—शुरू हालत में ठण्डा पानी डालो। ठण्डी पट्टी लगाओ। १ हफ्ते बाद से सेक करो। और काफूर १ तोला, अण्डे २ अदद, तारपीन का तेल १ छटाँक, १ पाव कडुए तेल में मिलाकर मलो।

(१८) खुरों का तलस जाना या उनमें मवाद पड़ जाना

Tender foot

सबब—बिला नालों के पक्की सड़कों पर ज्यादा मंज़िल कराना। कील वगैरह का चुभ जाना।

अलामत—जानवर बहुत लँगड़ा करके चलता है। अगर खुर को उठाकर तलवा दबाया जावे, तो वह पोला मालूम होता है, और दर्द मानता है। कील वगैरह अगर घुसी हो, तो वह भी देखी जा सकती है। अगर फौरन् न निकाली जावे, तो सुम-भर में मवाद बन जाता है, जो अक्सर ऊपर फूट निकलता है, जहाँ खाल और सुम मिला हुआ होता है।

इलाज—चोकर को पानी में गर्म करके और नमक डालकर टाट में रखकर दिन में ४ बार पुलटिस के तौर पर बाद तारपीन का तेल चुपड़ के लगाना चाहिये। कील को निकालकर और सुम को छीलकर मवाद निकलने का रास्ता खुला बनाकर तारपीन का तेल लगाकर दिन में कई बार पुलटिस बाँधे। जानवर को आराम से रक्खो।

(१६) सींगों में कीड़ा लगकर झुक जाना या टूट जाना
Fracture of horns

सबब—सींग में जब अन्दर हड्डी में कीड़ा लग जाता है, तो वह झुक जाती है. और दर्द करता है। लड़ने से या किसी दूसरी चोट से सींग टूट भी जाती है।

अलामत—सींग का झुक जाना या टूट जाना।

इलाज—झुकी हुई सींग को या टूटी हुई सींग को उसके नीचे से आरी से काटकर अलहदा करदो। खून रोकने के लिये तूतिया और फिटकरी बराबर लेकर कटे हिस्से पर रखकर रुई का दबाव देकर खींचकर दूसरी सींग से मिलाकर पट्टी बाँधो। रोज़ाना नीम के पानी से धोकर फिनायल लगाकर पट्टी बाँधो, जो साफ़ हो। अगर माँस बढ़ जावे, तो तूतिया लगाकर पट्टी बाँध दो। फिर फिनायल लगाकर पट्टी बाँधो। सींग को रगड़ने से बचाओ। झुकी सींग वाले को ४ रत्ती संखिया आटे में १ हफ्ते छोड़कर बतौर टानिक के दो। लगाने का नुस्खा—चना २ छटाँक, हड्डी फुकी हुई १ छटाँक, तूतिया १ तोला, फुकी फिटकरी १ तोला, काफूर १ तोला, कसीस १ तोला, तेल तारपीन १ तोला बढ़ हुये माँस पर छिड़ककर रोज़ाना पट्टी बाँधो।

—:o:—

भाग १२

ज़हर दिया जाना

Poisons

मवेशियों की खालें बहुत काम आती हैं, जिनका ठेका चमारों को दिया जाता है जब जानवर कम मरते हैं और ठेकेदार का नुक़सान होता है, तो वे अक्सर जानवरों को ज़हर संखिया देकर मारते हैं। खासकर उस समय, जब छेरे की बीमारी भी हो, ताकि मालिक जानवर का मर्ज़ से ही मरा हुआ समझे।

(१) संखिये का ज़हर देना

Arsenic Poison

ज़हरों में आम ज़हर जो दिया जाता है, सफेद संखिया है, जो बाज़ारों में मिल जाता है। उसे आटे में मिलाकर जानवर को खिलाया जाता है, जो दो माशे से ऊपर ज़हर होजाता है।

अलामत—जानवर—जिसको संखिया दिया गया हो, चन्द घण्टों के बाद बेचैन, पेट में दर्द, खून के दस्त, ज्यादा प्यास, आँखें गढ़े में पड़ जाना और तड़प-तड़पकर—मर जाता है।

इलाज—जानवर को बार-बार माँड़-घी मिलाकर या दूध अण्डे मिलाकर दो। दवा के तौर पर लोहे का जङ्ग १ तोला पीसकर और चूने व नौसादर १ तोला पानी में मिलाकर दो-तीन बार दो। दर्द कम करने को अफीम ६ माशे माँड़ में मिलाकर दो। छेरे की बीमारी से इसमें फ़र्क करना चाहिये। हड्डी के कोयले २ छटाँक आध सेर पानी में घोलकर पिलाओ। ईसफ़गोल एक

छटाँक, गाय का दही १ सेर, गुलाब अर्क १ पाव, सब मिलाकर दो। बिहीदाने का लुबाब दो।

(२) पारे का ज़हर

Mercury Poison

हरताल या दारचिकना के ज़हर पारे के सख्त ज़हर हैं।

अलामत—जानवर का मुँह आता है। पेट में दर्द, दस्तों का लगना, सर्द पसीना आना, बेहोश होकर मर जाता है। ज़हर की खूराक ६ माशे के ऊपर है। जब लाश चीरी जावे, तो दारचिकने के ज़हर में मेदे के अन्दर एक नीलगूँ रङ्ग का अस्तर भी निकलता है, जो संखिये के ज़हर में नहीं होता, बल्कि उसमें ज़ख्मों में छोटे-छोटे सफेद टुकड़े संखिये के मिलते हैं।

इलाज—दूध, अण्डे की सफ़ेदी या [illegible] माँड में डालकर पिलाओ। जवाखार या सज्जी १ पाव [illegible] या खाने का सोडा २ छटाँक पानी में भिगोकर दो। दर्द के लिये अ[illegible]ीन दो।

(३) कनेर का ज़हर

Kanair Poison

कनेर के पौदे, ज्यादती से बागों में फूलों की गरज़ से, लगाये जाते हैं। जानवर भूख में हरी-हरी पत्ती और फूल खा जाते हैं।

अलामत—जानवर खाना-जुगालना बन्द कर देता है। पेट में अफारा और दर्द होजाता है। गोबर पतला, काँपना, नाड़ी कमजोर और गर्दन में झटके आते हैं।

इलाज—अलसी का तेल १ सेर बतौर जुलाब के दो। दूध, अण्डे व चावलों का माँड़ दो। शराब अलसी की चाय में मिलाकर दो।

(४) सफेद घुगची का ज़हर

Acorus Poisoning

सफेद चौटली के गूदे की गोली बनाकर जानवर के गोबर की जगह ज़ख्म करके रख देते हैं या खिला देते हैं यह ज़हर भी संखिये की तरह खराशदार है, जो चमार लोग देते हैं। अलामत और इलाज संखिये के ज़हर की तरह पर है।

(५) भङ्ग व धतूरे का ज़हर

Ca abus Indica Poison

इसके पेड़ और पौदे बागों में अक्सर होते हैं, जिनके फल व बीज ज़हरीले होते हैं। जिनको जानवर भूख में खा लेते हैं। या ज़हर के तौर पर दिये जाते हैं।

अलामत—जानवर बेहोश होकर लड़खड़ाकर चलने लगता है और गिरकर मर जाता है। पुतलियाँ फैल जाती हैं।

इलाज—सिर और गर्दन पर पानी के छींटे देना। घी पिलाना। शराब, अण्डे व दूध देना। दम बन्द होता हो, तो अगले पैरों को फैलाकर फिर छाती पर बार-बार दबाना। दो छटाँक हड्डी का कोयला आध सेर पानी में मिलाकर दो।

(६) कुचले का ज़हर

Nuxvomica Poison

कुचले की टिकियों को पीसकर दिया जाता है या उसके जौहर को। यह मवेशियों में कम, लेकिन कुत्तों में सख्त ज़हर होता है।

अलामत—खाने के चन्द मिनट बाद जानवर के पैरों में झटके आकर अकड़ने लगते हैं। गर्दन ऐंठ जाती है। दम जल्दी-जल्दी लेने लगता है और बेहोश होकर मर जाता है।

इलाज—एक बड़ी मिक़दार अरण्डी के तेल की १ सेर बतौर जुलाब के दो, जिसमें अफीम भी १ तोला मिला दो। १ छटाँक माजूफल का काढ़ा या २ छटाँक तम्बाकू का काढ़ा, व ½ तोला भङ्ग-चरस दे सकते हैं।

(७) अफीम का ज़हर

Opium Poison

अफीम क़ीमती होने की वजह से कम—बतौर ज़हर के दी जाती है। १ तोला से ऊपर ज़हर होती है।

अलामत—जानवर बेहोश होता है। आँख की पुतलियाँ सुकड़ी होना, मुँह से अफीम की बू आना।

इलाज—कोयला पीसकर दो। ब्राँडी २ छटाँक दो। लाल दवा १ तोला पानी में मिलाकर दो।

(८) जमालगोटे का ज़हर

Aroton Poison

अक्सर दवा में जब ज्यादा दिया जावे, तब यह होता है।

अलामत—दस्तों की ज्यादती।

इलाज—चार सेर नींबू का अर्क पिलाओ। बाद को अरण्डी के तेल में माजूफल २ तोला अफीम ६ माशे, चावलों के माँड में मिलाकर दो।

(९) हीराकसीस व तूतिया का ज़हर

तूतिये से पुती दीवार चाटने व ताँबे के बरतनों मे पड़ा खाना खाने से होता है।

इलाज—साबुन, अंडे, दूध, मीठा तेल, नमक और काँजी दो।

(१०) मीठा तेलिया, तम्बाकू का ज़हर

Aconite and Tobacco Poisons

जब ज्यादा मिक़दार में तम्बाकू से हलाया जावे, तो अक्सर बच्चोंमें ज़हर होजाता है।

इलाज—तेल का जुलाब दो। कुवत्ता व शराब दो। अण्डे-दूध दो।

(११) तेज़ाबों का ज़हर

Acid Poison

अक्सर जानवर ग़लती से पी जाते हैं, जिससे मुँह व मेदे में ज़ख्म होजाते हैं।

इलाज—चूने का पानी, दूध, अंडे, खड़िया मिट्टी, साबुन, मङ्ग, अफोम दो।

(१२) चूने वग़ैरह खारों से ज़ख्म होना

Lime Poison

ये ज़ख्म चूना खाने से होते हैं।

इलाज—जामुन का तेजाब पानी में मिलाकर, नींबू का अर्क, दूध, तेल, काँजो बार-बार दो।

(१३) हरी चरी से ज़हर
Pica Poison

बरसात में जब पानी पड़ना बन्द होजावे, तो हरी चरी में, जब छोटी होती है, एक क़िस्म का ज़हर पैदा होजाता है। उस चरी के पौदे को खाकर जानवर को ज़हर चढ़ जाता है।

अलामत—जानवर लड़खड़ाने लगता है। पेट फूल जाता है। दम जल्द-जल्द लेने लगता है। और पैर पीट-पीटकर मर जाता है।

इलाज—जानवर को फौरन् किसी तालाब में डाल दो। या उसके तमाम जिस्म में कीचड़ मलो। अन्दर दूध १ सेर, घी आध सेर, तेल तारपीन १ छटाँक गुनगुना करके दो। काली मिर्च १ तोला, हींग १ तोला, सोंठ १ तोला, काला नमक २ तोला, अजवायन १ तोला, चिरायता १ तोला, आध सेर पानी में दो बार दो।

——:o:——

भाग १३
जच्चाखाने की बीमारियाँ
Diseases of Parturation

हामला होने, बच्चा जनने, उसके बाद की खराबियों, हिफाजत जच्चा बच्चे की और उस वक्त की बीमारियों का मुख्तसर यानी संक्षेप में बयान किया जाता है, ताकि समय पड़ने पर काम दे।

मादीन मवेशी २ से २½ साल की उम्र में गरमाती है। यानी उनको नर साँड की ज़रूरत पड़ती है। २½ से तीन साल की

उम्र ठीक होती है। तब किसी अच्छे नस्लदार साँड से उसे मिलाना चाहिये। गर्मी का यह वक्त ४ घंटे से २४ घंटे रहता है। अगर साँड न मिलेगा, तो फिर दो-तीन महीने बाद तक इंतजार करना पड़ेगा, जब नर से मिलाया जावे, तो वह तारीख ज़रूर नोट कर लेनी चाहिये, क्योंकि गाय २८० दिनमें बच्चा देती है। भैंस १० महीने में।

गाभन जानवर को अच्छी खूराक—दाने वगैरह की देनी चाहिये और थोड़ी मेहनत के लिये चरागाह में भी भेजना चाहिये। यह गलत खयाल है कि दूधवाले जानवर को अच्छी खूराक दी जावे और जब दूध देना बन्द कर दे तो अच्छी खूराक बन्द करदी जावे। गाभन की हालत में उसको अलावा अपने जिस्म की परवरिश करने के, बच्चे की भी परवरिश करनी होती है, जिसके लिये खास तौर पर अच्छी खिलाई की जरूरत पड़ती है। वरना बच्चा कमजोर होगा और वह जानवर दूध भी कम देगा। खली की कमी गाभनवाली गाय की खूराक में कर देनी चाहिये।

दूध देने वाली गाय की मामूली खूराक—१ सेर चना दला हुआ, १ सेर चोकर, १ सेर खली, १ सेर बिनौले—उबले हुये या गर्मियों में भीगे हुये, मय १ छटाँक नमक रोज़ाना तीन हिस्सों में तक़सीम करके भूसे या चरी की सानी में भिगोकर और खूब मिलाकर दी जावे। चाटने को सेंधा नमक का बड़ा सा डला स्थान में रक्खो।

(१) बाँझपन—(हमल न ठहरना)

यह बीमारी माली तौर पर बड़ी नुक़सान करनेवाली है।

सबब—मादीन के बच्चा देने के आज़ाओं के—जैसे उसके

अंडकोश, जो गुर्दों के पास कमर या कमर के नीचे दोनों तरफ़ लगे होते हैं—गरमाने के समय रज पककर बच्चेदानी में गिरता है और वहाँ नर के वीर्य से मिलकर हमल बनता है। जब अंडकोश में बीमारी हो या बच्चेदानी में सूजन हो या इसका मुँह चर्बी से बन्द हो, जो मोटे-ताजे जानवरों में होता है, तो मादीन जानवर गाभन नहीं रहता।

इलाज—अक्सर बूढ़ी गायों में और अंडकोश की बीमारी वाली कलोरों में यह बीमारी लाइलाज होती है। बाक़ी शिकायतों को, जैसे बच्चेदानी की सूजन या उसके मुँह पर चर्बी आना या बन्द होजाना, डाक्टर से जो हर तहसीलों में शफ़ाखानों में रहते हैं, रफ़ा कराना चाहिये। मोटी गाय की खूराक कम करो।

(२) हामला की पहचान

Diagnosis for Pregnancy

अव्वल उसके मिज़ाज में फ़र्क़ आता है, यानी वह उछलना-कूदना छोड़कर सीधी होजाती है। साँड को पास नहीं आने देती। कुछ मोटी नज़र आती हैं। ताक़त कम, पेट व कोंक बढ़ता नज़र आने लगता है। पेशाब बदल जाता है और पेशाब करने के मुक़ाम की झिल्ली सुर्खी माइल व मोटी होजाती है और उससे लसेदार रतूबत निकलने लगती है।

हामला होने के काफ़ी इतमीनान के लिये हाथ को खूब तेल लगाकर गोबर के रास्ते से दाखिल करो और कुहनी तक अन्दर ले जाकर हथेली को नीचे के रुख ले जाकर ज़रा दबाकर दाहनी करवट में व नीचे देखो। हाथ में थोड़े दिनों के बच्चे का गोला-सा और ज्यादा दिनों के बच्चे का सिर, पैर वगैरह मालूम होंगे।

ऐसा करने में कोई अन्देशा जच्चा या बच्चे को नहीं है। जानवर की पिछली टाँगें मज़बूत बाँधकर एहतियात से इम्तिहान की ज़रूरत है। अगर न मालूम हो, तो जानवर ख़ाली है।

(३) अच्छी हालत में बच्चा जनना

Normal Parturiation

बच्चा देते वक़्त, मादीन के पुट्ठे और कोखें बच्चे के बोझ से नीचे झुक जाते हैं और पेशाब की जगह देखने में पहले से फूली हुई, जिससे सफेद रङ्ग का इख़राज होता है, नज़र आती है, जानवर बेचैन होता है और बच्चा देने को किसी अकेली जगह की तलाश करता है।

दूसरे दर्जे में जानवर दर्द से ज्यादा बेचैन नज़र आता है। फिर गर्भ आ जाती है। गोबर व पेशाब बार-बार करता है। पेशाबगाह से पानी की एक थैली निकलकर फूट जाती है।

यह तीसरा दर्जा होता है, जबकि जानवर के दर्द बढ़ जाता है और वह पेट की दीवार को तानकर व पिछले पैरों को झुकाकर कमर को कमानदार करके खिंचती हुई, बच्चे को, जिसका मुँह सामने और ऊपर को अगली टाँगों के खुरों पर रक्खा हुआ होता है, निकाल देती है। उसके बाद चन्द घंटों के जेर, जिसमें बच्चा लिपटा हुआ रहता है, गिरा देती है।

अगर १२ घंटे तक न गिराए, तो लाल पानी से हाथ साफ़ करके और तेल लगाकर आहिस्ता-आहिस्ता खींचकर निकाल देना चाहिये और लाल पानी से बच्चेदानी को दो बार दिन में धो देना चाहिये।

बच्चा देने से १ हफ्ते बाद तक गर्म पानी, चोकर और दूध-घास खाने को देनी चाहिये। गाय को गर्म पानी से खूब साफ़ करके पोंछ देना चाहिये और बच्चे को गाय का ही दूध पिलाना चाहिये, न कि बाहर से दूसरे जानवर का, जैसाकि अक्सर लोग किया करते हैं, जिससे बच्चे का पेट ख़राब होजाता है।

(४) बच्चे का पेट में टेढ़ा होकर पैदा न होना

Retention of foetus

ये तक़लीफ़ें अक्सर जानवरों में होजाती हैं कि बच्चे का सिर पीछे को घूम जावे व एक या दोनों पैर पीछे को फिर जावें। कभी बच्चा बजाय अगले धड़ के पिछले धड़ से भी पैदा होता है। लेकिन जब कमर या पेट सामने आजावें या बच्चे के पैर नीचे होने के बजाय ऊपर को होजावें, तो पैदा होने में दिक़्क़त होती हैं। उसके निकालने के लिये डाक्टर या इस काम को जाननेवाले की ज़रूरत फ़ौरन पड़ती है। वरना देरी होने से बच्चा पेट में मरकर फूल जाता है और माँ के भी उसका ज़हर चढ़ जाता है और वह भी मर जाया करती है।

मैंने हज़ारों बच्चे हर तरह की पेचीदगी के निकाले हैं, जब कि सब दूसरे लोग नाकामयाब रहे। और, इस कामयाबी का बाइस यही रहा है कि बच्चे को जितना होसके, पीछे को यानी जच्चा के सीने की तरफ़ धकेलकर उसको अन्दर टटोलकर ठीक हालत में, जिसमें कि वह निकाला जासकता है, ले आया जावे। इसके लिये ज़िन्दा बच्चे के पैर वग़ैरह टटोलकर अभ्यास करने की ज़रूरत है।

अगर पैर बाहर आगए हैं और सिर नहीं आया है, तो पैरों को हरगिज़ बाहर न खींचा जावे। बल्कि उनको अलहदा-अलहदा

सूत की डोरी से, जो पहले से पानी में खौलाकर रख ली जावे, बाधकर पीछे धकेलो। जितना पीछे धकेला जावेगा, उतना ही आसानी होगी। सिर को सीधा करके पैरों पर रखकर खींचा जावे। इसी तरह दूसरे मुड़े हुए हिस्सों को भी अन्दर सीधा करके बच्चे को निकालो। अगर बच्चा न निकल सके, तो डाक्टर को फौरन् बुलाकर आपरेशन कराकर निकलवा दो, मादीन की जान बच जावेगी।

(५) बच्चा डाल जाना

Abortion

चोट-सदमा पहुंचने से अक्सर जानवर वक्त से पहले बच्चा गिरा देते हैं, जिससे मालिक को बड़ा नुकसान होता है। यह छूत से भी होता है या बेधन की बीमारी में होता है। किश्ती या रेल के सफर में भड़कने व डरने से भी होता है। जब एक से ज्यादा जानवर बिला किसी कारण बच्चा डालें, तो छूत का कारण समझो।

इलाज—जो जानवर हामला है और चार महीने के बाद से और ६ महीने के अन्दर-अन्दर बच्चा गिराने का दर्द जाहिर करे, जो बार-बार उठने-बैठने, बार-बार पेशाब करने और बचचेदानी से मैला गिराने से जाहिर होता है, उसको अच्छे जानवरों से फौरन् अलहदा करके ४ माशे अफीम गर्म माँड़ में मिलाकर दिन में तीन बार तक दो। अगर न रुके, तो बच्चे को दफन करदो। जेर, जो ऐसी हालत में आसानी से अपने आप नहीं निकला करती, उसमें ½ सेर से १ सेर तक का वज़न रस्सी से बाँध दो, ताकि वह गिर जावे। वरना १२ घंटे बाद हाथ को लाल

पानी की दवा से धोकर आहिस्ता-आहिस्ता निकाल दो। पीने को गर्म पानी और खाने को चोकर, हरी दूब-घास ज़रा खुश्क करके दो।

(६) बच्चेदानी का बाहर निकल आना

Inversion of uterus

सबब—आम कमजोरी, बुढ़ापा, बच्चे की बेकायदा तौर पर खींचकर निकालना।

अलामत—गाँठोंदार हिस्से की बच्चेदानी का, बाद बच्चा देने के, बाहर लौट जाना।

इलाज—लौटे हुए हिस्से पर से जेर छुडाकर, और खूब अच्छी तरह से लाल पानी से धोकर या फिटकरी के पानी से चुपड़कर, उसको हाथ के सहारे से अन्दर करके बोतल को पेंदी की तरफ से अन्दर दाखिल करके और उसकी गर्दन को छींके में बाँधकर जो पेशाब की जगह पर कसकर लगाया जाता है, जिसकी गर्दन के नीचे से गाँठ देकर पेट के नीचे से लाकर, उस बड़ी रस्सी का एक हिस्सा बाँक के दाहनी और दूसरा बाई तरफ से ले जाकर पेशाबगाह पर गोल फन्दा दोनों का ऐसा लगाकर कि उसके दोनों लब रस्सी के बीच में रहें और खींचने पर बाहर न आ जावें, लगाकर, दुम के ऊपर गाँठ देकर कमर पर से लाकर गर्दन की रस्सी में बाँध दो।

जानवर को तीन दिन तक ऐसी जगह बाँधो, जहाँ उसका अगला हिस्सा नीचे और पिछला ऊँचा रहे। दर्द कम करने के लिये १ पाव देशी शराब फ़ौरन् पिला दो। चन्द दिन तक बच्चेदानी को लाल पानी से अन्दर धुलाओ। मक्खियों से बचाने के लिये ४ हिस्से तेल में १ हिस्सा फिनायल डालकर लगाओ।

(७) प्रसूत या जच्चा का बुख़ार या दूध का बुख़ार
Milk Fever

सबब—मादीन के थनों के सूराखों से छूतवाली चीज का दाखिल होजाना।

अलामत—जानवर सुस्त, मुँह को घुमाकर कोख में रखकर बैठना, नाक से रेट का जाना, बेहोशी, कान ठंडे, क़ब्ज़ का होना, कभी-कभी बुखार १०४ से १०६ डिग्री होकर बाद को असली से कम होजाना, दूध का खुश्क होजाना, चलने में लड़खड़ाना।

इलाज—मरीज को पिछाली लगाकर आराम से रक्खो। एक नया बाइसिकिल का पम्प लेकर बाल खूब उतारकर और उस हिस्से को पानी में पकाकर घी लगाकर थन में दाखिल करके हवा भरो और ऊपर को मलकर बाँक में फैला दो। दिन में एक बार चारों थनों से दूध निकालकर ऐसा ही करो। अन्दर दवाई के तौर पर सोंठ १ तोला, अजवायन १ तोला, मेथी पकाकर २ तोला, देशी शराब २ छटाँक बाद को मिलाकर दिन में दो बार दो। जानवर को बैठाकर पिलाओ। खाँसे, तो छोड़ दो। गिज़ा में दूध-अलसी की चाय दो। अगर क़ब्ज़ हो, तो जुलाब तेल या घी का दो।

(८) दूध सूख जाना
Drying of Milk

सबब—जच्चाखाने की बीमारियों या दूसरी बीमारियों का नतीजा होता है।

अलामत—दूध की कमी होना।

इलाज—जानवर को रोशन, हवादार मकान में रक्खो। अच्छी ख़ूराक़ दो। अगर कोई दूसरी बीमारी है, तो उसको रफ़ा करो। ख़ूराक में ख़ाली गेहूँ का दलिया, मीठा, मय १ छटाँक सफेद जीरे के शाम को पकाकर दो। सतावर की जड़ २ छटाँक पिसाकर पानी में मिलाकर १ महीने तक पिलाओ या पत्थरचटे की पत्ती १ छटाँक, व करेले की पत्ती २ छटाँक महीन पीसकर ½ छटाँक सोंठ जौ के आटे को मिलाकर १ हफ्ता दो। हरी चरी की कुट्टी व दूब-घास खाने को दी जावे। स्थान में सेंधा नमक का डला रक्खो।

(६) ज्यादती दूध में कमी करना

Reducing Milk

इसकी ज़रूरत बाँक की सूजन में पड़ती है।

इलाज—बाँक को कीकर व जामुन की छाल से, जिसमें फिटकरी १ तोला मिलाकर पकाकर, दिन में दो बार सेक करो। ४ माशे अफीम, २ तोला फिटकरी पानी में मिलाकर तीन दिन तक पिलाने से दूध कम होजाता है।

——:o:——

भाग १४

नसलकशी मवेशियान

Cattle Bereeding

इस पर भारतवर्ष में सबसे ज्यादा ध्यान देने की ज़रूरत है, क्योंकि कुछ अर्से से यहाँ के गाय-बैलों की नसल हमारी अविद्या और लापरवाई के कारण बहुत ज्यादा ख़राब होचुकी

है। इसी कारण हमारी आज माली हालत भी खराब है। क्योंकि हमारी खेती का कार्य भी, जो हमारे देश का प्रधान रोज़गार है, ठीक तौर पर नहीं चल सकता। लिहाज़ा इस समय हमारे सामने काय, इसकी उन्नति करने का है। हमारे ज़मींदारों, रईस और धनी लोगों को बतौर नमूने के इसे करके, जैसा कि बिलायतों में बड़े बड़े लोग करते हैं, जनता को शौक़ दिलाना चाहिये। इसी में देश की भलाई है।

अच्छी नसल पैदा करने के लिये अच्छी गाय और उसी नसल को या दूसरी नसल का, जिस तरह की आपको ज़रूरत हो यानी दूध के लिये या ज्यादा काम के लिये मिलाकर बच्चे लो। उनको खूब दूध व गिज़ा देकर परिवरिश करो और फिर उनमें से अच्छा नर बछड़ा छाँट कर साँड़ बनाओ। जो खराब हो, उसको बधिया करा दो।

हमारे देश में अच्छे साँड़ छोड़ने की प्रथा थी, जो आज रिवाज-मात्र रह गई है। लेकिन अच्छे के बजाय खराब ज्यादा छोड़ते हैं, जिसको बन्द करना चाहिये और अच्छी नसल का ही छोड़ना चाहिये।

नसलकशी की कामयाबी तीन बातों पर मुनहसिर है—(१) अच्छी नसल के जानवरों से बच्चे लेना, (२) अच्छी गिज़ा देना व हिफ़ाज़त करना, (३) बेकारों को निकाल देना।

साँड़ निहायत अच्छी नसल व बनावट व तन्दुरुस्ती का हो उस पर ही तरक्की का दारमदार होता है। ३ साल से कम और ८ साल से ज्यादा उम्रवाले साँड़ से मिलाने का काम नहीं लेना चाहिये।

साँड़ की गर्दन मोटी, ठाठ बड़ा, माथा चौड़ा, आँखें बड़ी पैर लम्बे, जोड़ मजबूत व मोटे, बदन गठा हुआ, छड़ी कम

लटकती हुई और पड़ने में तेज हो। ४ वर्ष ज्यादा एक जगह में न रक्खा जावे, ताकि भाई-बहन व पिता-लड़की का जोड़ न हो। इससे नसल में खराबी आती है। दूसरी जगह से मँगाकर साँड़ रखना चाहिये।

हमारे देश में साही वाल पंजाब की नसल मवेशियों की ज्यादा दिनों तक दूध देने वाली है। ये शान्त स्वभाव और चर कर खुश रहनेवाली हैं। इनके दूध में मलाई भी और गायों के दूध से ज्यादा होती है। कीमत में ७२) रुपये से १००) या १५०) रुपये तक मिलती हैं। जो ८ सेर से १२ या १५ सेर रोजाना दूध देती हैं।

इसके दूसरे नम्बर पर सिंध-प्रान्त की गायें हैं, तीसरे दर्जे पर गुजरात-प्रान्त की और चौथे पर हरियाना नसल की, जो हाँसी, हिसार, रोहतक वगैरह में पाई जाती हैं। ये नसलें दूध के लिहाज से हैं। परन्तु खेतों के काम के लिहाज से मभरा और पंवार नसल के, जो छोटे और ताकतवर होते हैं, मुफीद हैं।

जब बच्चा पैदा हो, तो तारीख, महिना, साल, उसका रंग, हुलिया, बाप का नाम, माँ का नाम व कितना दूध गाय ने पिछले ब्याभ में दिया, कितने दिनों सूखी रही, लिखना चाहिये, जिससे अच्छी जात का पता रहता है।

जहाँ मामूली नसल के मवेशी हों, अगर वहाँ भी अच्छी गायों पर बाहर से मँगा कर अच्छी नसल के साँड़ डाले जावें, तो ६ नसल में साँड़-जैसे नये जानवर पैदा हो सकते हैं। सरकार भी इस काम में काफी रुपया खर्च कर रही है और अच्छे २ साँड़ बाँट रही है, जिनको लेकर फायदा उठाना चाहिये।

भाग १५

मवेशी की उम्र की पहचान

Ageing of Cattle

जानवर की उम्र पहचानने की ज्यादा जरूरत है। वरना इसको न जानने से खरीद के वक्त अक्सर धोका हो सकता है आयु की जाँच शुरू में दाँतों से और जवानी के बाद सींग से महीनों में की जाती है।

मवेशी में आठ पक्के दाँत सामने नीचे के जबड़े में होते हैं ऊपर के जबड़े के सामनेवाले हिस्से में मजबूत गद्दी सी रहती है। नीचे के हिलनेवाले दाँत उस पर टिकते हैं अगर ऐसे हिलते न होते तो ऊपर वाली गद्दी जख्मी हो जाया करती।

पाँच महीने की उम्र में सब दूध के दाँत निकलकर पूरे हो जाते हैं। डेढ़ साल में सब घिस जाते हैं। दो-से ढाई साल की उम्र में दूध के दाँत टूटकर पक्के दाँत निकल आते हैं। तीन से ३½ साल की उम्र में चार पक्के दाँत दिखाई पड़ते हैं। ४ से ५ साल में ६ दाँत और ५ साल में सब पक्के दाँत निकल कर पूरे हो जाते हैं।

इसके बाद दाँतके घिसने की हालत को देख कर पहचानते हैं ६ साल में बीच के दो दाँतों पर घिसने की हालत, ७ साल में जानवैन के और दो दाँत घिसते हैं, यानी ४ दाँत घिस जाते हैं। ८ में ६ दाँत और ९ साल में आठों दाँत घिस जाते हैं। १० से १२ साल में ऊपर का तिकोना हिस्सा सब दाँतों का घिसकर, वे एक दूसरे से जुदा होकर ठूँठ-से खड़े रह जाते हैं। बाज्-बाज् गिरने भी लगते हैं। इसके बाद उम्र नहीं पहचानी

जाती। जानवर बेकार भी हो जाता है। बैल ज्यादा से ज्यादा १५ से २० साल जीता है।

भैंस के दाँत भी गौओं की तरह होते हैं और उसी तरह से उम्र पहिचानी जाती है। मगर उनको गिराकर देखो। खड़े-खड़े दिक्कत से मुँह खोलने देती है।

अध्याय ४

देशी दवाइयों के असर व इस्तेमाल

Indian Drugs & their uses

देशी दवाइयाँ अक्सर जड़ी-बूटियों की होती हैं, जो बरसात के दिनों में खराब हो जाती हैं, और फिर उनका वह गुण भी नहीं रहता। लिहाजा जो खराब हो जावें, उनको फेंक देना चाहिए। अगर दवाई ताजी और अच्छी न होगी, तो फायदा भी न करेगी। दवा को ताजी तैयार कर के देना चाहिये।

दूसरी किस्म दवाइयों की खानी है, जो जमीन से निकलती हैं। उनको भी बंद करके और जंग न लगनेवाले बरतनों में रखना चाहिये, ताकि वे खराब न हों या उनमें बरतनों का धात मिलकर जहर न पैदा कर दे।

तीसरी किस्म दवाइयों की वह है, जो हैवानों के जिस्म से हासिल होती है, जैसे चर्बी, मोम आदि।

पहले बीमारी को पहचानकर उसका नुस्खा तजवीज करो और उन दवाइयों के असर को भी इस जगह पर देखो कि उस मर्ज के मुताबिक है या नहीं। थोड़े दिनों के अभ्यास से दिक्कत दूर हो जावेगी।

दवाइयों के बीमारी में देने का मतलब और फायदा कुदरत को मदद देने का है। परन्तु जब कुदरती जिस्म हद से ज्यादा

कमजोर हो जाता है, तो फिर दवाइयों से भी फायदा नहीं होता है लिहाजा हर बीमारी के शुरू में ही, जब ताकत बनी रहती है, दवाइयों से जल्द आराम हो जाता है। बीमारी के जिस्म में अर्से तक रहने से तरह-तरह की पेचीदगियाँ हो जाती हैं, जो कुदरत और इलाज दोनों के काबू से बाहर हो जाती हैं। और मालिक मवेशी के खर्च करने और इलाज करने की तकलीफ का बदला, जानवर के तन्दुरुस्त और कारआमद होने का, नहीं मिलता। लिहाजा इलाज जल्द ही करना चाहिये।

इन दवाइयों का जखीरा हर गाँव में किसी दुकान पर जरूर होना चाहिये, ताकि जरूरत के वक्त फौरन मिल सकें। २०) रु० में ये चीजें जमा हो सकती हैं। गाँव में एक पढ़े हुये आदमी की आजीविका, इस काम को सीखकर इलाज करने से और दवाइयाँ बेचने से, हो सकती है। स्वार्थ और परमार्थ दोनों कर सकता है। अगर कुछ बात न समझ में आवे तो अपनी तहसील के डाक्टर-मवेशियान के पास जाकर समझ ली जावे।

सबसे पहले यह जानने की जरूरत है कि रोग किस हिस्से में है और क्या है। उसी को हटाने के लिये दवा भी ठीक हो। दवाइयों को उनके गुण के लिहाज से चार हिस्सों में बाँटते हैं—

(१) जब फासिद माद्दे, जिस्म में आँतों की कमजोरी के बाइस या गुर्दे, फेफड़े और जिल्द की खराबी के बाइस, जिस्म के बाहर खारिज नहीं होते, तो बीमारी पैदा करते हैं। लिहाजा उस माद्दे को इन्हीं आजाओं के जरिये खारिज करने की दवाइयाँ दीजिये। कुदरत भी उनको निकालना चाहती है, मगर कमजोर है, मदद पाकर अपना काम ठीक कर देती है। मरीज को आराम आ जाता है। वे दवाइयाँ साल्ट, नौशादर, मैग्नीशिया सुहागा वगैरह हैं।

(२) अगर खून कमजोर हो, जिस हालत में वह तमाम जिस्म के हिस्सों की परवरिश न कर सके, तो उसको ताक़त देनेवाली दवाइयाँ दो। वे दवाइयाँ लोहे के मुरक्कब, संखिया व कुचला इत्यादि हैं।

(३) जब दर्द हो, तो उसको दूर करने के लिये शराब, भंग चरस, काफूर, तेल तारपीन व तेल अलसी इत्यादि दो।

(४) जब बीमारी की हालत में खून या नाहज़म गिज़ा जिस्म से बाहर निकल रही हो, जिसके कारण जिस्म कमजोर होता जाता हो, तो उसको रोकने के लिये क़ाबिज़ दवाइयाँ दी जावें। परन्तु पहले खराश करनेवाले माद्दे को चिकनी चीज़ देकर खारिज करो, फिर काबिज दवाइयाँ दो, वरना नुकसान होगा।

दवा देने के तरीके

How to Administer Drugs

दवाइयाँ देने के चन्द तरीके ये हैं —

(१) जब इन दवाइयों में से चन्द के जौहर अङ्गरेजी तरीके से निकालकर इस क़दर ताकतवर होजाते हैं कि उनको थोड़ी मिकदार में ही दिया जावे, तो उनको बजाय मुँह के देने के नस या खाल के भीतर पिचकारी से दिया जाता है। इससे फौरन असर होता है। इस काम को डाक्टर ही कर सकते हैं।

(२) दवा को कूट-छानकर पानी में मिलाकर पिलाना, यह आम तरीका है, जिसको बोतल या बाँस की नाल से पिलाते हैं। इसमें पानी की मिक़दार आध सेर के क़रीब तक होती है। जब जानवर पिलाने में खाँसे, दवा बन्द करके मुँह नीचा कर दो।

(३) दवाइयों को कूटकर शहद या शीरे में चटनी बनाकर चटाना। यह खाँसी व निमोनिया में देते हैं, ताकि पिलाने में

खाँसी उठकर नरखडे में दवा चली जाकर नुकसान न हो जावे।

(४) दवाइयों को गर्म पानी में डालकर सेक करना या नाक में भपारे देना या पुलटिस की तरह पर बाँधना।

(५) दवाइयों को पानी में डालकर कुल्ली कराना या धोना।

(६) दवाइयों को जिस्म पर मालिश करके जज़्ब कर देना।

(७) दवाइयों को जख्मों पर छिड़क कर या लगाकर पट्टी बाँधना।

दवाइयों की खूराक उम्र के लिहाज से

Doses according to age

इस जगह पर पूरे जवान और कद्दावर मवेशी की दवा की खूराक लिखी जाती है। डेढ़ साल के मवेशी को उसकी आधी। नौ महीने के बच्चे को चौथाई। ४ महीने के बच्चे को आठवाँ हिस्सा और दो महीने के बच्चे को सोलहवाँ भाग दो। भैंसों को सवाई खूराक और उनके बच्चों को ऊपर के हिसाब से दो। बकरी-भेड़ को पाँचवाँ हिस्सा दो। उनके बच्चों को फिर उसी हिसाब से दो। हाथी को ४ से ६ हिस्सा ज्यादा और ऊँट को ३ से ४ हिस्सा ज्यादा दो। दवाइयाँ सब जानवरों में एक-सा गुण करती हैं, खूराक जुदा है। परन्तु छोटे जानवर को बड़े की खूराक नुकसान देसकती है। कुचला को छोड़कर कुत्ते की दवाइयों की खूराकें आदमी की खूराकों के बराबर होती हैं।

भाग २

दवाइयों के गुण, खुराक और नुस्खे

The uses & doses of drugs

(१) अजवायन (Ajevayan) ये बारीक बीज होतेहैं।

इसका फायदा जानवर के मेदे और आँतों को ताकत देना व सड़ाँद को रोकना है। खूराक आधी से १ छटाँक है।

बदहजमी में खास फायदामन्द है। जिसमें अजवायन २ तो० हींग १ तो०, सोंठ २ तो०, काला नमक २ तो०, गर्म पानी आध सेर में मिलाकर दिन में दो बार दो।

पेट के दर्द में अजवायन २ तो०, काला नमक २ तो०, लहसुन ३ तो०, सोंठ २ तो०, देशी शराब २ छटाँक, आध सेर गर्म पानी में दो बार दो।

नोट—अजवायन खुरासानी (Hyoscimus पेशाब की व मसाने की जलन को दूर करती है। खूराक १ तो० से २ तो० है। नुस्खा—खुरासानी अजवायन १ तो०, सुहागा १ तो०, शोरा १ तो० पेशाब रुकने में दो।

(२) अरंडी का तेल (Castor oil) बछड़े बछड़ियों के लिये अच्छा जुलाब है और गाभन गायों को भी, कब्ज की हालत में, दस्तों व मरोड़ों की बीमारी के शुरू में पेट साफ करने को देते हैं। खूराक आध सेर से तीन पाव तक है।

नुस्खा पेचिश में—तेल अरंडी १ पाव, गोंद बबूल १ छ०, अफीम ३ मा० पानी २ छ० में खरल करके दिन में दो बार दो। खाने को सिर्फ चावलों का माँड दो।

(३) अलसी व उसका तेल (Linseed)

अलसी को चाटनेवाली दवाओं में, जो खाँसी में दी जाती है, कूटकर मिलाते हैं। फोड़ों पर पुलटिस भी बाँधते हैं। तेल कच्चा अफारे व कब्ज की हालत में १ बोतल की खूराक में देते हैं।

नुस्खा अफारे में—हींग १ तो०, तरपीन का तेल १ छ० तेल अलसी १ बोतल एक खूराक में दो बार दो।

(४) **अफीम**—(Opium) यह पोस्त के छिलकों को, जब वे पकने के करीब हों, पाछने से हासिल होती है। यह थोड़ी खुराक में देने से दर्द खोती और कब्ज़ करती है। दस्तों में मुफ़ीद है। खूराक ३ से ४ माशा है।

(१) नुस्खा—अफ़ीम ४ मा० माजू ६ मा०, दारचीनी ८ मा०, चावलों के माँड आध सेर में दस्तों व पेचिश में दो। परन्तु इससे पहले अरंडी का तेल $\frac{1}{2}$ सेर दो।

(२) नुस्खा—अफीम ३ मा०, तेल तारपीन १ छ० तेल अलसी १ बोतल पेट के दर्द में दो। गर्म पानी व साबुन की पिचकारी गुदा से दो।

(५) **अपसम साल्ट** (Epsom Salt) यह अँगरेजी दवा है, जो इकट्ठी बम्बई से मँगाने पर दो आने सेर पड़ सकती है जुलाब देने बुखार उतारने व पेशाब लाने के लिये मुफ़ीद है। खूराक जुलाब की $\frac{1}{2}$ से १ सेर, सोंठ १ छटाँक, पानी १ सेर में मिलाकर दो। बुखार में २ छटाँक पानी में डालकर पीने को दो। उसी में १ तो० कलमीशोरा भी डाल दो। पानी घोलकर गाढ़ा लगाने से जिल्द की गर्मी वरम और जले हुये की तकलीफ़ को कम करता है। यह बाज़ारों में आम तौर से मिलता है।

नुस्खा जुलाब—अपसम साल्ट $\frac{1}{2}$ सेर, खाने का नमक १ पाव, सोंठ १ छटाँक, शीरा $\frac{1}{2}$ सेर, गर्म पानी १ सेर, एक खूराक में दो। पीने को गर्म पानी दो।

(६) **अडूसा** (Adhatoda) इसकी झाड़ियाँ हर जगह पाई जाती हैं। जिनपर सफ़ेद फूल आते हैं। इसके पत्ते व छाल काम में आते हैं। तमाम खाँसी, बुखार और दमे के मर्जों में मुफीद है। पत्तों के अर्क १ छटाँक में अदरक १ छ०, व शहद

१ छ०, मिलाकर दिन में तीन बार दो। ख़ूराक अर्क़ १ से दो छटाँक है। नीम २ छटाँक छाल को पानी तीन पाव में पकाकर अदरक और शहद मिलाकर दो।

नुस्ख़ा—पीपल १ तो० अडूसे की पत्ती १ छ०, सोंठ १ तो, मुलहठी १ तो०, शहद १ छ० या शीरा २ छ० में मिलाकर खाँसी, बुखार में दिन में दो-तीन बार चटाओ।

(७) अनार की जड़ की छाल (Pomegranate root bark) यह पेट के कीड़ों को मारने में मुफ़ीद है। इसको पानी में पकाकर और उसे छानकर देते हैं। ख़ुराक ½ से १ छटाँक आध सेर पानी में, जिसमें १ माशा दालचीनी भी हो, दो। पेचिश में १ माशा अफ़ीम भी इसी में मिलाकर दो। जब कीड़े मारने हों, तो २४ घण्टे के बाद ख़ाली पेट दो।

(८) आम (Mango) इसकी छाल, गोंद व गुठली काम आती है। छाल पानी में पकाकर देने से क़ाबिज़, खून रोकने में देते हैं। गुठली पीसकर देने से क़ाबिज़ व कीड़े आँतों के मारने को देते हैं। गोंद को नींबू के अर्क़ में या मीठे तेल में मिलाकर खुजली में जिल्द पर लगाते हैं। फेफड़े, बच्चेदानी व आँतों से खून आने की हालत में ताज़ा छाल का अर्क़ २ तोला मय २ अण्डे की सफ़ेदी, जिसमें १ माशा अफ़ीम मिलाकर तीन बार दिन में दो।

(९) अनन्तमूल (Sarsaparilla Indigenous) यह एक बेल की जड़ है। इसका फ़ायदा खून को साफ़ करना, ताक़त देना, पेशाब लाना, आँतों व मुँह को चिकना करना है। पेशाब की जलनवाली बीमारियाँ व फोड़े-फुन्सियों की बीमारी में निहायत फ़ायदे वाली दवा है। ख़ूराक १ से २ तोला है।

(१) नुस्खा—अनन्तमूल १ तोला, गन्धक १ तोला नौसादर ६ माशा, शोरा कलमी १ तोला, खाने में दो बार दो। खून साफ करता व जिल्दी मर्ज़ों, फोड़े वगैरह में मुफ़ीद है।

(२) नुस्खा—अनन्तमूल १ तोला, धनिया २ तोला, मुलहठी १ तोला ½ सेर खौलते पानी में दो बार दो, जबकि पेशाब जलन से बार-बार आता हो।

(१०) **इलायची** (Cardamom) इसके बीज काम आते हैं। ये मेदे को ताक़त देते, भूक बढ़ाते, आँतों की गैस व दर्द को कम करते हैं। खूराक़ १ से २ तोला है।

नुस्खा—काला नमक १ तोला, सौंफ १ तोला, सोंठ १ तोला, इलायची १ तोला, लौंग ½ तोला, जीरा १ तोला कूटकर खाने में दो बार दो। हाज़मा करता है।

(११) **इमली** (Tamarind) फल का गूदा काम में आता है। कमज़ोर बच्चों में हलका जुलाब है। जिसमें सोंठ ६ माशा मिला लेनी चाहिये। इसके पत्तों को उबालकर गर्म-गर्म सूजन वाली जगह पर बाँधने से आराम होता है। मगर बाद सेक के कड़ुआ तेल मल दो। खूराक़ गूदे की ½ से १ छटाँक तक है।

(१२) **ईसफ़गोल** (Isafgol) ये लाल रङ्ग के बीज हैं। इनका फ़ायदा पानी में भिगोकर देने से आँतों को चिकना करने का व दर्द-मरोड़ कम करने का है, जब पेचिश में हो। पेशाब की जलन को भी दूर करता है। खूराक १ से २ छटाँक १ पाव पानी में भिगोकर दिन में दो बार दो।

(१३) **ऐलवा** (Aloes) यह एक पौदे के पत्तों के गूदे से बनता है। इसका गुण दस्तावर है। थोड़ी खूराक़ में देने से मेदे को ताक़त देता व खून साफ़ करता है खूराक़ दो से तीन तोला हैं। इसको ज़ख्मों पर भी छिड़कते हैं।

(१) नुस्खा—ऐलवा ४ माशा, काला नमक १ तोला, चिरायता १ तोला, सोंठ १ तोला, शीरा १ छटाँक, दिन में दो बार दिया जावे। मेदे को ताक़त देता है।

(२) नुस्खा—ऐलवा ४ माशा, नौसादर १ तोला, शोरा १ तोला, गन्धक १ तोला, शीरा १ छटाँक दिन में दो बार ख़ून साफ़ करने को देते हैं।

(१४) कत्था (Catechu) यह खैर के पेड़ की लकड़ी के टुकड़ों को पानी में पकाकर और उस पानी को उड़ाकर जमा लेते हैं। इसका गुण क़ाबिज़ है और आँतों की ख़राश को दूर करता है। आम तौर पर दस्तों और मरोड़ों की बीमारी में खड़िया और अफ़ीम के साथ देते हैं। मुँह के ज़ख्मों पर भी लगाते हैं। ख़ूराक १ से २ तोला है।

(१) नुस्खा—कत्था १ तोला, खड़िया मिट्टी २ तोला, सोंठ १ तोला, धुला जीरा १ तोला, अफ़ीम ३ माशे, चावलों का माँड आध सेर में मिलाकर कुल और पीसकर दिन में दो बार दो।

(२) नुस्खा—कत्था १ तोला, तूतिया १ माशा, पानी १ छटाँक में मिलाकर ख़राब, पुराने ज़ख्मों में लगाओ।

(१५) कपूर (Camphor) यह एक पेड़ से पैदा होने वाली गोंद की किस्म है, जो दिल-दिमाग़ को ताक़त देता है और दर्द को कम करता है। आँतों के अफ़ारे, दस्त और मरोड़ों के रोग में ख़ासकर खाँसी में फ़ायदेमन्द है। जिल्दी मर्जों में व ज़ख्मों में भी फ़ायदा करता है, और कीड़ों को मारता है। ख़ूराक ३ से ६ माशे तक है।

(१) नुस्खा—कपूर ८ माशे, कस्तूरी ½ माशा, शहद १ तोला दिन में दो बार दिल व दिमाग़ की कमजोरी, सदमा थकावट में देते हैं।

(२) नुस्खा—कपूर ३ माशे, कलमी शोरा १ तोला, नौसादर ६ माशे, मुलहठी १ तोला, अलसी ३ तोला, मदार की जड़ की छाल १ तोला, शीरा या शहद १ छटाँक मिलाकर दिन में तीन बार देने से खाँसी, बुखार को दूर करता है।

(३) नुस्खा—कपूर ४ माशे, अजावायन १ तोला, हींग १ तोला, भङ्ग १ तोला, शराब देशी २ छटाँक, गरम पानी आधा सेर पेट के दर्द में हर ६ घण्टे में दो।

(१६) कड़ू या कुटकी (Gentian) इसकी जड़ें काम में आती है, जिसका गुण मेदे और जिगर को ताक़त देना है। ज़ायक़ा कड़ुआ होता है। ख़ूराक़ १ से २ तोला है।

नुस्खा—कड़ू १ तोला, काला नमक १ तोला, सोंठ १ तोला, नौसादर १ तोला, पानी आध सेर। दिन में दो बार दो।

(१७) कुचला (Nux Vomica) ये एक पेड़ के बीज हैं। इसका गुण हाज़मे और जिस्म के सारे पट्ठों को ताक़त देने का है। इन बीजों को भूनकर कूटा जाता है। ख़ूराक़ १ से ३ माशे है।

नुस्खा—कुचला २ माशे, हीराकसीस ३ माशे, नमक सेंधा १ तोला, सोंठ १ तोला, सज्जी खार २ तोला, दिन में दो बार १ पाव पानी में घोलकर दो। बदहज़मी व हर प्रकार की कमजोरी में मुफ़ीद है।

(१८) कलमी शोरा (Pot Nitrate) यह बुखार खाँसी और जिस्म में सूजन की बीमारियों को दूर करने और पेशाब लाने की बड़ी अच्छी औषधि है। नौसादर और नमक हमवज़न में मिलाकर पानी में घोलकर सूजन वाली जगहों पर कपड़ा भिगोकर बाँधते हैं। ख़ूराक़ १ से २ तोला है।

(१) नुस्खा—कलमीशोरा १ तोला, कपूर ३ माशे - देशी

शराब दो छटाँक, पानी डेढ़ पाव। बुखार की हालत में दिन में ३ बार दो।

(२) नुस्खा—कलमीशोरा १ तोला, नौशादर १ तोला, इपसम साल्ट २ छ०, पानी आध सेर मिलाकर दिन में दो बार दो। बुखार जिगर और तिल्ली की बीमारियों में मुफीद है।

(१६) काली मिर्च (Black Papper) यह हाजमे को बढ़ाती और पेट के दर्द को दूर करती है। खूराक २ से ३ तो०।

(१) नुस्खा—काली मिर्च २ तो०, हींग ४ माशे, पीपल ६ माशे सोंठ १ तोला, हल्दी १ तो०, नमक २ तो०, दिन में दो बार दाने में मिलाकर दो। हाजमा बढ़ाता है।

(२) नुस्खा—काली मिर्च २ तो०, हींग १ तोला, तारपीन का तेल १ छ०, अलसी का तेल १० छ०, सब १ खूराक में दो। पेट के अफारे और दर्द में मुफीद है।

(२०) काला नमक (Black Salt) इसका गुण हाजिम और हवा को आँतों से खारिज करने का है खूराक आधी छटांक से १ छ० है।

नुस्खा—काला नमक २½ तोला, नौशादर १ तोला, चिरायता १ तोला, सज्जी खार १ तो० सोंठ १ तोला, पानी आध सेर। दिन में दो बार दो। बदहज्मी को दूर करता है।

(२१) कटकड़ंजा या करंजवा (Bunduo nut) यह एक बीज है, जिसका गुण बुखार उतारना, उसको बारी को रोकना और ताकत देना है। खूराक १ से २ तोला है।

नुस्खा—कटकड़ंजा १ तो०, चिरायता १ तो०, पीपल ६ माशे नौशादर १ तोला, काली मिर्च १ तोला। सबको कूटकर दाने में दो बार दो। बुखार उतारेगा और बारी को रोकेगा।

(२२) कबाबचीनी (Cubeb) ये एक झाड़ी के फल हैं। इसका गुण मुँह, बच्चेदानी और पेशाब की जगहकी सूजन को दूर करना है। हवा खारिज करता है। खूराक १ से ३ तोले है।

(१) नुसखा–कबाबचीनो १ तोला, धनिया २ तोले, कलमी शोरा १ तोला। सबको पीसकर दो बार खाने में दो। पेशाब और मुँह के सब रोगों में गुणकारी है।

(२) नुस्खा कबाबचीनी १ तो०, जीरा १ तोला, काली मिर्च ६ माशे, दालचीनी ६ माशे, सोंठ ६ माशे, काला नमक १ तोला। सबको पीसकर दिन में खाने में दो बार दो। हवा खारिज करता है, और भूख बढ़ाता है।

(२३) काकड़ासिंगी (Kakra Singi) यह एक पेड़ से हासिल होती है। इसका फायदा कदरे काबिज, साँस की नाली को चिकना करके बलगम खारिज करके खाँसी को आराम करने का है। खूराक १ से २ तो० है।

नुस्खा–काकड़ासिंगी १ तो०, पीपल १ तो०, सोंठ १ तो०, शहद ३ तो०, दिन में तीन चार बार चटाओ।

(२४) कमेला (Kamaila) यह सुर्ख रङ्ग का सफूफ एक पेड़ के फलों का रूआ है, जिसका गुण आँतों के चपटे कीड़े मारना व दस्तावर है। जख्मों पर भी खुश्क करने को छिड़कते हैं। खूराक बछड़ों में ६ माशे से २ तो० तक खाली पेट गुड़ में मिलाकर खिलाना चाहिये।

नुस्खा–वायबिड़ंग ४ मा०, कमेला ६ माशा, काला नमक १ तो०, शोरे में मिलाकर बच्चे को, जब पेट में कीड़े हों, खाली पेट पर दो। अगर दस्त न हो, तो अरण्डी का तेल १ छ० दो। एक हफ्ते के बाद इस नुस्खे को फिर दे सकते हैं, लगातार नहीं।

(२५) **लकड़ी का कोयला** (Charcoal) यह बदबू को चूसता है, जब पेट में सड़ांद हो या जख्म खुश्क न होते हों, तो उन पर बारीक-बारीक पीसकर छिड़को और पट्टी बाँध दो। खूराक ½ छटांक पानी में मिलाकर दो।

नुस्खा—कोयला २ तो०, हींग, काली मिर्च, अजवायन, नौशादर हरएक १ तो०, तेल अलसी या तिल १ बोतल में मिलाकर अफारे में एक खूराक में दो।

(२) नुस्खा— कोयला १ छ०, सुहागा २ तो०, फिटकरी १ तो० खड़िया २ तो०, तूतिया १ मा०, सबको पीसकर गन्दे जख्मों पर छिड़को। पहले नीम के पानी से जख्म को खूब साफ करो।

(२६) **कुनैन** (Quinine) यह भी बहुत आम दवा है, जो बुखारों में खासकर बारीवालों में लाभदायक है। थोडी खूराक में ताकत देती है। परन्तु इसको बुखार न होने पर दो और दस्त कराने के बाद। खूराक ३ माशे है।

नुस्खा—कुनैन ३ मा०, कागजी नींबू का अर्क १ तो०, नौशादर ६ मा०, पानी १ पाव में घोलकर, ऐसी तीन खूराक तीन बार दो।

(२७) **खड़िया मिट्टी** (Chalk) यह सफेद रङ्ग की मिट्टी होती है, जो दस्तों को बन्द करती है, जब मेदे को तुर्शी के बाइस हों। खूराक ½ से १ छटांक है।

(१) नुस्खा—खड़िया २ तो०, गोंद बबूल १ तो०, चीनी ३ तो०, पोदीना १ तो०, पानी ½ सेर बदबूदार दस्तों में दिन में दो बार दो। खाने को चावलों का मांड दो।

(२) नुस्खा—खड़िया २ तो०, कत्था १ तो०, बच ६ मा०, दालचीनी १ तो०, सौंफ २ तो०, दिन में दो बार आध आध सेर माँड में मिलाकर दस्तों में दो।

(२८) **गन्धक** (Sulphur) यह खून को साफ करती व दस्तावर है। जिल्द मर्जों में, खासकर खुजली के मर्ज के कीड़ों को मारने के लिये आम दवा है। खूराक दस्तावर १ से २ छटांक, खून साफ करने को १ तो० दाने में।

(१) नुस्खा—गन्धक १ तो०, सुरमा ६ मा०, शोरा १ तो०, दाने में दो बार दो। खून साफ करता है।

(२) गन्धक १ छ०, जवाखार १ तो०, तेल नीम १ पाव, काफूर १ तो० | खुजली में मलो।

(३) चूना ½ छटाँक, गन्धक १ छटांक, पानी दो सेर मिट्टी के बर्तन में रखकर तीन घण्टे पकाओ, बाद को सुनहरा पानी पानी बोतल में भरकर डाट लगाकर रक्खो। खुजली पर हररोज लगाओ।

(२९) **गूगल** Bdellium) यह एक खुशबूदार गोंद है, जो पुरानी खाँसी और कमजोरी में फायदा करता है, खूराक ½ से एक तो० तक है

नुस्खा–गूगल १ तो०, मुलहठी १ तो०, काफर ४ मा० शहद १ छ०, खाँसी में दो बार दिन में दो।

(२) गूगल १ तो० कुटकी १ तो०, सोंठ १ तो०, काला नमक २ तो० खाने में दो बार हाजमे की कमजोरी में दो

(३०) **गिलोय** (Gulancha) इसकी बेल की लकड़ी व सत काम आते हैं इसका गुण बुखार खोना, जिगर को ताकत देना. भूख बढ़ाना, खून साफ करना है। खूराक हरी लकड़ी २ से ४ तो०। सत ६ माशा से १ तो०।

नुस्खा–गिलोय २ तो०, चिरायता १ तो०, काली मिर्च ६ मा० सोंठ ६ मा०, नमक १ तो० पानी आध सेर दिन में दो बार बाद

साल्ट के जुलाब के दो। बुखार जब जिगर की खराबी से हो, तो यह नुस्खा मुफीद है।

(३१) **गुड़ या शीरा** (Guggry) गन्ने के रस को पका कर उड़ाने से तैयार होता है। खाने में मीठा जायका होता है, जिसे जानवर खुशी से खा लेते हैं। गुण गर्म व दस्तावर है। खुराक दो छटाँक से आध सेर तक दूसरी दवाओं में मिलाकर है।

(३२) **गोले का तेल** (Coconut Oil) यह गोलों को पेलकर तैयार होता है। गुण चिकना व ठंडा है। इसमें गन्धक मिलाकर खुजली में और बराबर का चूना का पानी निथरा हुआ मिलाकर जले हुये जख्मों में लगाते हैं।

(३३) **नमक खाने का** (Sodi Chloride) इसका गुण खाने को हजम करना, हड्डियों को ताकत देना, पेट के कीड़ों को मारना है। खूराक ½ से १ छटाँक है। ज्यादा मिकदार में देने से जुलाब का काम देता है। खूराक ४ से ८ छटांक तक है।

नुस्खा—नमक ३ तो०, चिरायता १ तो०, नौशादर १ तो०, सोंठ १ तो०, पानी आध सेर, दिन में दो बार दो। जानवर खाना अच्छी तरह से खाने लगता है, जब कि उसने हाजमे की खराबी वा मुँह के कांटे बढ़ जाने की वजह से खाना छोड़ दिया हो।

(३४) **नौशादर** (Ammonium Chloride) यह जिगर को दुरुस्त करता, पित्तों को खारिज करता, भूख बढ़ाता और खाँसी व पेशाब के मर्जों में मुफीद है। खूराक १ से २ तो०॥ खाँसी में काफूर का और बदहजमी में नमक के नुस्खे देखो।

(३५) नींबू (Lemon) इसका रस हाजिम होता है। खून की गर्मी व बुखारों में मुफीद है दस्तों को, जब खारी हो, रोकता है। जानवर मोसम बरसात में जब ज़हरीली घास खाकर घबराने लग जाते हैं, तो १ पाव अर्क दो बार देने से फायदा हो जाता है। खूराक २ छटाँक से ४ छटाँक तक है, पर ताजा दो।

(३६) नीम (Margosa) इसकी छाल व फलों का तेल काम आता है। छाल का गुण बुखारों को उतारना व रोकना भूख बढ़ाना, खून साफ करना है। पत्तों को पानी में पकाकर जख्म धोते हैं, जिसमें ४० हिस्से में १ हिस्सा फिनायल भी मिला लेना चाहिये। तेल में गंधक मिलाकर खुजली में, और तारपीन का तेल व काफूर व गंदाबिरोजा मिला कर जख्मों में लगाने के काम लाते हैं। खूराक छाल की ½ से १ छटाँक है।

नुस्खा—नीम की छाल ३ तो०, गिलोय १ तो०, काली मिर्च ६ मा०, नौशादर ६ मा०, शोरा ६ मा०, नमक १ तो०, आध सेर पानी में दो बार बुखारों को दूर करने और रोकने को दो। छाल तर और ताजी होनी चाहिये।

(३७) चिरायता (Chiretta) यह एक पौदे की डंठल व पत्ती है, जो हिमालय में होता है। गुण जिगर व मेदे को ताकत देना, बुखार उतारना, भूख बढ़ाना, खून साफ करना है। दस्त, पेचिश और बुखार के आखिरी दिनों में खून की सफाई के लिये पानी में भिगोकर और शहद मिलाकर देते हैं। खूराक १ से ३ तो० है।

(१) नुस्खा—चिरायता १ तो०, हीराकसीस ३ मा०, कुचला, २ मा०, सोंठ १ तो०, नमक २ तो०, पानी ½ सेर खाने के बाद दो बार, कुमजा शरीर को ताकत देने के लिये देते हैं।

(२) नुस्खा—चिरायता १ तो०, गिरी करंजवा ६ मा०, कलमीशोरा १ तो०, काली मिर्च ६ मा० बुखार रोकने को देते हैं।

(३) नुस्खा— चिरायता १ तो०, काली मिर्च ६ मा०, नौशादर १ तो०, सोंठ १ तो०, अजवायन १ तो०, पानी आध सेर जिगर व तिल्ली की खराबी में दो।

(३८) चूना (Calcium Oxide) ताजे बेबुझे चूने की एक डली पानी में डालकर बुझाकर एक बोतल में डाल पानी भर देते हैं। चूना तली में बैठ जाता है। साफ़ पानी को ½ से १ छटाँक की खूराक दूध में मिलाकर, जब बच्चों को झागदार दस्त हों, देते हैं। जले हुये पर अलसी के तेल या गोले के तेल में बराबर का चूने का पानी मिला और खूब हिलाकर लगाते हैं।

(३९) चर्बी (Fat) बकरे की चर्बी मलहम बनाने के काम में आती है, जो जख्मों और फुंसियों पर लगाई जाती है।

नुस्खा— सफेद काशगरी १ तो०, जस्ता १ तो०, मुर्दासंख १ तो०, चर्बी ३ तो० मिलाकर जख्मों पर लगाओ।

(४०) छाली (Betel Nut) इसको बारीक पीसकर या पत्थर पर पानी के साथ घिसकर खाली मेदे पर देने से पेट के चपटे कीड़े मारने को गुणकारी है। परन्तु दूसरे दिन अरंडी का तेल देना चाहिये। खूराक १ तो० से ३ तो० तक है।

(४१) जायफल (Nutmeg) यह एक पेड़ का फल है जिसके ऊपर का गूदा सुखाने से जावित्री बनती है। इन दोनों का फायदा एक सा है। हाजमे को ताकत देता है। अफारा बदहज़मी, दस्त व दर्द में अन्दर देते हैं। इसका तेल गठिया और जोड़ों के दर्द में फायदा करता है। खूराक ½ से १ तो० है।

नुस्खा—(१) जायफल ६ मा०, सोंठ १ तो०, काली मिर्च १ तो०, अजवायन १ तो० जीरा १ तो०, काला नमक २ तो०,

पानी आध सेर में दिन में दो बार दो। हाजमा बढ़ाता है।

(२) जायफल १ तो०, सोंठ १ तो०, अफीम ३ मा०, तेल तिल १ पाव में पकाकर दर्द की जगह मलो।

(४२) ज़ीरा (Caraway seeds) हाज़मा करता है। खूराक १ से २ तो० है नुस्खा— जीरा १ तो०, राई २ तो०, सोंठ १ तो०, दालचीनी ६ मा०, काली मिर्च ६ मा०, काला नमक २ तो०, दिन में दो बार खाने में बतौर चूर्ण के दो। हाज़मा करता है, दस्त बाँधता है।

(४३) जमालगोटा (Crotonseeds) तेज़ जुलाब लाता है और पेट में मसोस पैदा करता है। जब सब जुलाब की दवा नाकामयाब हों, तो इसके १० से १५ बीज या इतनी ही बूँदें इसके तेल की, अलसी या मीठे तेल आध सेर में मिला कर सिर्फ़ १ बार देते हैं।

नुस्खा—तेल जमालगोटा १५ बूँद, अरंडी का तेल ५ छटाँक तेल मीठा ५ छटाँक सबको मिलाकर एक खूराक में दिमाग की झिल्लियों की सूजन या पेट में चारे के अड़ जाने में देते हैं।

(४४) जामुन (Jaman) इसकी छाल व फल की गुठली काम में आती है। गुण दोनों का काबिज़ है। छाल को पकाकर उसमें फिटकरी डालकर जानवर के मुँह व खुर के जख्मों को धोते हैं। गुठली पीस कर २ तो० की खूराक में सोंठ १ तो० में मिलाकर जब पेशाब में चीनी आवे, तो देते हैं।

(४५) तम्बाकू (Tobacco) इसकी पत्तियाँ दवा में इस्तेमाल होती हैं। इसका गुण दर्द दूर करना, कीड़े मारना, पेट के अफारे और दर्द में कमी करना है। ज्यादा खूराक में जहर पैदा करता है। इसकी २ छ० पत्तियाँ २ सेर पानी में पकाकर उसमें आधी छटाँक फिनायल मिलाकर चूहों, पिस्सुओं को मारने

के लिये जिल्द पर लगाते हैं। इसके जहर में शराब देते हैं। पत्तियों की खूराक ४ से ८ माशे है।

नुस्खा—तम्बाकू ६ मा०, कुटकी १ तो०, काला नमक १ तो० हींग १ तो०, शराब ३ छटाँक गर्म पानी ½ सेर पेट के दर्द व अफारे में दो।

(४६) तूतिया (Copper sulph.) इसका गुण काबिज, कीड़ों को मारना, ताक़त देना है। बढ़े हुये गन्दे ज़ख्मों के मांस को काटने के लिये खालिस लगाते हैं। जब कान से मवाद आता हो, तो १ रत्ती आधी छटाँक पानी में मिलाकर धोते हैं। दस्त बंद करने को तूतिया १ माशा, फिटकरी १ तो०, पानी आध सेर में मिलाकर दो बार दो। कीड़े मारने को खाली पेट पानी में मिलाकर दो। बाद को अरंडीका तेल मय तारपीन के तेल के दो।

(१) नुस्खा—तूतिया ४ मा०, कुचला ३ मा०, चिरायता १ तो०, नमक १ तो०, सोंठ १ तो०, पानी आध सेर, दिन में १ बार कमजोरी दूर करने को देते हैं।

(२) तूतिया १ रत्ती, फिटकरी २ रत्ती, अर्क गुलाब ३ तो०, आँख दुखने में डालो।

(४७) तारपीन का तेल (Tarpentine Oil)

इसका गुण दर्द अफारा दूर करना, पेट के कीड़े मारने, रीह खारिज करना और पेशाब लाना है। बाहर मलने से दर्द को कम करता है। खूराक ½ से १ छटाँक है।

(१) नुस्खा—हींग १ तो०, तेल तारपीन ६ तो०, अलसी का तेल १ बोतल, सबको एक खूराक में, जब अफारा हो, दो। जानवर को खूब चलाओ। दो घंटे बाद दूसरी खूराक दो।

(२) काफूर १ तोला, तेल तारपीन २ तोला मिलाकर फोड़े वाली जगह में भरने से कीड़े मरते हैं।

(४८) दालचीनी (Cinnamon) यह एक पेड़ की छाल है। इसका गुण आँतों से हवा को खारिज करना, दस्तों को रोकना, सड़ाँद को रोकना, और भूख बढ़ाना है खूराक १ से २ तोला है।

नुस्खा—दालचीनी १ तो०, सौंफ १ तो०, काली मिर्च ६ मा० काला नमक २ तो०, सज्जीखार १ तो०, बदहज़मी दूर करने को दिन में दो बार ½ सेर पानी में मिलाकर दो।

(२) खड़ियामिट्टी ३ तो०, दालचीनी १ तो०, सोंठ १ तो०, चावल के माँड़ ½ सेर में दस्त रोकने को दो बार दिन में दो।

(४९) दार चिकना (Hydrarg perchloride) यह निहायत ज़हरीली, तेज़ दवा है, जो कीड़े मारने में बड़ी ताक़तवर है १ रत्ती दवा को १ छटाँक पानीमें घोलकर ज़ख्म धोते व मकानों को धोकर साफ करते हैं, जिससे छूतवाली बीमारियों के कीड़े मर जाते हैं। दस्त बंद करने को भी ऊपर के लोशन को १ से २ छटाँक दिन में दो बार चावलों के ½ सेर माँड़ में देने से फ़ायदा होता है। जूएँ मारने को भी भैंसों के बच्चों की ज़िल्द पर लगाते हैं, मगर जानवर चाटने न पावे।

(५०) देवदार का तेल (Deodar oil) इसका गुण ज़िल्द के हर प्रकार के खुजली के कीड़े, चिचड़ियाँ, पिस्सू, जूएँ वगैरह मारने का है। चिचड़ियाँ मारने को तो इसके मुक़ाबले को दूसरी दवा ही नहीं, यह मेरी आज़माई हुई है। खालिस ही लगाओ। खुजली में बराबर का कड़ुआ तेल मलो।

(५१) धनिया (Coriander) इसका गुण हाजमा करना व पेशाब की जलन को दूर करके पेशाब लाना, रीह आँतों से खारिज करना व भूख बढ़ाना है। खुशबूदार है। खूराक २ से ३ तो० है।

नुस्खा—धनिया, सोंठ, सोंफ, जीरा, अजवायन, सब बराबर बराबर, हींग आधी व काला नमक दूना कूटकर चूर्ण के तौर पर बदहजमी में दो।

(५२) धतूरा (Dhatura) इसके पत्ते व फल काम में आते हैं। पत्तों को उबालकर उस पानी से दर्दवाली जगह को सेकते हैं। बीज को दमे व पेट के दर्द में अन्दर भी देते हैं। खूराक बीजों की $\frac{1}{2}$ से १ मा० है।

नुस्खा—धतूरे के बीज १ मा०, सौंठ ६ मा०, कलमीशोरा १ तो०, मुलहठी १ तो०, नौशादर ६ मा०, $\frac{1}{2}$ सेर पानी में दिन में दो बार, जब दमा उठ रहा हो, दो। २ छटांक पत्ती १ सेर पानी में पकाकर दर्दवाली जगह पर सेक करो।

(५३) पीपल (Long Pepper) ये लम्बे, खुरदरे फल हैं जिनका फ़ायदा खाँसी में बलगम को ख़ारिज करने व भूख व हाजमा बढ़ाने का है। खूराक १ से २ तो० है।

(१) नुस्खा—पीपल १ तो०, सोंठ १ तो०, हल्दी १ तो०, लौंग ६ मा०, नमक २ तो०, पानी $\frac{1}{2}$ सेर में दो। भूख बढ़ाता व ताकत देता है।

(२)—पीपल १ तो०, काकड़ासिंगी १ तो०, मुलहठी १ तो०, दालचीनी ६ मा०, शहद ३ तोला में मिलाकर दिन में तीन बार चटाओ।

(५४) पपीता (Papaya) इसके अधपके फलों का दूध जिससे पेपैन बनता है और पत्ते काम में आते हैं। गुण तिल्ली जिगर की बीमारियों व मेदे की कमजोरी और पेट के कीड़े मारना है। हरे पत्तों को खिलाने से दूध ज्यादा बढ़ जाता है। पैपेन कच्चे फल को पानी में उबालकर उस पानी को आग पर उड़ाकर बनाते हैं। खूराक १ तोला है। कीड़े मारने के लिये बराबर के